B/W

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

वार्षिक रिपोर्ट

1991-92

विषय-सूची

अध्याय	1	वर्ष-एक दृष्टि में	1
अध्याय	2	योजना निष्पादन	6
अध्याय	3	संगठन	11
अध्याय	4	आकाशवाणी	14
अध्याय	5	दूरदर्शन	23
अध्याय	6	फिल्में	29
अध्याय	7	पत्र सूचना कार्यालय	38
अध्याय	8	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	40
अध्याय	9	प्रकाशन विभाग	41
अध्याय	10	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	44
अध्याय	11	विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय	48
अध्याय	12	फोटो प्रभाग	52
अध्याय	13	गीत और नाटक प्रभाग	53
अध्याय	14	गवेषणा और संदर्भ प्रभाग	56
अध्याय	15	भारतीय जन संचार संस्थान	57

परिशिष्ट

एक.	मंत्रालय का संगठनात्मक चार्ट	58
दो.	योजना और गैर-योजना बजट की स्थिति	59
तीन.	1991-92 की अवधि में सम्भावित नए आकाशवाणी केन्द्रों की सूची	63
चार.	विविध भारती और आ.वा. के प्राथमिक चैनलों के विज्ञापनों से होने वाली आय	64
पांच.	1991 में प्रमाणित की गई फीचर फिल्में	65
छह.	पत्र सूचना कार्यालय – क्षेत्रीय एवं शाख़ा कार्यालयों की सूची	66
सात.	क्षेत्रीय प्रचार–प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालय	67

अध्याय 1

वर्ष – एक दृष्टि में

1.1.1. सूचना और प्रसारण मंत्रालय का उद्देश्य लोगों को जानकारी देना, शिक्षित करना और उनका मनोरंजन करना है। मंत्रालय की माध्यम इकाइयां विकास की दिशाओं के बारे में जागरूकता पैदा करती हैं और सरकार की नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों में लोगों का सहयोग सुनिश्चित करती है।

1.1.2. इन लक्ष्यों की प्राप्ति मंत्रालय से जुड़ी विभिन्न माध्यम इकाइयों द्वारा की जाती है। ये इकाइयां हैं: आकाशवाणी, दूरदर्शन, पत्र सूचना कार्यालय, प्रकाशन विभाग, गवेषणा और संदर्भ प्रभाग, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, फोटो प्रभाग, गीत एवं नाटक प्रभाग तथा फिल्म प्रभाग। इसके अलावा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, बाल फिल्म समिति, भारतीय फिल्म एवं टेलीविजन संस्थान, भारतीय जन संचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद् और केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड भी मंत्रालय से सम्बद्ध हैं। इस अध्याय में वर्ष 1991-92 के दौरान विभिन्न माध्यम इकाइयों की गतिविधियों का विवरण दिया गया है। इसके पश्चात प्रत्येक माध्यम इकाई के बारे में विस्तृत अध्याय दिया गया है और सारणियों अथवा आंकड़ों के रूप में जानकारी सबसे अंत में परिशिष्टों में दी गयी हैं।

आकाशवाणी

1.2.1. गत वर्ष आकाशवाणी केन्द्रों की संख्या 104 से बढ़कर 125 हो गयी है। अठारह स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र तथा तीन अस्थानीय केन्द्रों ने इस अवधि के दौरान नियमित प्रसारण शुरू कर दिया है।

1.2.2. आकाशवाणी की केन्द्रीय शिक्षा आयोजना इकाई ने राष्ट्रीय विज्ञान एवं टेक्नोलाजी संचार परिषद के सहयोग से "ह्यूमन इवाल्यूशन" नामक एक वृहत सीरियल शुरू किया है। यह कार्यक्रम 2 जून 1991 से आकाशवाणी के 88 केन्द्रों पर शुरू हुआ। इसका प्रसारण 18 भाषाओं में होता है। इसमें 130 प्रकरण हैं। दस से 14 वर्ष की आयु वर्ग के एक लाख बच्चों को इसका लाभ पहुंचाने के लिए पंजीकृत किया गया है। इसके अलावा दस हजार स्कूलों को इस कार्यक्रम को सुनने के लिए चुना गया है।

1.2.3. 16 अगस्त 1991 से प्रातः प्रसारण में हिन्दी और अंग्रेजी में समाचारों के स्थान पर दोनों भाषाओं में दो समाचार पत्रिकाएं प्रसारित होने लगी हैं। इन समाचार पत्रिकाओं में समाचारों के अतिरिक्त, किसी विषय पर समीक्षा और समाचार-पत्रों के मुख्य समाचारों और सम्पादकीय से परिचित कराया जाता है। रात को एक बजे से सुबह पांच बजे तक हर एक घंटे बाद समाचारों का प्रसारण शुरू कर आकाशवाणी द्वारा अब चौबीसों घंटे हर घंटे बाद समाचार प्रसारित किए जाते हैं।

1.2.4. आकाशवाणी ने लोकसभा के आम चुनाव तथा कुछ राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव परिणामों और उनके विश्लेषण को प्रसारित किया। चुनाव परिणामों की नवीनतम जानकारी देने के लिए चौबीसों घंटे हर आधे घंटे के बाद समाचार बुलेटिन प्रसारित किए गए। इसके अतिरिक्त, वार्ताएं, समीक्षाएं, विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के नेताओं और राजनीतिक समीक्षकों से साक्षात्कार भी प्रसारित किए गए।

1.2.5. अक्तूबर 1991 में उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों में आए भूकम्प से हुई जान-माल की व्यापक क्षति की तरफ ध्यान आकृष्ट करने के लिए क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए गए। स्थानीय प्रशासन और अन्य एजेंसियों द्वारा किए जा रहे राहत एवं पुनर्वास प्रयासों पर कार्यक्रम प्रसारित किए गए।

दूरदर्शन

1.3.1. केन्द्रीय निर्माण केन्द्र (सी.पी.सी.) के अतिरिक्त, 21 अन्य कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों और अलग-अलग क्षमता वाले 34 ट्रांसमीटरों की सहायता से, जो देश की जनसंख्या के 78.70 प्रतिशत हिस्से तक पहुंचते हैं, दूरदर्शन विश्व का एक प्रमुख टेलीविजन संगठन बन चुका है।

1.3.2. दूरदर्शन ने परीक्षण के तौर पर संसद के दोनों सदनों के प्रश्न काल के रिकार्ड किए गए अंश 3 दिसम्बर 1991 से प्रसारित करने शुरू किए।

1.3.3. दूरदर्शन के इतिहास में पहली बार रेल मंत्री के रेलवे बजट भाषण और वित्त मंत्री के बजट भाषण का सीधा प्रसारण हुआ।

1.3.4. दूरदर्शन ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा तैयार शैक्षणिक कार्यक्रम दिखाने की शुरूआत भी की। इन कार्यक्रमों को सप्ताह में तीन बार प्रातःकालीन सभा में आधे-आधे घंटे के लिए प्रसारित किया जाता है।

1.3.5. 1991-92 में दूरदर्शन ने सी.सी.टी.वी. के सहयोग से 'बांधि धर्म' नामक एक टेलीफिल्म का निर्माण हाथ में लिया है जिसकी अवधि 2 घंटे है तथा जिसके महत्वपूर्ण दृश्यों का चित्रांकन भारत और चीन में हुआ।

1.3.6. दूरदर्शन की कमीशंड कार्यक्रम योजना के अन्तर्गत बाहरी निर्माताओं के प्रस्तावों को स्वीकार करने और मंजूरी देने के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं।

फिल्म प्रभाग

1.4.1. अप्रैल से दिसंबर 1991 की अवधि में फिल्म प्रभाग ने 39 वृत्तचित्र और 21 समाचार पत्रिकाओं के अतिरिक्त, लघु फिल्में, फीचरेट्स आदि का भी निर्माण किया। इनमें से 35 फिल्में प्रभाग के लोगों ने ही बनाई जबकि चार का निर्माण स्वतंत्र निर्माताओं ने किया। 15 वृत्तचित्रों का विषय परिवार कल्याण था।

1.4.2. डा आम्बेडकर की जन्म शताब्दी के अवसर पर इस वर्ष उन पर एक घंटे की फिल्म बनाई गयी और उसे दूरदर्शन पर लोगों को दिखाया गया।

1.4.3. आलोच्य वर्ष में फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित आठ फिल्मों ने राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते। सात फिल्मों का चयन भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव-1992 के 'भारतीय पैनोरमा' खण्ड के लिए हुआ है।

1.4.4. लघु फिल्मों तथा वृत्तचित्रों के दूसरे महोत्सव का आयोजन बम्बई में 1 से 7 फरवरी 1992 तक किया गया।

1.4.5. भारत के स्वतंत्रता संघर्ष पर फिल्मों का निर्माण प्रभाग द्वारा जारी रहा। स्वतंत्रता संघर्ष में विभिन्न राज्यों के योगदान पर छह फिल्में निर्माण के अलग-अलग चरणों में हैं।

1.4.6. विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा जनजातियों के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों पर प्रभाग द्वारा 'उत्थान' शीर्षक से एक फिल्म का निर्माण पूरा हुआ है।

फिल्म महोत्सव निदेशालय

1.5. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के तहत निदेशालय ने भारत में चीनी, फ्रांसीसी, तुर्की, मिस्र और हंगेरियन फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया। स्विट्जरलैण्ड और मंगोलिया में भारतीय फिल्मों को लोकप्रिय बनाने की दिशा में काम किया। इसके अतिरिक्त, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत स्पेन, घाना, फ्रांस, अल्जीरिया, बुर्किनो फासो और हंगरी में भी भारतीय फिल्में प्रदर्शित की गयीं। इस वर्ष का दादा साहब फाल्के पुरस्कार विख्यात अभिनेता श्री अक्किनेनी नागेश्वर राव को प्रदान किया गया। 23 वां भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव 10 से 20 जनवरी 1992 तक बंगलूर में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। भारत सहित 14 देशों की 200 से ज्यादा फिल्में महोत्सव में प्रदर्शित की गयीं। 40 से ज्यादा विदेशी प्रतिनिधियों (डेलीगेट्स) ने महोत्सव में हिस्सा लिया।

भारतीय बाल फिल्म समिति

1.6. भारतीय बाल फिल्म समिति का मुख्य उद्देश्य बच्चों के लिए फिल्मों का निर्माण, वितरण और प्रदर्शन है। समिति ने एक फीचर फिल्म तथा तीन लघु फिल्में बनाईं और सात फीचर फिल्मों की डबिंग की। सातवें भारतीय अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव का आयोजन 14 से 23 नवम्बर 1991 तक केरल की राज्य सरकार के सहयोग से तिरुअनन्तपुरम् में किया गया था।

भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

1.7.1. 1964 में अपनी स्थापना के बाद भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने देश की फिल्म धरोहर के परिरक्षण, विश्व भर की श्रेष्ठतम फिल्मों के संग्रह, संदर्भ, अध्ययन तथा देश में फिल्म संस्कृति के प्रसार के क्षेत्र में निरंतर प्रगति की है।

1.7.2. 31 दिसम्बर 1991 तक अभिलेखागार में 12,750 फिल्में, 1,957 माइक्रो फिल्में, 696 वीडियो कैसेट, 1,822 डिस्क रिकार्ड्स, 21,075 स्क्रिप्ट्स, 20,235 पुस्तकें, 1,18,273 प्रेस क्लिपिंग्स, 94,821 स्टिल्स, 5,851 गीत पुस्तिकाएं, 7,133 पैम्फलेट्स, दीवारों के लिए 5,984 पोस्टर्स, 152 पत्रिकाएं, 150 आडियो टेप और 42 माइक्रोफिच थीं।

1.7.3. अभिलेखागार ने इस वर्ष पश्चिम बंगाल सरकार के सहयोग से कलकत्ता में न्यू थियेटर फिल्म समारोह और लघु फिल्म समारोह आयोजित किए। इनका प्रदर्शन बंगलूर, भोपाल, बम्बई, हैदराबाद, विजयवाड़ा, पांडिचेरी और पुथूकोटाई में भी हुआ।

1.7.4. नए भवन के निर्माण से अभिलेखागार के कार्य विस्तार में सहायता मिलेगी। इस नए केन्द्रीयकृत वातानुकूलित भवन में तीन बेसमेंट फिल्म स्टोरेज वाल्ट्स हैं जिनमें 60,000 रीलें संग्रह करने की

क्षमता है, 330 सीटों वाला एक आडिटोरियम है तथा 30 सीटों का एक छोटा प्रीव्यू थिएटर है। इसके अतिरिक्त,इस भवन में शोधकार्यों हेतु भी अनेक सुविधाएं हैं।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

1.8. भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान फिल्म निर्माण की कला और तकनीक का विधिवत प्रशिक्षण देता है। संस्थान दूरदर्शन के अधिकारियों तथा कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण भी देता है। इस वर्ष दूरदर्शन कर्मचारियों के लिए निर्माण और तकनीकी कार्यों का 34 वां और 35 वां बुनियादी टेलीविजन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया गया। भारतीय सूचना सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए फिल्म और टेलीविजन के कार्यक्रम बनाने की अभिरुचि विकसित करने के पाठ्यक्रम भी चलाए गए।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

1.9.1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्म संबंधी अनेक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है,जैसे निर्माण, आयात तथा निर्यात,अच्छी फिल्मों का वितरण, वीडियो कैसेट्स के विक्रय और छविगृहों के निर्माण के लिए वित्त की व्यवस्था करना।

1.9.2. निगम और दूरदर्शन के मध्य हुए समझौते के अंतर्गत अच्छी टेली और फीचर फिल्मों का निर्माण संयुक्त रूप से हो रहा है। 30 नवम्बर 1991 तक 8 फिल्में पूरी हो चुकी थीं तथा 21 फिल्मों को सहमति मिल चुकी है।

1.9.3. विख्यात निर्देशकों द्वारा अच्छी कहानी पर बनने वाली फिल्मों की निगम की योजना के तहत जिन 25 फिल्मों को मंजूरी मिली थी,उनमें से 24 पूरी हो चुकी हैं।

1.9.4. निगम लगभग 35-40 फिल्में प्रतिवर्ष आयात करता है। इसके सीमित स्रोतों को मद्देनजर रखते हुए अच्छी पारिवारिक और मनोरंजक फिल्मों के आयात पर ज्यादा बल दिया जाता है।

1.9.5. वीडियो चोरी (पाइरेसी) को रोकने के लिए निगम ने अच्छी गुणवत्ता वाले वीडियो कैसेट्स को अपने वितरकों के जरिए वीडियो लाइब्रेरियों तक पहुंचाया है। नवम्बर 1991 तक 230 वीडियो कैसेट्स जारी किए जा चुके है।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड

1.10.1. भारत में फिल्में केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड से प्रमाणित होने के बाद ही सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित की जा सकती हैं। इसका गठन 1952 में सिनेमेटोग्राफी अधिनियम के तहत किया गया था। इस बोर्ड में अध्यक्ष और अधिकतम 25 सदस्य होते हैं। बोर्ड का मुख्यालय बम्बई में है और बंगलूर, कलकत्ता, बम्बई, कटक, दिल्ली, हैदराबाद, मद्रास और तिरुअनन्तपुरम में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं।

1.10.2. कटक क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना गत वर्ष ही हुई। विभिन्न केन्द्रों और उसके सलाहकार मंडलों का पुनर्गठन किया गया और उनमें कुछ प्रमुख व्यक्तियों को शामिल किया गया। बोर्ड और विभिन्न केन्द्रों पर स्थित सलाहकार मंडलों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व लगभग 35 प्रतिशत है। 6 दिसम्बर 1991 को सरकार ने फिल्म प्रमाणन के लिए संशोधित दिशा-निर्देश जारी किए।

1.10.3. 1991 में बोर्ड ने कुल 910 भारतीय फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) को प्रमाणित किया जिनमें से 615 को 'यू' प्रमाणपत्र, 94 को 'यू ए' तथा 201 को 'ए' प्रमाणपत्र दिए। 124 विदेशी फीचर फिल्मों (सेल्यूलाइड) को प्रमाणपत्र दिया गया जिनमें 40 को 'यू' प्रमाणपत्र, 10 को 'यू ए' तथा 74 को 'ए' प्रमाणपत्र दिया गया।

पत्र सूचना कार्यालय

1.11.1. इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय ने असम, जम्मू-कश्मीर और पंजाब में स्थिति से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के प्रचार की व्यवस्था की। आम चुनावों के तुरन्त बाद चुनाव परिणामों का एक विशेष कम्प्यूटरीकृत विश्लेषण प्रेस को जारी किया। नई औद्योगिक नीति तथा नई व्यापार नीति को भी प्रचारित किया गया। आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए महत्वपूर्ण उपायों को प्रचारित करने के लिए भी कार्यालय ने व्यवस्था की।

1.11.2. पत्र सूचना कार्यालय समाचारिक मूल्य के दस्तावेजों को शीघ्रता से भेजने के उद्देश्य से कम्प्यूटरीकरण की योजना पर अमल कर रहा है। कार्यालय के क्रियाकलापों का कम्प्यूटरीकरण दो चरणों में किया जा रहा है।

भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक

1.12. अप्रैल से दिसम्बर 1991 के दौरान भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक के कार्यालय ने 9,349 समाचारपत्रों/ पत्रिकाओं के शीर्षकों को मंजूरी दी, जबकि 1991-92 के पूरे वर्ष का निर्धारित लक्ष्य 9,000 शीर्षक ही था। शीर्षकों की मंजूरी को शीघ्रता से निपटाने के लिए कम्प्यूटरीकरण किया गया है। इसी अवधि में 1,252 समाचार पत्रों को पंजीकृत किया गया। 733 समाचारपत्रों की प्रसार संख्या के दावों की भी दिसम्बर 1991 तक जांच की गयी। चार अक्टूबर 1991 को अखबारी कागज आबंटन नीति की घोषणा की गयी।

प्रकाशन विभाग

1.13.1. प्रकाशन विभाग ने अपने महत्वपूर्ण प्रकाशनों की श्रृंखला में 'आर. वेंकटरमन के भाषण'(उप राष्ट्रपति के रूप में), स्व. प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी के भाषणों और लेखों का पांचवा और अन्तिम खण्ड तथा 'राजीव गांधी' शीर्षक एक पुस्तिका जिसमें उनके चुने हुए विचार संग्रहीत हैं, प्रकाशित किए। अपनी बहुखण्डीय योजना 'कलेक्टेड वर्क्स आफ महात्मा गांधी' के अंतर्गत विभाग ने हिन्दी का 82 वां खण्ड और

अंग्रेजी में पूरक खण्ड 2 पूरा किया। अन्य प्रकाशनों के अतिरिक्त, विभाग ने कम मूल्य वाली पाकेट बुक श्रृंखला की पुस्तकें भी प्रकाशित कीं।

1.13.2. 'द इम्प्लायमेंट न्यूज' ने इस वर्ष दो नए फीचर्स को शामिल किया – 'इण्डिया दिस वीक - वर्ल्ड दिस वीक' और 'अपनी हिन्दी सुधारें'। 1990-91 में इसकी प्रसार संख्या 4.02 लाख थी, जबकि 1991-92 में यह बढ़कर 4.25 लाख प्रतियां हो गयी।

1.13.3. अपनी पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के लिए विभाग ने देश तथा विदेश में 50 से भी ज्यादा पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया।

विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार निदेशालय

1.14.1. विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार निदेशालय विभिन्न जनसंचार माध्यमों की सहायता से सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों तथा उपलब्धियों का प्रचार करता है। अप्रैल–दिसम्बर 1991 के दौरान निदेशालय ने 1,244 प्रदर्शन दिवसों में 187 प्रदर्शनियां लगाईं। इन प्रदर्शनियों के मुख्य विषय थे: राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति का उत्थान, 'स्त्रियों तथा बच्चों का कल्याण' और नशीली दवाओं के अवैध व्यापार के विरुद्ध अभियान।

1.14.2. अप्रैल–दिसम्बर 1991 के दौरान निदेशालय ने मुद्रित प्रचार सामग्री के तौर पर जिन पुस्तिकाओं और फोल्डरों को छापा उनके शीर्षक थे– धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता, फैक्टशीट आन असम, धर्मनिरपेक्षता पर कोई समझौता नहीं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों पर दमन रोकने के लिए ठोस कार्रवाई की आवश्यकता।

1.14.3. उत्तर तथा पूर्वोत्तर क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रदर्शनी अधिकारियों को प्रदर्शनी लगाने की आधुनिकतम तकनीक से परिचित कराने के लिए निदेशालय ने नवम्बर 1991 में चार दिनों की कार्यशाला आयोजित की।

गवेषणा तथा संदर्भ प्रभाग

1.15.1. गवेषणा तथा संदर्भ प्रभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, इसकी माध्यम इकाइयों और क्षेत्रीय कार्यालयों के लिए सूचना प्रदान करने वाली एजेंसी के रूप में कार्य करता है। प्रभाग विभिन्न माध्यम इकाइयों के प्रचार अभियानों तथा अन्य कार्यक्रमों के लिए एक सूचना बैंक तथा सूचना फीडर सेवा की तरह कार्य करता है। प्रभाग जनसंचार माध्यमों की प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है तथा साथ ही वर्तमान घटनाक्रम और जनसंचार के बारे में ताजा संदर्भ तथा प्रलेखन सेवा जुटाता है।

1.15.2. इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रभाग विभिन्न प्रकार की सूचना सामग्री तैयार करता है, जैसे बैकग्राउण्डर टू द न्यूज, जन महत्व के विषयों पर संदर्भ पत्र, प्रमुख भारतीयों का जीवन परिचय, प्रमुख राष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी देने वाली डायरी आफ इवेंट्स, दो वार्षिक संदर्भ ग्रंथो–'इंडिया' तथा 'मास मीडिया इन इंडिया' का संकलन। प्रभाग की प्रलेखन सेवाएं राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र द्वारा की जाती हैं जो प्रभाग का ही अभिन्न अंग है। इस वर्ष प्रभाग ने बैकग्राउण्डर तथा संदर्भ पत्रों के अतिरिक्त विभिन्न विषयों पर कौमी एकता सप्ताह में सात बैकग्राउण्ड पेपर निकाले जो राष्ट्रीय एकता संवर्धन के लिए प्रासंगिक हैं।

फोटो प्रभाग

1.16.1. फोटो प्रभाग का प्रमुख कार्य देश में हो रहे विकास और विशेष परिवर्तनों का फोटो के माध्यम से अंकन करना तथा संचार माध्यमों को फोटो उपलब्ध कराना है। अप्रैल–दिसम्बर 1991 की अवधि में प्रभाग ने 2,280 घटनाओं/कार्यक्रमों का फोटो अंकन किया। वर्ष 1991 के दौरान भारत आई विदेशी हस्तियों व राजनयिकों की भी फोटो कवरेज प्रभाग ने की।

1.16.2. अप्रैल–दिसम्बर 1991 के दौरान प्रभाग ने 'कीमत योजना' के तहत 4.40 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया। इस योजना के तहत प्रभाग सामान्य जनता तथा प्रचार कार्य से असम्बद्ध संगठनों को सादे तथा रंगीन फोटोग्राफ की बिक्री करता है।

1.16.3. प्रभाग किसी चुने हुए विषय पर वार्षिक राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता तथा प्रदर्शनी का आयोजन करता है। सारे देश से गैर-पेशेवर फोटोग्राफरों को इस प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है। मार्च 1991 में नई दिल्ली में 'सबके लिए शिक्षा' विषय पर तीसरी राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता हुई थी।

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

1.17.1. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने वर्ष भर प्रजातंत्र के प्रति प्रतिबद्धता, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण और नशीली दवाओं का उपयोग, दहेज, बाल विवाह जैसी सामाजिक बुराइयों जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर प्रचार अभियान चलाए। इन अभियानों में फिल्म शो, संगीत एवं नाटक कार्यक्रम, जन-सम्पर्क, प्रतियोगिताओं का आयोजन आदि की सहायता ली गयी।

1.17.2. अप्रैल-दिसम्बर 1991 के दौरान निदेशालय ने 30,172 फिल्म शो, 3,757 गीत एवं नाटक कार्यक्रम, 20,168 फोटो प्रदर्शनियां और 32,333 जन-सम्पर्क कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में समाज के विभिन्न वर्गों के लगभग तीन करोड़ लोगों ने हिस्सा लिया।

1.17.3. राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए तथा सुदूरवर्ती जनजातीय इलाकों में हुई राष्ट्रीय उपलब्धियों के बारे में लोगों को बताने के लिए, निदेशालय ने इन क्षेत्रों के प्रमुख लोगों के अन्य क्षेत्रों में 13 दौरे आयोजित किए।

जाने-माने गायक स्वर्गीय युनुस हुसैन खान (निधन : अक्तूबर 1991)

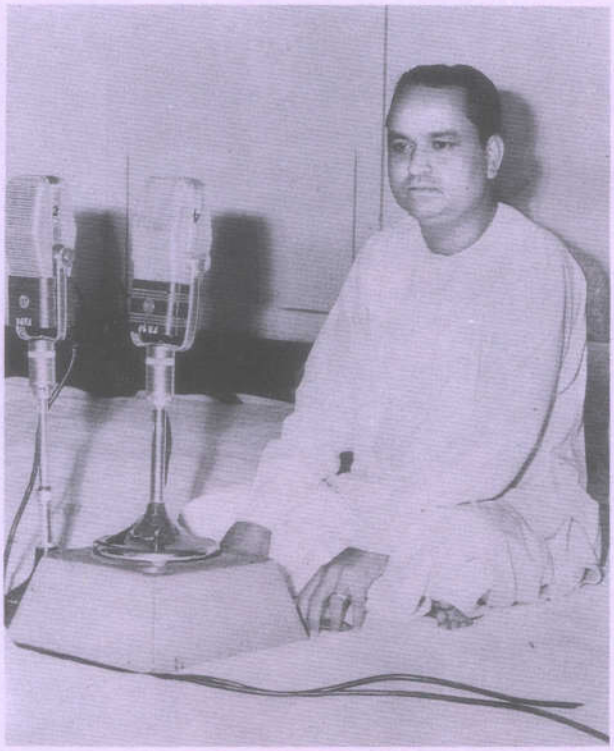

हिन्दुस्तानी संगीत के प्रसिद्ध गायक स्वर्गीय कुमार गंधर्व (निधन : जनवरी 1992)

हिन्दुस्तानी संगीत के जाने-माने संगीतकार स्वर्गीय बसवा राज राजगुरु (निधन : जुलाई 1991)

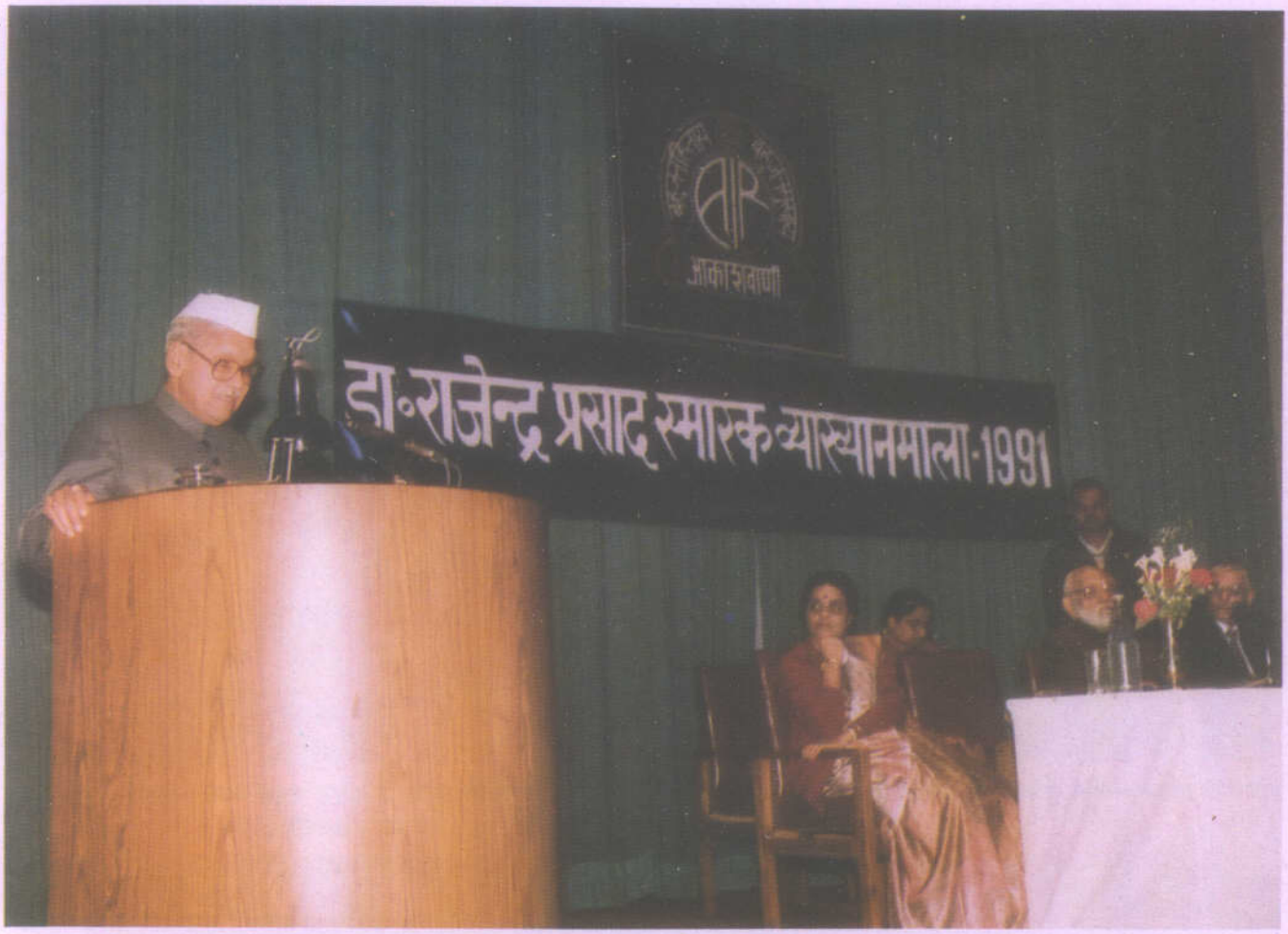

उप राष्ट्रपति डा. शंकरदयाल शर्मा नई दिल्ली में दिसम्बर '1991 में राजेन्द्र प्रसाद व्याख्यानमाला के अंतर्गत भाषण देते हुए। सूचना और प्रसारण उपमंत्री डा. गिरिजा व्यास भी इस अवसर पर उपस्थित थीं

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार समारोह में बिहु नृत्य प्रस्तुति

यू. श्रीनिवास आकाशवाणी संगीत सम्मेलन में मेंडोलिन पर कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए ।

रघुनाथ सेठ संगीत सम्मेलन में

भीमसेन जोशी आकाशवाणी संगीत सम्मेलन में

ए. नागेश्वर राव राष्ट्रपति रामास्वामी वेंकटरामन से दादा साहेब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करते हुए

प्रधानमंत्री श्री नरसिम्हा राव "भारत छोड़ो आन्दोलन" प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए । साथ में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री सुधाकर राव नाइक भी हैं । प्रदर्शनी का आयोजन विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने बम्बई में किया था

सूचना और प्रसारण मंत्री श्री अजित कुमार पांजा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में।
जाने-माने फिल्म निर्देशक श्री सत्यजीत राय की तस्वीर पीछे दिखाई पड़ रही है।
समारोह का आयोजन जनवरी 1992 में बंगलौर में किया गया था

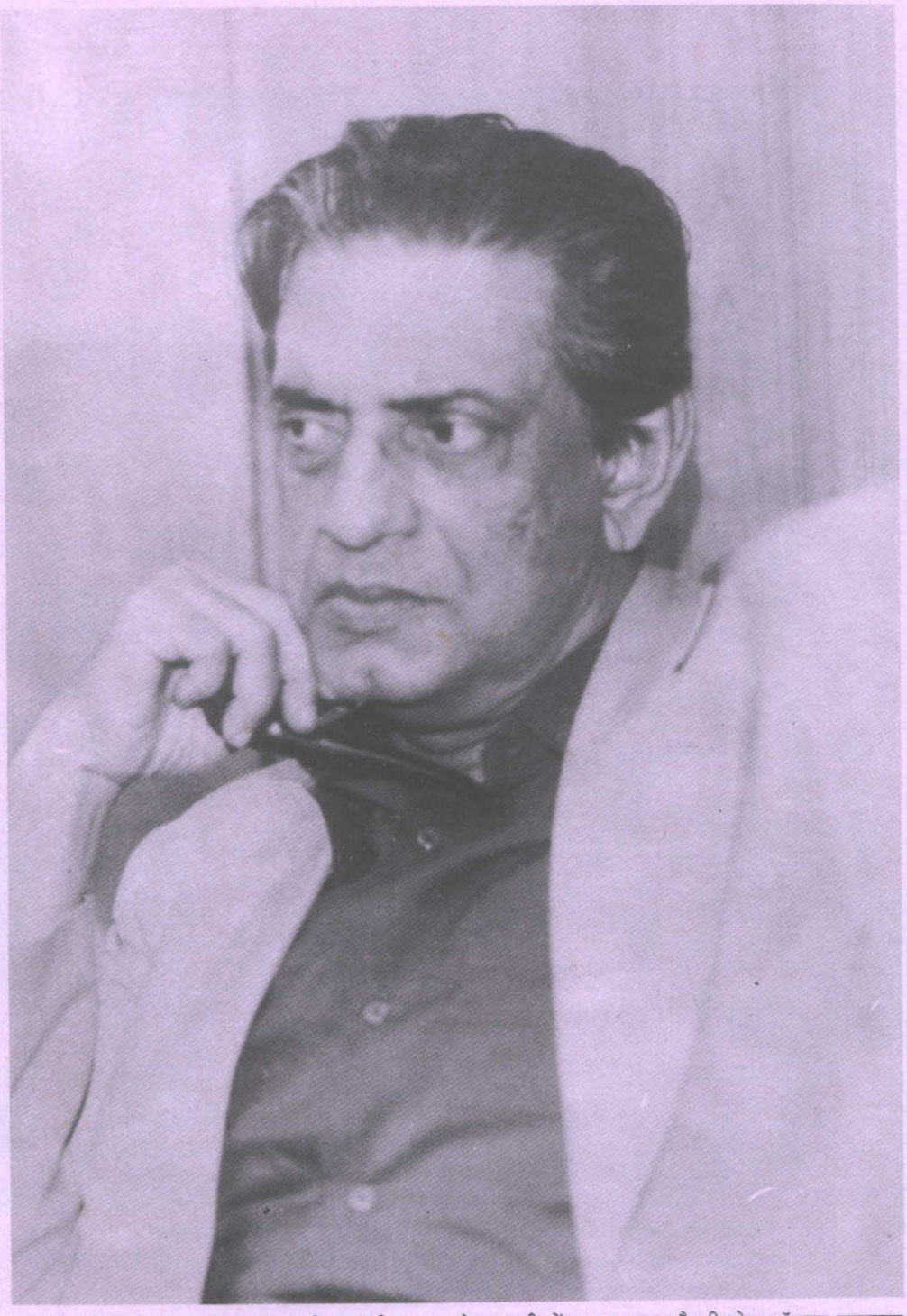

भारतीय सिनेमा की जानी-मानी हस्ती सत्यजीत राय को हाल ही में भारत रत्न और विशेष ऑस्कर पुरस्कार से सम्मानित किया गया

गीत एवं नाटक प्रभाग

1.18.1. गीत एवं नाटक प्रभाग लोक नाट्य विधाओं एवं पारम्परिक माध्यमों के द्वारा विविध सामाजिक-आर्थिक महत्व के कार्यक्रमों के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करता है। जनवरी 1991 से दिसम्बर 1991 तक प्रभाग ने 34,120 कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

1.18.2. इस वर्ष प्रभाग अपने दो खंडों की रजत जयन्ती मना रहा है। ये हैं : सशस्त्र सेनाओं का मनोरंजन खंड और सीमा प्रचार योजना। यह वर्ष 'अहिंसा वर्ष' के रूप में मनाया गया तथा कई राज्यों में विशेष कार्यक्रम और उत्सव आयोजित किए गए।

1.18.3. प्रभाग ने 'और कदम बढ़ते रहे' शीर्षक से एक नया ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसमें सांस्कृतिक विरासत, स्वतंत्रता संघर्ष और आज तक की देश की विकास प्रक्रिया को प्रमुखता दी गयी है। 'ओंकाजेहा' नामक एक अन्य ध्वनि व प्रकाश कार्यक्रम मलयालम में बनाया गया है। इसका प्रदर्शन केरल के क्विलोन में हो रहा है। इसमें ओणम की मूल भावना दर्शाई गयी है और सामाजिक न्याय, समानता और साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया गया है।

1.18.4. विभागीय कलाकारों ने बालिकाओं पर 'अंगूरी' नामक एक नाटक तैयार किया और प्रदर्शित किया। प्रभाग ने 'यूनीसेफ' के सहयोग से 'बालिकाएं' विषय पर एक प्रशिक्षण कैम्प लगाया, जिसमें सभी कार्यक्रम अधिकारियों ने भाग लिया।

1.18.5. बाबा साहब भीमराव आम्बेडकर के जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर तमिलनाडु में उनके जीवन और कृतित्व पर एक नया नाटक दिखाया गया। इसके अतिरिक्त देश के अन्य हिस्सों में भी अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

भास्तीय जन-संचार संस्थान

1.19. भारतीय जन-संचार संस्थान ने दो प्रशिक्षण कार्यक्रम और चार डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित किए। इसके अतिरिक्त, संस्थान ने भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए कई पाठ्यक्रम आयोजित किए। कुल मिलाकर, संस्थान ने वर्ष भर में 203 व्यक्तियों को प्रशिक्षण दिया।

गुटनिरपेक्ष देशों का समाचार एजेंसी पूल

1.20.1. यह पूल गुटनिरपेक्ष देशों की समाचार एजेंसियों में परस्पर सहयोग और समन्वय पर आधारित समाचारों के आदान--प्रदान की एक व्यवस्था है। पूल की एक समन्वय समिति है जो पूल की गतिविधियों का समन्वयन करती है। पूल के कार्यकलापों का बारीकी से मूल्यांकन करने व मानीटरिंग (अनुश्रवण) करने के लिए मानीटरिंग ग्रुप है। 1976 में जब से पूल ने कार्य प्रारंभ किया है, तब से भारत इसका सदस्य है। भारतीय समाचार पूल डेस्क का संचालन प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया के द्वारा किया जा रहा है।

1.20.2. प्रेस ट्रस्ट आफ इंडिया ने वर्ष भर भारतीय समाचार पूल डेस्क का कुशलतापूर्वक संचालन किया है। प्रतिदिन औसतन 10,000 शब्द (या 50 समाचार) अन्य सदस्य देशों को भेजे तथा प्रतिदिन औसतन 45,000 शब्द प्राप्त किए। प्रमुख भारतीय समाचार पत्रों ने प्रतिमाह 250 समाचारों का उपयोग किया।

1.20.3. खाड़ी युद्ध के समय, पी.टी.आई. ने पूल की एक प्रमुख सहयोगी समाचार एजेंसी 'इरना' के साथ विशेष सहयोग से कार्य किया। युद्ध के समय जब युद्धरत देशों ने समाचार माध्यमों के व्यक्तियों पर काफी पाबंदियां लगा दी थीं और विश्वस्त समाचार स्रोत नहीं मिल पा रहे थे तब इरना द्वारा दिए गए लगभग 175 समाचार फरवरी 1991 में प्रमुख भारतीय समाचारपत्रों में स्थान पाते थे।

विविध (फिल्म, दूरदर्शन आदि)

1.21. सचिव, सूचना और प्रसारण मंत्रालय की अध्यक्षता में फिल्म उद्योग की समस्याओं का अध्ययन करने के लिए गठित एक समिति ने अपनी रिपोर्ट जनवरी 1990 में प्रस्तुत की। कुल मिलाकर समिति ने 59 संस्तुतियां की हैं। मनोरंजन कर, उत्पाद शुल्क, उपकरणों व कच्चे माल पर सीमा शुल्क आदि पर छूट, संस्थागत वित्त पर छूट, फिल्मों व गीतों के दूरदर्शन या रेडियो पर प्रसारण के लिए ज्यादा रायल्टी देने, वीडियो चोरी रोकने के लिए वीडियो प्रदर्शनों का नियमन व नियंत्रण आदि समिति की प्रमुख सिफारिशें हैं। इनमें से सात सिफारिशें पहले ही स्वीकार कर ली गयी हैं। 22 सिफारिशें राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेशों के अधिकार क्षेत्र में आती हैं। 18 संस्तुतियों पर सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अतिरिक्त, विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों, जैसे उद्योग मंत्रालय, शिक्षा मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, संचार मंत्रालय आदि द्वारा कार्यवाही की जा रही है। सात सिफारिशों को अस्वीकार कर दिया गया है। पांच ऐसी हैं जिन पर या तो फिल्म उद्योग को कार्यवाही करनी है या कोई जानकारी प्रदान करनी है।

1.22. जनवरी से दिसम्बर 1991 के मध्य पंजीकरण इकाई योजना के तहत कुल 11 इकाइयों का पंजीकरण किया गया।

1.23. 1991-92 के बजट अनुमानों के मुताबिक, देश में स्थित 240 फिल्म सोसाइटियों की शीर्ष संस्था 'फेडरेशन आफ फिल्म सोसाइटीज" को तीन लाख रुपये की सहायता का प्रावधान किया गया है। अगले वर्ष के लिए भी इतनी ही सहायता का प्रावधान है। यद्यपि अभी तक राशि जारी नहीं की गयी है।

1.24. जून 1989 में सरकार ने केबल टेलीविजन संजाल और डिश ऐंटीना सिस्टम के विभिन्न आयामों का अध्ययन करने के लिए मंत्रालय की एक अन्तर्विभागीय समिति का गठन किया था। समिति ने 21 फरवरी 1991 को अपनी रिपोर्ट सरकार को दे दी है। समिति की संस्तुतियों पर सरकार विचार कर रही है।

अध्याय 2

योजना निष्पादन

2.1.1. मंत्रालय के प्रसारण और सूचना माध्यमों ने सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों से सम्बंधित जानकारी के व्यापक प्रसार और देश के समन्वित विकास के राष्ट्रीय प्रयास में लोगों को भागीदारी के लिए प्रेरित करने पर मुख्य रूप से बल दिया। मंत्रालय के अधीन विभिन्न माध्यम इकाइयां अपने संचार-लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए पारस्परिक सम्पर्क के परम्परागत तरीकों, लोक-शैलियों और अति आधुनिक दृश्य-श्रव्य माध्यमों का प्रयोग करती हैं। संगठनात्मक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तथा विशेषकर सीमावर्ती और संवेदनशील क्षेत्रों में माध्यम इकाइयों की कवरेज बढ़ाने के लिए उपलब्ध सुविधाओं को बढ़ाने तथा उन्हें अधिक प्रभावी बनाने की दृष्टि से मंत्रालय की योजनाएं बनाई गई हैं।

2.1.2. वर्ष 1990-91 तथा 1991-92 की योजनाएं वार्षिक योजनाओं की तरह चलाई जा रही हैं। इन दोनों वार्षिक योजनाओं का परिव्यय और उपयोग इस प्रकार है :—

(करोड़ रुपयों में)

क्षेत्र	परिव्यय	व्यय
1. दूरदर्शन	215.00	159.54
2. आकाशवाणी	185.00	130.78
3. सूचना माध्यम	8.00	3.60
4. फिल्म माध्यम	16.00	11.88
योग	424.00	305.80

2.2. वार्षिक योजना 1991-92

(करोड़ रुपयों में)

क्षेत्र	परिव्यय	व्यय
1. दूरदर्शन	250.00	146.12
2. आकाशवाणी	215.00	134.44
3. सूचना माध्यम	7.50	4.67
4. फिल्म माध्यम	15.50	14.40
योग	488.80	299.63

2.2.1. मंत्रालय की आठवीं पंचवर्षीय योजना संशोधित समय सीमा 1992-97 में प्रतिपादित की गई, जिसमें अर्थव्यवस्था के पुनरुत्थान संबंधी सरकार के विभिन्न नीति उपायों को ध्यान में रखा गया।

दूरदर्शन

2.3.1. 1991-92 के दौरान तीन उच्च शक्ति के (10 किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर अम्बजोगोई, शिमोगा और भवानी पटना में लगाए गए तथा डाल्टनगंज और अनंतपुर के उच्च शक्ति टेलीविजन ट्रांसमीटरों की क्षमता एक किलोवाट से बढ़ाकर 10 किलोवाट कर दी गई। इसके अलावा नाथूवाड़ा में कम शक्ति का ट्रांसमीटर लगाया गया तथा चुर्क, सुरनकोट और मसूरी में टी०वी ट्रांसपोजर लगाए गए। वर्ष 1991-92 की शेष अवधि में जदगलपुर में एक उच्च शक्ति (1 किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर लगाए जाने की संभावना है।

2.3.2. वर्ष 1991-92 के दौरान उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में उपग्रह से प्रसारित क्षेत्रीय दूरदर्शन सेवा शुरू की गई है। उड़ीसा तथा पश्चिम बंगाल में कार्यरत विभिन्न उच्च और कम शक्ति के टेलीविजन ट्रांसमीटरों को क्रमशः कटक और कलकत्ता के दूरदर्शन केन्द्रों से जोड़ दिया गया है, ताकि इन राज्यों में भी क्षेत्रीय सेवा कार्यक्रम रिले किए जा सकें।

2.3.3. अगरतला, सिल्चर और डिब्रूगढ़ में कार्यक्रम प्ले-बैक सुविधाएं जुटाई गई है ताकि इन क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के विशेष वर्गों के लिए बनाए गए कार्यक्रम यहां रिले किए जा सकें। भोपाल में स्टूडियो केन्द्र परियोजना तकनीकी तौर पर तैयार है। डिब्रूगढ़, अगरतला और गुवाहाटी में स्टूडियो केन्द्र परियोजनाओं तथा पोर्टब्लेयर, बरेली और डाल्टनगंज में कार्यक्रम निर्माण सुविधा परियोजनाओं के 1991-92 के दौरान पूरा हो जाने की आशा है। गुजरात में उपग्रह पर आधारित क्षेत्रीय दूरदर्शन सेवा शुरू करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले अहमदाबाद में उपग्रह अपलिंक अर्थ स्टेशन के 1991-92 के अंत तक कार्य शुरू कर देने की आशा है।

आकाशवाणी

2.4.1. आकाशवाणी ने अहमदाबाद, भटिंडा, कठुआ, बैतूल, बिलासपुर सासाराम चित्रदुर्ग शिवपुरी हसन कन्नानौर, ज़ोरहट, नांदेड़, अनतपुर, कुरूक्षेत्र, नागौर, बांसवाड़ा और चितौड़गढ़ में नए आकाशवाणी केन्द्र शुरू किए। निम्नलिखित आकाशवाणी केन्द्र भी तैयार हो चुके है तथा शीघ्र ही इनके शुरू हो जाने की आशा है।–

एफ.एम. केन्द्र : सवाई माधोपुर, पटियाला, झालावाड़, कसौली, चुरू, ओबरा, पूर्णिया, हजारीबाग, कैलाशहर, बेलोनिया, छिंदवाड़ा, सतारा, यवतमाल, भोपाल, शहडोल, रायगढ़, बालाघाट, चंदरपुर, पुणे, अकोला, होसपेट, कुरनूल तथा रायचूर।

अन्य केन्द्र : गुवाहाटी, परभनी, भोपाल और पणजी।

2.4.2. 17 अन्य परियोजनाओं के शीघ्र ही बन कर तैयार हो जाने की आशा है। ये है बाड़मेर में 2x10 किलोवाट ट्रांसमीटरों वाले नए आकाशवाणी केन्द्र खोलने ; भवानीपत्तनम में 2x100 किलोवाट ट्रांसमीटरों वाले नए आकाशवाणी केन्द्र खोलने ; आहवा और ऊटकमंड में एक किलोवाट ट्रांसमीटर वाले नए आकाशवाणी केन्द्र खोलने, कलकत्ता, इटानगर, जैपोर, मद्रास तथा पणजी में मीडियम वेव ट्रांसमीटरों की क्षमता में वृद्धि करने ; इटानगर में नया शार्टवेव ट्रांसमीटर खोलने ; गंगटोक, लखनऊ और कलकत्ता में शार्टवेव ट्रांसमीटरों की क्षमता में वृद्धि करने तथा पासीघाट, तुरा और इटानगर के स्टूडियो की क्षमता में वृद्धि की योजनाएं।

2.4.3. सातवीं पंचवर्षीय योजना की कार्यक्रम निर्माण (साफ्टवेयर) विकास योजनाओं के अंतर्गत शैक्षिक प्रसारण, विज्ञान संबंधी कार्यक्रमों, किसानों के लिए कार्यक्रमों, स्टूडियो के बाहर तैयार किए जाने वाले कार्यक्रमों तथा समाचारों से संबंधित कार्यक्रमों के विस्तार की स्वीकृत 15 योजनाएं 55 आकाशवाणी केन्द्रों में चलाई जा रही हैं।

सूचना माध्यम

2.5.1. समाचार महत्व वाले प्रलेखों के संप्रेषण की प्रक्रिया को तीव्र करने के लिए तथा यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये कम–से–कम समय में सुनिश्चित व्यक्तियों तक पहुंच सकें, पत्र सूचना कार्यालय, कम्प्यूटरीकरण के लिए विभिन्न प्रारम्भिक गतिविधियों में अग्रसर हो रहा है। कार्यालय उपग्रह के माध्यम से अपने क्षेत्रीय कार्यालयों से पहले ही सम्पर्क स्थापित कर चुका हैं।

2.5.2. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, संचार और श्रव्य–दृश्य कक्ष विकास, बाह्य प्रचार और कम्प्यूटरीकरण जैसी परियोजनाओं का कार्यान्वयन कर रहा है। यह इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में अतिरिक्त प्रचार आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए श्रव्य–दृश्य कक्ष के लिए और अधिक साफ्टवेयर प्राप्त करने का कार्य कर रहा है।

2.5.3 फोटो प्रभाग ने 'फोटो प्रभाग के आधुनिकीकरण' की परियोजना के अंतर्गत अपनी रंगीन फोटो इकाई के लिए उपकरण खरीदे।

2.5.4. भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक के कार्यालय के बंबई, कलकत्ता और मद्रास स्थित तीन क्षेत्रीय कार्यालयों को और सक्षम बनाया गया है।

2.5.5. भारतीय जन-संचार संस्थान ने प्रशिक्षण के उद्देश्य से एक प्रोसेस कैमरा खरीदा है। दृश्य ग्राफों के निर्माण के लिए एक ग्राफीय सजीवता कार्य केन्द्र स्थापित किया गया है।

2.5.6. सूचना भवन, लोदी रोड में मंत्रालय के भवन के दूसरे और तीसरे चरण का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है।

2.5.7. गीत और नाटक प्रभाग के बंगलूर केन्द्र में वर्ष 1991 के दौरान विजयवाडा (आंध्र प्रदेश) में एक प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसका शीर्षक था- 'कृष्ण देव राय'। नवम्बर 1991 तक प्रभाग के जनजातीय क्षेत्रों की रांची इकाई की जनजातीय मंडली ने मध्य प्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय इलाकों में अपनी बोली में 520 कार्यक्रम किए। पंजाब, जम्मू-कश्मीर और असम में राष्ट्रीय एकता के विषय पर विशेष प्रचार अभियान राज्य तथा केन्द्रीय सरकार की एजेंसियों के सहयोग से चलाया गया, ताकि लोगों का हौसला बढ़े और वे राष्ट्र के समग्र विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित हो सकें। इस वर्ष के दौरान प्रभाग अपने 100 प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रमों का लक्ष्य पूरा करने वाला है।

2.5.8. क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय अपने प्रचार प्रयासों में समृद्धि लाने के लिए नौ फीचर फिल्में (62 प्रिंट) खरीद रहा है। इस वर्ष की समाप्ति से पूर्व कुछ और फीचर फिल्में खरीदी जाने वाली हैं। एस.एस.बी. इकाइयों के लिए लगभग पांच लाख रुपये के वृत्त चित्रों की आपूर्ति के आदेश पहले ही दिए जा चुके हैं। वर्ष 1991-92 के दौरान क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय द्वारा 11 संचालित दौरे आयोजित किए जाने की आशा है। 'उत्तर-पूर्व राज्यों में कार्यालय तथा आवास गृहों का निर्माण' योजना के अंतर्गत पासीघाट इकाई के लिए पहुंच मार्ग और घेराबंदी का कार्य तथा इटानगर इकाई के लिए गैरेज व घेराबंदी का कार्य निर्माणाधीन है। प्रचार अभियान को प्रभावशाली बनाने के लिए निदेशालय की 10 वीडियो प्रोजेक्टर खरीदने की योजना है।

फिल्म माध्यम

2.6.1. बम्बई में फिल्म प्रभाग परिसर में वाटर प्रूफिंग का कार्य पूर्ति के दूसरे चरण में है तथा अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों के कमरों का कार्य पूरा हो चुका है। इस वर्ष के दौरान प्रभाग द्वारा सात फीचरैट्स का निर्माण किए जाने की आशा है। आधुनिकीकरण की योजना के अंतर्गत 'नौएस गेट्स' जैसे उपकरण खरीदे गए तथा इसी वर्ष अन्य सिनेमेटोग्राफिक उपकरण भी खरीदे जाने की आशा है। दूसरा अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र, लघु एवं सजीव फिल्म समारोह बंबई में 1 से 7 फरवरी 1992 को हुआ।

2.6.2. भारत के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के नए भवन परिसर

में कार्य शुरू किया गया,ताकि इस संगठन की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। वर्ष के दौरान विशिष्टीकृत फिल्म भंडारण वॉल्ट्स के निर्माण के लिए पुणे में दस एकड़ सरकारी जमीन के अधिग्रहण का कार्य पूरा किए जाने की आशा है। हॉट लाइन (भारत) वीडियो प्रोजेक्शन प्रणाली के अलावा सी.टी.एम. (फ्रांस) 35 एम.एम. व्यूइंग टेबल और 35 एम.एम./16 एम.एम. फिल्म क्लीनिंग मशीन, टोकियो (जापान) 35 एम.एम./16 एम.एम. एक्सेनन लैम्प फिल्म प्रणालिया भी प्राप्त की गई हैं तथा स्थापित की गई हैं। राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने अप्रैल से दिसम्बर 1991 तक 150 फिल्में, 273 पुस्तकें, 54 स्टिल्स, 35 दीवार पोस्टर, 75 गीत पुस्तिकाएं, 6,625 प्रेस कतरनें प्राप्त कीं। भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान के सहयोग से मई से जून 1991 तक पांच सप्ताह के वार्षिक फिल्म मूल्यांकन पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया।

2.6.3. भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान ने सिनेमाटोग्राफी विभाग के लिए सहायक उपकरणों सहित 35 एम.एम. एरिफ्लेक्स कैमरा, ध्वनि विभाग के लिए गीत कैसेट डेक, उत्पादन विभाग के लिए एक मिनी बस और 35 एम.एम. प्रोजेक्टर तथा प्रयोगशाला के लिए 35 एम.एम. प्रोसेसिंग मशीन जैसे उपकरण खरीदे है। इसके अलावा कैमरा ट्रिपोइस, एच.एम.आई. लाइट्स, चिलिंग प्लांट तथा टेप रिकार्डर भी खरीदे जा रहे हैं।

2.6.4. भारतीय बाल फिल्म समिति द्वारा तीन लघु फिल्में और एक फीचर फिल्म का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। इसके अलावा चार फीचर फिल्में, दो दूरदर्शन सीरियल तथा एक लघु फिल्म निर्माणाधीन है। साथ ही डब की गई फीचर फिल्मों के सात रूपांतरों तथा लघु फिल्मों के पांच रूपांतरों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। 'आसमान से गिरा' की सबटाइटलिंग का कार्य पूरा हो चुका है। दो और फीचर फिल्में और दो वीडियो फिल्मों के कार्य में प्रगति हुई है। केरल सरकार के सहयोग से सातवां अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्मोत्सव तिरुअनंतपुरम् में 14 से 23 नवम्बर 1991 तक हुआ। फिल्मोत्सव के प्रतियोगिता और सूचना वर्गों में भारत तथा विदेश की 86 फिल्मों ने भाग लिया। सी.आई.एफ.ई.जे. जूरी पदक सर्वोत्तम फिल्म, भारत की 'अभयम' फिल्म को दिया गया।

2.6.5. फिल्म समारोह निदेशालय ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत जनवरी 1992 के अंत तक भारत में एक तथा विदेशों में सात विशेष फिल्म कार्यक्रम आयोजित किए। निदेशालय ने दो विशेष समारोहों के अलावा विदेश में दो भारतीय फिल्म सप्ताहों का आयोजन किया तथा विदेशों के 42 फिल्म समारोहों में भाग लिया। राष्ट्रीय फिल्मोत्सव मई 1990-91 में हुआ। भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव-92 का आयोजन बंगलूर में 10 से 20 जनवरी 1992 तक किया गया। भारतीय पेनोरमा के लिए 16 लघु फिल्मों और 21 फीचर फिल्मों के सबटाइटलों के साथ प्रिंट तैयार किए गए। सिरीफोर्ट फिल्मोत्सव परिसर के अभ्यास हाल को मिनी थियेटर में बदलने का कार्य प्रगति पर है।

2.6.6. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम 14 फिल्मों का निर्माण/सह-निर्माण करेगा तथा 9 फिल्मों का निर्माण बाहरी एजेंसियों से करवाएगा, जिसके लिए निगम द्वारा ऋण उपलब्ध करवाया जाएगा। वर्ष 1991-92 के दौरान लगभग 100 फिल्मों के आयात और 75 फिल्मों के वीडियो प्रदर्शन के अधिकार प्राप्त किए जाने की आशा है। दस थियेटरों के निर्माण के लिए इस वर्ष ऋण दिए जाने की भी सम्भावना है।

2.6.7. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड ने अपनी गतिविधियां जारी रखी है। बोर्ड के कटक कार्यालय ने अपने क्षेत्र के आवेदकों की सहायता के विचार से 7 सितम्बर 1991 से कार्य करना शुरू कर दिया है। इसके सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में आधारभूत सुविधाओं को और सक्षम बनाया गया तथा कम्प्यूटरीकृत प्रबंध सूचना प्रणाली के अंतर्गत हार्डवेयर की प्राप्ति का कार्य पूरा कर लिया गया है,

2.6.8. भारतीय फिल्म समिति संघ को योजनाबद्ध गतिविधियों के लिए सहायता अनुदान की मंजूरी दे दी गई है।

वास्तविक लक्ष्य

दूरदर्शन

2.7.1. वर्ष 1992-93 के लिए दूरदर्शन के लक्ष्यों में धारवाड़, तिरुपति, बरेली तथा जबलपुर में एक-एक उच्च शक्ति (10 किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर; गंगटोक, मोकोकचुंग बुराचांदपुर, लुंगलोई तथा शिमला में एक-एक उच्च शक्ति (1 किलोवाट) टेलीविजन ट्रांसमीटर लगाना शामिल है। इसके अलावा वित्त वर्ष के दौरान 32 कम शक्ति/बहुत कम शक्ति टेलीविजन ट्रांसमीटर तथा दो टेलीविजन ट्रांसपोजर लगाने का भी लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 1992-93 के लक्ष्यों में आइजोल, इटानगर, भुवनेश्वर, मद्रास (II चेनल) में स्टूडियो केन्द्र परियोजनाओं; जम्मू तथा सिलीगुड़ी में कार्यक्रम निर्माण सुविधा केन्द्र परियोजनाओं को पूरा करना शामिल है। गुजरात में उपग्रह अपसारित क्षेत्रीय दूरदर्शन सेवा चालू करना भी 1992-93 के लिए निर्धारित किया गया है।

2.7.2. जैसलमेर में 300 एम.टॉवर का निर्माण पूरा किए जाने की सम्भावना है तथा रामेश्वरम् में 300 एम. टॉवर का निर्माण प्रगति पर है। बाड़मेर, भुज और फाजिल्का में 300 एम. टॉवर का निर्माण करने की आशा है। शिमला और पटना (स्थाई निर्माण) में स्टूडियो निर्माण और लेह में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर लगाने का कार्य पूरा हो जाने की आशा है। बम्बई के दूरदर्शन केन्द्र के विस्तार का कार्य भी प्रगति पर है। गंगटोक मे कार्यक्रम निर्माण सुविधा तथा कालीकट में उच्च शक्ति ट्रांसमीटर लगाने का कार्य भी शुरू करने की आशा है।

2.7.3. 1992-93 के दौरान जयपुर और भोपाल में उपग्रह अपलिंक अर्थ स्टेशन स्थापित करने की आशा है। इन्हें राजस्थान और मध्य प्रदेश में उपग्रह पर आधारित क्षेत्रीय सेवा चालू करने में प्रयोग किया जाएगा।

आकाशवाणी

2.8.1. 1992-93 के दौरान जिन चालू योजनाओं को पूरा करने का विचार है, उनमें शामिल हैं– धर्मशाला, माउंट आबू, लुंगलेह, इदुक्की में एन.आर.एस.एस.; जोवई, मोकोकचुंग, चुराचांदपुर, राऊरकेला, उस्मानाबाद, दमन में एल.आर.एस.एस. जैसी एफ.एम परियोजनाएं तथा 30 अन्य परियोजनाएं– कार्गिल, उत्तरकाशी, जिरो, दिफू, पणजी में एक किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर ;गंगटोक, कोकराझार में 2x10 किलोवाट मीडियम वेव ट्रांसमीटर ; शिमला, इम्फाल, कोहिमा, बंबई में 50 किलोवाट शार्टवेव ट्रांसमीटर ;जबलपुर में टाइप एक (आर) स्टूडियो ;पणजी में टाइप III स्टूडियो ;जालंधर और तिरुचिरापल्ली में स्टूडियो की पुनः साज-सज्जा तथा बम्बई में मल्टी-ट्रैक रिकार्डिंग।

2.8.2. वार्षिक योजना 1991-92 में प्रतिस्थापन योजनाओं के रूप में दर्शायी गई विभिन्न प्रकार की 52 परियोजनाएं हैं। लगभग 60 प्रतिशत परियोजनाओं के लिए एस.एफ.एस. जारी किए गए हैं तथा लांग डिलीवरी उपकरण मंगाने के लिए आदेश जारी कर दिए गए हैं। वर्ष 1992-93 के दौरान इन परियोजनाओं में जिन कार्यों पर विचार किया जाएगा उनमें बची-खुची परियोजनाओं और लांग डिलीवरी उपकरण के आदेश के लिए एस.एफ.सी. जारी करना शामिल है।

सूचना माध्यम

2.9.1. पत्र सूचना कार्यालय का विचार, संचार व्यवस्था के आधुनिकीकरण का है ताकि कार्यालय के लिए समन्वित संप्रेषण नैटवर्क उपलब्ध कराया जा सके। इसके लिए यह अपने शाखा कार्यालयों में मिनी माध्यम केन्द्रों के लिए उपकरणों के अलावा अपने क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों के लिए चार टेलीफोटो रिसीवर, आठ ट्रांसमीटर तथा 9 फैक्स मशीनें आयात करने का इच्छुक है।

2.9.2. प्रकाशन विभाग का जयपुर में विक्रय काउंटर और गुवाहाटी में विक्रय एम्पोरियम खोलने का प्रस्ताव है। विभाग पिछड़े तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के वर्गों के लिए विशेष प्रकाशनों के अलावा 'योजना' पत्रिका को उड़िया भाषा में निकालने का इच्छुक है। इसका बम्बई और कलकत्ता में चलती-फिरती पुस्तक दुकानें शुरू करने का भी प्रस्ताव है।

2.9.3. विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय के श्रव्य-दृश्य कक्ष को विभिन्न मंत्रालयों की विकास आवश्यकताओं के लिए और अधिक कार्यक्रम निर्माण के लिए बेहतर बनाया जाएगा। विज्ञापन नीति की तर्कसंगत व्याख्या पर सरकार की एक रिपोर्ट में इस बात की दृढ़तापूर्वक सिफारिश की गई है कि सभी सरकारी विभागों को अपने विज्ञापन, विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय से तैयार करवाने चाहिएं। मुद्रित प्रचार संचार योजना के अंतर्गत विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा सभी 13 भाषाओं में-कम-से कम दो पोस्टर तथा दो फोल्डर, जिनका प्रिंट आर्डर न्यूनतम 10 लाख हो, प्रकाशित करने का प्रस्ताव है, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में देश की प्रगति से लोगों को वास्तव में परिचित कराने के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके।

2.9.4. फोटो प्रभाग अपनी रंगीन फोटो इकाइयों के आधुनिकीकरण के लिए आधुनिक फोटो तकनीकों और आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग करेगा। मूल्य तथा भित्ति चित्र इकाइयों को बढ़ाने के अलावा एक फोटो फीचर इकाई की स्थापना का प्रस्ताव है।

2.9.5. भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक समाचारपत्रों/पत्रिकाओं के प्रकाशकों को उनसे संबंधित मशविरा देने के लिए तीन और क्षेत्रीय कार्यालय बंगलूर, भोपाल और लखनऊ में खोलने का इच्छुक है।

2.9.6. भारतीय जन-संचार संस्थान द्वारा इसकी प्रिंटिंग प्रेस के लिए आधुनिक मुद्रण उपकरण खरीदने ;रेडियो और दूरदर्शन;पत्रकारिता तथा वीडियो निर्माण के लिए सुविधाओं के विस्तार और आधुनिकीकरण ;पत्रकारिता/जन-संचार में एडवांस कोर्स शुरू करने और संचार प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं पर मूल्यांकन अध्ययन तथा अनुसंधान किए जाने का प्रस्ताव है। यह उत्कृष्ट मीडिया व्यवसायियों को सीनियर फैलोशिप से पुरस्कृत करने की योजना शुरू करेगा।

2.9.7. इस वर्ष सूचना भवन के तीसरे चरण को अधिग्रहण के लिए तैयार कर दिया जाएगा तथा चौथे चरण के कुछ भाग का भी निर्माण कर लिया जाएगा।

2.9.8. गीत और नाटक प्रभाग अपनी इकाइयों की गतिशीलता बढ़ाने के लिए छह निरीक्षण वाहन खरीदने का इच्छुक है। एक ध्वनि और प्रकाश इकाई, चार अग्रगामी परियोजना जनजातीय केन्द्र तथा कुछ कार्यक्रम इकाइयां स्थापित की जाएंगी। अति संवेदनशील इलाकों में भावुक और राष्ट्रीय एकता पर प्रचार अभियान को व्यावसायिक मंडलियों द्वारा तीव्र किया जाएगा। जनजातीय क्षेत्रों में और देश के दक्षिणी भागों में प्रकाश और ध्वनि कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया जाएगा।

2.9.9. क्षेत्रीय प्रचार विभाग द्वारा राष्ट्रीय एकता, परिवार कल्याण, साम्प्रदायिक सद्भाव इत्यादि जैसे विषयों पर फिल्में/वृत्तचित्र खरीदने का प्रस्ताव है। इसका देश के सीमावर्ती और जनजातीय इलाकों में दस दौरे आयोजित करने का प्रस्ताव है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के आधुनिकीकरण के लिए योजना के अंतर्गत उपकरण के अलावा, प्रमुख विषयों पर पुस्तिकाएं, पैम्फलेट, पोस्टर और फोल्डर जैसी मुद्रित प्रचार सामग्री भी प्राप्त की जाएगी। दूरदराज, जनजातीय और पिछड़े क्षेत्रों में स्टाफ के सदस्यों को आवास-गृह और कार्यालय उपलब्ध करवाने के लिए कोहिमा, उकरूल, तामेंगलोंग, लुंगलई और तुरू में होने वाले निर्माण कार्य को और आगे बढ़ाया जाएगा।

फिल्म मीडिया

2.10.1. वर्ष 1992-93 के दौरान फिल्म प्रभाग का

15 फीचरैट बनाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा, प्रति सप्ताह 100 और प्रिंटों को रंगीन प्रिंटों में रूपांतरित किया जाएगा तथा यथानुपात श्याम-श्वेत प्रिंटों की संख्या कम की जाएगी। भवन के दूसरे चरण का बचा हुआ कार्य पूरा किया जाएगा। बम्बई तथा नई दिल्ली स्थित कार्यालयों के लिए तीन करोड़ रुपये से अधिक के उपकरण खरीदे जाएंगे। बम्बई में फिल्म प्रभाग परिसर के पुराने ढांचे को गिरा दिया जाएगा और तीसरे चरण के निर्माण का कार्य शुरू किया जाएगा। पूरे राष्ट्र में राज्यों की राजधानियों/बड़े शहरों में राज्य सरकारों के सहयोग से वृत्तचित्र फिल्मोत्सव आयोजित करने का प्रस्ताव है। वर्ष के दौरान स्वतंत्र निर्माताओं द्वारा समाज के कमजोर वर्गों को ऊपर उठाने के लिए दो जीवंत फिल्में, एक वृत्तचित्र और एक फीचरैट बनाया जाएगा।

2.10.2. भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार पुणे में अपनी 'भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार परिसर' की योजना के अंतर्गत विशेषीकृत वॉल्ट्स के निर्माण तथा उपकरण खरीदने के अलावा अपनी परिरक्षण गतिविधियों को भी जारी रखेगा।

2.10.3. भारतीय फिल्म और दूरदर्शन संस्थान का अपने विभिन्न विभागों के लिए नई मशीनरी और उपकरण प्राप्त करने का प्रस्ताव है। कलकत्ता में इसी प्रकार के संस्थान की स्थापना का भी इसका प्रस्ताव है।

2.10.4. भारतीय बाल फिल्म समिति बच्चों के लिए फीचर, फीचरैट तथा लघु फिल्में बनाएगी। इसकी सामान्य गतिविधियों के अंतर्गत डबिंग और सब-टाइटलिंग का कार्य भी और आगे बढ़ाया जाएगा। निर्माण सुविधाओं में वृद्धि और आधुनिकीकरण के अलावा विदेशी फिल्में भी खरीदी जाएंगी।

2.10.5. फिल्म महोत्सव निदेशालय द्वारा भारत और विदेशों में पांच/छह फिल्म सप्ताह आयोजित करने का प्रस्ताव है। भारत के दो विशेष समारोह विदेशों में भी आयोजित किए जाएंगे। यह विदेशों में लगभग 45 समारोहों में भी भाग लेगा। 'भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्मोत्सव-93' जनवरी 1993 में होगा। भारतीय पनोरमा के सबटाइटल वाले प्रिंट तथा अन्य उत्कृष्ट फिल्में तैयार की जाएंगी। सिरीफोर्ट में फिल्मोत्सव परिसर में भी कुछ काम (संयोजन और परिवर्तन सहित) किया जाएगा।

2.10.6. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा 17 अच्छी फिल्में स्वयं अथवा दूरदर्शन और विदेशी निर्माताओं के साथ सह-निर्माण के आधार पर बनाने का प्रस्ताव है। इसके अलावा लगभग दस फिल्मों के लिए ऋण दिए जाएंगे। निगम, वर्ष के दौरान 15 और थियेटरों के निर्माण के लिए राज्य प्राधिकारी के साथ संयुक्त जोखिम ऋण उपलब्ध कराएगा। यह विश्व के विभिन्न भागों से अच्छे सिनेमा के आयात करने तथा इन्हें विभिन्न प्रदर्शनी चैनलों को देने पर बल देना जारी रखेगा। अनुमान है कि 100 फीचर फिल्में आयात की जाएंगी तथा 80 फिल्मों के वीडियो प्रदर्शन अधिकार लिए जाएंगे।

2.10.7. केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड कुछ उपकरणों की खरीद के अलावा अपने बम्बई मुख्यालय तथा अपने क्षेत्रीय कार्यालयों की गतिविधियां जारी रखेगा।

2.10.8. फिल्म समितियों को अपनी योजनाबद्ध गतिविधियों के लिए सहायता अनुदान देने का प्रावधान भी रखा गया है।

अध्याय 3

संगठन

मुख्य सचिवालय

3.1. मंत्रालय के मुख्य सचिवालय का प्रमुख सचिव होता है। उसकी सहायता के लिए दो अपर सचिव और तीन संयुक्त सचिव होते हैं। इसके अलावा मंत्रालय की विभिन्न शाखाओं में निदेशक/उप-सचिव स्तर के 11 अधिकारी, अवर सचिव श्रेणी के 17 अधिकारी, 40 राजपत्रित अधिकारी तथा 282 अराजपत्रित कर्मचारी भी कार्यरत हैं। मंत्रालय का संगठन संबंधी चार्ट परिशिष्ट -I में दिया गया हैं।

अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति

3.2.1. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लोगों को मंत्रालय के अंतर्गत सेवाओं और पदों में उचित प्रतिनिधित्व प्रदान करने के लिए सरकार की नीति और आदेशों के अनुपालन का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। मंत्रालय ने प्रयास किया कि अधीनस्थ विभिन्न सेवाओं और पदों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षित स्थान कम से कम खाली रहें। इन प्रयासों के जरिये मंत्रालय और इसके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में एक जनवरी 1991 को कुल कर्मचारियों की तुलना में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के कर्मचारियों का प्रतिशत बढ़ कर इस प्रकार हो गया है :

	वर्ग-क	वर्ग-ख	वर्ग-ग	वर्ग-घ
अनुसूचित जाति	8.58	12.91	16.59	29.75
अनुसूचित जनजाति	6.62	4.98	6.43	11.65

3.2.2. मंत्रालय ने दिसंबर, 1991 से तीसरा विशेष भर्ती अभियान शुरू किया है। इससे पहले के भर्ती अभियानों में मंत्रालय से संबद्ध कार्यालयों तथा अधीनस्थ कार्यालयों में अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए आरक्षित पदों को भरने में शानदार सफलता मिली है। वर्ग-ग और वर्ग-घ में तो अधिकांश आरक्षित पद भरे जा चुके है।

3.2.3. आरक्षण संबंधी आदेशों को लागू करने के काम की देखरेख तथा इसमें तालमेल के लिए मंत्रालय में समन्वय अधिकारी की निगरानी में एक सेल कार्य कर रहा है। मंत्रालय के उप सचिव और मुख्य सतर्कता अधिकारी समन्वय अधिकारी के रूप में काम करते है। मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत आने वाले संबद्ध और अधीनस्थ कार्यालयों, स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक उपक्रमों में आरक्षण के लिए रोस्टर बनाए गए है।

3.2.4. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के अधिकारियों को विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत देश में तथा विदेशों में प्रशिक्षण देने पर पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। मंत्रालयों को सेवाओं में आरक्षण के बारे में जानकारी देने वाले पाठ्यक्रमों के महत्व की पूर्ण जानकारी है। जब भी सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान द्वारा पाठ्यक्रम शुरू करने की सूचना दी जाती है, मंत्रालय कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए अवश्य वहां भेजता है।

3.2.5. मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में आने वाली स्वायत्त संस्थाओं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में भी अनुसूचित जातियों तथा जनजातियों के लिए आरक्षण नीति पर कड़ाई से अमल हो रहा है। इन संस्थाओं/उपक्रमों में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, भारतीय जन संचार संस्थान, भारतीय प्रेस परिषद और भारतीय बाल चित्र समिति शामिल है।

राजभाषा के रूप में हिन्दी

3.3.1. मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति राजभाषा विभाग और केन्द्रीय हिन्दी समिति द्वारा निर्धारित नीतियों के अनुसार हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए सलाह देती है। इस वर्ष समिति की तीन बैठकें हुईं। समिति ने क्षेत्रीय भाषाओं के जाने–माने लेखकों की रचनाओं के क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद पर आधारित कार्यक्रमों के प्रसारण का बहुमूल्य सुझाव दिया।

3.3.2. मंत्रालय और इसके संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों में

राजभाषा क्रियान्वयन समितियां भी काम कर रही हैं। इन समितियों ने समय-समय पर अपनी बैठकों में अपने-अपने कार्यालयों में सरकारी कामकाज में हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे कार्य की समीक्षा की। इसकी रिपोर्ट पर मंत्रालय में विचार किया गया और सुधार के लिए आवश्यक निर्देश दिए गए। इस वर्ष मंत्रालय की राजभाषा क्रियान्वयन समिति की तीन बैठकें हुईं।

3.3.3. संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने मंत्रालय के दस कार्यालयों का दौरा किया और हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने में मिली सफलता की समीक्षा की। मंत्रालय की ओर से मुख्यालय का एक वरिष्ठ अधिकारी निरीक्षण के दौरान साथ था। समिति की टिप्पणियों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई की गई।

3.3.4. सरकारी कामकाज में हिन्दी के प्रचलन को बढ़ावा देने के लिए 16 से 23 सितंबर 1991 तक मंत्रालय में 'हिन्दी सप्ताह' मनाया गया।

3.3.5. राजभाषा नियम (संघ के कार्य में राजभाषा का इस्तेमाल) 1976 के नियम 10(4) के अनुसार मंत्रालय के मुख्य सचिवालय सहित अधिसूचित कार्यालयों की संख्या अब 350 हो गई है। इन अधिसूचित कार्यालयों में 80 प्रतिशत या इससे अधिक कर्मचारी हिन्दी की काम चलाऊ जानकारी हासिल कर चुके हैं।

3.3.6. सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के इस्तेमाल में प्रगति का जायजा देने के लिए विभिन्न मीडिया इकाइयों के कई कार्यालयों का मुआयना किया गया। इम्फाल, कोहिमा, कलकत्ता, शिमला, बम्बई और पुणे में मीडिया इकाइयों के कार्यालयों में राजभाषा से संबंधित प्रभारी अधिकारियों के साथ संयुक्त बैठक आयोजित की गयी। इन स्थानों पर बड़ी संख्या में कर्मचारियों को केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रम में पंजीकरण के लिए प्रोत्साहित किया गया।

आंतरिक कार्य-अध्ययन दल

3.4. मंत्रालय में संगठन और कार्यविधि (ओ एंड एम) प्रणाली में सुधार के लिए दो कार्य योजनाएं शुरू की गईं। इनमें से एक संवेदनशील प्रशासन के बारे में और दूसरी संगठन और कार्यविधि के बारे में थी। मंत्रालय में संगठन और कार्यविधि की परम्परा कायम करने के उद्देश्य से अनुभाग अधिकारियों और शाखा अधिकारियों के बीच तालमेल के लिए हर पखवाड़े संगठन और कार्यविधि संबंधी बैठकें आयोजित करने का फैसला किया गया। इस तरह की दो बैठकें आयोजित की गईं। इसके अलावा मुख्य सचिवालय में 14 अनुभागों का संगठन और कार्यविधि की दृष्टि से वार्षिक निरीक्षण किया गया। मंत्रालय के मुख्य सचिवालय और मीडिया इकाइयों में फाइलों का रिकार्ड तैयार करने, उनकी जांच करने और आवश्यक फाइलों को नष्ट करने के लिए एक विशेष तिमाही कार्यक्रम शुरू किया गया। दिसम्बर 1991 तक कुल 38,615 फाइलों की जांच कर उनका रिकार्ड तैयार किया जा चुका था। 23,053 फाइलों की समीक्षा की जा चुकी थी और 14,965 फाइलों को नष्ट किया जा चुका था। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय फिल्म प्रभाग और विज्ञापन तथा दृश्य प्रचार निदेशालय आदि के प्रचार सामग्री प्राप्त करने के तरीके के बारे में अध्ययन पूरा हो गया है और इस संबंध में रिपोर्ट भेजी जा चुकी है। दिसंबर 1991 तक कार्य-मूल्यांकन से संबंधित दस अध्ययन किये जा चुके थे। इससे 26 पदों से संबंधित 8,28,072 रुपये की प्रत्यक्ष/एहतियाती बचत संभव हो पायी।

विभागीय लेखा

3.5.1. मंत्रालय का मुख्य लेखा अधिकारी सचिव होता है। अतिरिक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार पर मंत्रालय के वित्त और लेखा संबंधी कामकाज की देखरेख की जिम्मेदारी है। मुख्य लेखा नियंत्रक मंत्रालय का प्रशासनिक और लेखा प्रमुख है। मुख्य लेखा नियंत्रक के ये उत्तरदायित्व हैं :

क. मंत्रालय के लेखे का महालेखा नियंत्रक द्वारा निर्धारित विधि से संकलन करना,

ख. सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा नियंत्रित अनुदान मांगों के वार्षिक विनियोजन लेखे तैयार करना, केन्द्र सरकार के वित्त लेखों (सिविल) से संबंधित लेनदेन और सामग्री का ब्यौरा महालेखा नियंत्रक को भेजना।

ग. स्वायत्त संस्थाओं, समाचार एजेंसियों और निगमों को ऋण और अनुदान देना,

घ. वेतन और लेखा अधिकारियों और मीडिया अधिकारियों को लेखा नियंत्रण के बारे में तकनीकी सलाह देना और

ड. देश भर में मंत्रालय के 528 आहरण और भुगतान अधिकारियों के वित्तीय लेनदेन की निगरानी करना।

3.5.2. मुख्य लेखा नियंत्रक इन कार्यों को चार उप लेखा नियंत्रकों और 18 वेतन और लेखा अधिकारियों के माध्यम से पूरा कराता है जिनके कार्यालय दिल्ली (7), कलकत्ता (3), बम्बई (3), मद्रास (3), लखनऊ (1), और गुवाहाटी (1) में हैं।

3.5.3. मंत्रालय और इससे संबद्ध/अधीनस्थ कार्यालयों के करीब 5,000 राजपत्रित अधिकारियों के वेतन और भत्ते का भुगतान वेतन और लेखा अधिकारी (इरला) द्वारा केन्द्रीयकृत रूप से किया जाता है।

3.5.4. इस वर्ष (अक्तूबर, 1991 तक) वेतन और लेखा अधिकारी (इरला) ने 1,81,064 बिलों को निपटाया जिन में से 52,813 राजपत्रित अधिकारियों के बिल थे। इसके अलावा सेवानिवृत्त सरकारी कर्मचारियों के पेंशन के 680 मामले और भविष्यनिधि के अंतिम भुगतान के 612 मामले भी निपटाये गए। वेतन और लेखा कार्यालय ने सदस्य कर्मचारियों को भविष्यनिधि खातों से संबंधित 32,745 वार्षिक विवरण भी भेजे।

सतर्कता

3.6.1. मंत्रालय का सतर्कता संबंधी तंत्र सचिव की देखरेख में काम

करता है। इसके अंतर्गत संयुक्त सचिव, मुख्य सतर्कता अधिकारी, एक अवर सचिव और अन्य अधीनस्थ कर्मचारी आते हैं। मुख्य सतर्कता अधिकारी मंत्रालय के संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और पंजीकृत संस्थाओं की सतर्कता इकाइयों की गतिविधियों में तालमेल रखता है। ये इकाइयां सतर्कता अधिकारी की निगरानी में काम करती हैं। मंत्रालय की सतर्कता इकाई जनता की शिकायतों पर भी ध्यान देती है और मुख्य सतर्कता अधिकारी निदेशक (शिकायत) के रूप में भी कार्य करता है। मंत्रालय के संबद्ध तथा अन्य कार्यालयों में कर्मचारियों और जनता की शिकायतों को निपटाने की जिम्मेदारी कार्मिक शिकायत अधिकारी की होती है जो इस कार्य के लिए विशेष रूप से निर्धारित समय में यह काम देखता है। इस तरह के मामलों को निपटाने में हुई प्रगति की नियमित रूप से समीक्षा की जाती है। भ्रष्टाचार की संभावना को कम से कम करने के लिए शिकायतों को निपटाने की प्रक्रिया को सरल बनाने की कोशिशें जारी हैं।

3.6.2. संदिग्ध निष्ठा वाले 22 अधिकारियों पर कड़ी निगाह रखी गई। महत्वपूर्ण स्थानों पर तैनात कर्मचारियों का समय-समय पर तबादला किया गया। सरकारी नियमों और कायदे कानून पर ठीक तरह अमल हो रहा है या नहीं यह सुनिश्चित करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मुआयना किया गया। शिकायत के 224 मामलों की जांच के बाद 76 मामलों में प्रारंभिक जांच के आदेश दिए गये। साल के दौरान 35 मामलों में जांच रिपोर्ट प्राप्त हुई। इनमें वे मामले भी शामिल थे जिनमें केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने आगे जांच की, जिनमें से पांच की जांच रिपोर्ट मिल गई है। 19 मामलों में बड़ी सजा के लिए और 12 में छोटी सजा के लिए विभागीय कार्रवाई शुरू की गई। जांच अधिकारियों (विभागीय जांच आयुक्तों) की जांच रिपोर्ट प्राप्त हो जाने के बाद 5 मामलों में बड़ी सजाएं और 31 मामलों में छोटी सजाएं दी गईं। 33 कर्मचारियों को सेवा से निलंबित किया गया और 11 को चेतावनी दी गई।

अध्याय 4

आकाशवाणी

4.1.1. आकाशवाणी ने आवास के लिये सार्क वर्ष मनाये जाने के बारे में काफी प्रचार-प्रसार किया। लोगों में इस समस्या के महत्व के संबंध में जागरूकता पैदा करने और इस चुनौती का सामना करने की दिशा में उठाये गये कदमों की जानकारी देने के लिये कई कार्यक्रम तैयार किये गये।

4.1.2. आकाशवाणी की केन्द्रीय शिक्षा योजना इकाई ने एक बहुत बड़ा धारावाहिक कार्यक्रम आरंभ किया है। 'मानव विकास' नाम के रेडियो धारावाहिक को राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद के सहयोग से तैयार किया गया है।

4.1.3. वर्ष के दौरान राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव का संदेश लोगों तक पहुंचाने के लिये विशेष प्रयास किये गये। इस विषय पर अनेक कार्यक्रम प्रसारित हुए। इनमें साम्प्रदायिक उपद्रवों से उत्पन्न स्थिति को शांत करने के साथ-साथ लोगों के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने का लक्ष्य सामने रखा गया।

4.1.4. लोकसभा और कुछ विधानसभाओं के चुनावों के अवसर पर आकाशवाणी ने लोगों को मतदान करने के उनके अधिकार को समझाने तथा स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने के लिये प्रशासन द्वारा किये गये उपायों की जानकारी देने वाले कार्यक्रम प्रसारित किये। आकाशवाणी ने मान्यताप्राप्त दलों को प्रसारण के अवसर प्रदान किये, जिससे वे अपने कार्यक्रमों की जानकारी मतदाताओं को दे सकें। यह काम 'राजनीतिक दल प्रसारण' योजना के अंतर्गत हुआ जिसे चुनाव आयोग ने मंजूर किया था। इसके अलावा चुनाव परिणाम लोगों तक पहुंचाने के लिये हर आधे घंटे के बाद समाचार बुलेटिन, वार्तायें, परिचर्चायें, विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से भेंटवार्तायें, रेडियो ब्रिज और देश के विभिन्न भागों में परिणामों की ताजा स्थिति के बारे में राजनीतिक विश्लेषण प्रसारित किये गये।

4.1.5. आकाशवाणी ने डाक्टर भीमराव आम्बेडकर जन्मशताब्दी के सिलसिले में उनके जीवन और कार्यों के बारे में इस वर्ष भी कार्यक्रम तैयार किये। राष्ट्रीय आपदा नियंत्रण के अंतर्राष्ट्रीय दशक तथा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन वर्ष के संदर्भ में भी उपयुक्त कार्यक्रमों का आकाशवाणी से प्रसारण किया गया।

4.1.6. उत्तर प्रदेश के पर्वतीय जिलों में भूकंप से हुए नुकसान और प्रशासन तथा अन्य संस्थाओं की ओर से राहत और पुनर्वास के लिये किए गये कार्यों की जानकारी देने के लिए राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय स्तर पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किये गये।

4.1.7. हिन्दी और अंग्रेजी के प्रातःकालीन सामान्य समाचार बुलेटिनों के स्थान पर इन दोनों भाषाओं में दो नई समाचार पत्रिकाएं आरंभ की गयीं। हर घंटे प्रसारित होने वाले समाचार बुलेटिन अब रात को एक बजे से सबेरे पांच बजे तक भी राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित होने लगे हैं।

नेटवर्क

4.2.1. **20** नये केन्द्र खुल जाने से अब आकाशवाणी के केन्द्रों की संख्या **124** हो गयी है और **139** मीडियम वेव ट्रांसमीटर, **43** शार्ट वेव ट्रांसमीटर और **36** एफ.एम. ट्रांसमीटर हैं। इस समय देश के **85** प्रतिशत क्षेत्र और **95.7** प्रतिशत आबादी तक आकाशवाणी के कार्यक्रम पहुंचते है। मार्च **1992** तक **20** नये केन्द्र खुलने की संभावना है।

4.2.2. आकाशवाणी के सभी केन्द्र छह चैनल वाले रिसीवर टर्मिनलों से सुसज्जित हैं, जिनकी सहायता से दिल्ली से संचालित केन्द्रीय कार्यक्रमों को प्राप्त किया जाता है। छह चैनलों से जोड़ने की सुविधा दिल्ली से उपलब्ध है। इसके साथ ही बंबई, कलकत्ता और मद्रास में इनसेट 1-डी उपग्रह के जरिए दिल्ली से निश्चित समय के लिए एक चैनल से प्रादेशिक कार्यक्रमों के प्रसारण की सुविधा है।

4.2.3. छठी योजना में प्रायोगिक योजना के रूप में छह स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र खोलने का कार्यक्रम बनाया गया था। इसके

परिणामों से प्रोत्साहित होकर स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र बड़ी संख्या में खोलने का निश्चय किया गया और सातवीं योजना के अंतर्गत **73** स्थानीय आकाशवाणी केन्द्र खोलने का लक्ष्य रखा गया। इनमें से **23** केन्द्र खोले जा चुके हैं और बाकी पर विभिन्न स्तरों पर काम चल रहा है। स्थानीय केन्द्र, क्षेत्र विशेष को दृष्टि में रखकर बनाये जाते हैं और इनमें स्थानीय लोगों की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं पर ध्यान दिया जाता है।

समाचार सेवा प्रभाग

4.3.1. समाचार सेवा प्रभाग की वर्ष की मुख्य गतिविधियों में प्रातः कालीन बुलेटिन के स्वरूप में परिवर्तन, देर रात के समाचार बुलेटिनों की शुरूआत, चुनाव पूर्व स्थिति की कवरेज, लोकसभा और विधानसभा चुनाव परिणामों की घोषणा, रेडियो ब्रिज कार्यक्रम, केन्द्र में कांग्रेस आई सरकार का गठन, राज्यों में नई सरकारों का गठन आदि शामिल हैं।

4.3.2. अंग्रेजी और हिन्दी में देर रात के दस नये बुलेटिन शुरू होने और सवेरे के हिन्दी एवं अंग्रेजी के बुलेटिनों की अवधि बढ़ने से प्रति दिन प्रसारित होने वाले बुलेटिनों की संख्या **286** और उनकी अवधि **38** घंटे **35** मिनट हो गयी है। घरेलू सेवा में **19** भाषाओं में **12** घंटे पांच मिनट की अवधि के **28** बुलेटिन तथा **15** भाषाओं और **47** बोलियों में **132** क्षेत्रीय बुलेटिन **17** घंटे **28** मिनट की अवधि के और विदेश सेवा में **24** भाषाओं में **9** घंटे दो मिनट की अवधि के **66** बुलेटिन प्रसारित होते है। इसके अलावा युवा बुलेटिन, धीमी गति के समाचार, खेल और लोक रुचि समाचार जैसे विशेष बुलेटिन पहले की तरह प्रसारित होते रहे। समाचारों पर आधारित एक नया कार्यक्रम 'विकास यात्रा' शुरू किया गया है। **16** अगस्त **1991** से शुरू किये गये पांच मिनट के इस हिन्दी कार्यक्रम में अर्थ-व्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों और सार्वजनिक प्रतिष्ठानों की विकास गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। इसमें श्रोताओं को देश में हो रहे विकास की चहुमुखी झलक मिलती है।

4.3.3. हिन्दी और अंग्रेजी में नये रूप में प्रसारित हो रहे हिन्दी और अंग्रेजी के प्रातःकालीन बुलेटिन **16** अगस्त **1991** से शुरू हुए। हिन्दी में 'समाचार प्रभात' नाम का यह कार्यक्रम आठ बजे से सवा आठ बजे तक और अंग्रेजी में 'मार्निंग न्यूज' सवा आठ बजे से साढ़े आठ बजे तक प्रसारित होता है। इनमें समाचार, किसी सामयिक विषय पर समीक्षा, समाचार पत्रों पर एक नजर तथा समाचार सारांश प्रसारित किया जाता है।

4.3.4. हिन्दी और अंग्रेजी में समाचार बुलेटिन अब चौबीसों घंटे प्रसारित किये जाते हैं। **2** अक्तूबर **1991** से देर रात एक बजे से पांच बजे तक जो नये दस बुलेटिन शुरू किये गये, उनमें से पांच अंग्रेजी में और पांच हिन्दी में है।

4.3.5. आकाशवाणी के देशभर में **101** पूर्णकालिक तथा **232** अंशकालिक संवाददाता है। सात संवाददाता विदेशों-इस्लामाबाद, कोलम्बो, ढाका, काठमांडू, हरारे, दुबई और सिंगापुर में नियुक्त है। समाचार सेवा प्रभाग के समाचार एकत्रित करने के अन्य स्रोतों में केन्द्रीय अनुवीक्षण (मॉनीटरिंग) संगठन तथा प्रभाग से संबद्ध लघु अनुवीक्षण एकक और पी.टी.आई, यू.एन.आई, भाषा व वार्ता संवाद एजेंसियां है।

4.3.6. समाचार बुलेटिनों और समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की जानकारी दी गयी। आकाशवाणी ने अपने सामान्य प्रसारण को बीच में रोककर भूतपूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की मद्रास के निकट हुई दुखद हत्या का समाचार प्रसारित किया। राजीव गांधी की हत्या के बाद की सभी घटनाओं की जानकारी आकाशवाणी के बुलेटिनों में दी जाती रही।

4.3.7. जून **1991** में लोकसभा तथा सात राज्यों और केन्द्र-शासित प्रदेशों की विधानसभाओं के चुनावों और नवम्बर **1991** में लोकसभा के **15** और विधानसभाओं के **58** स्थानों के लिये उपचुनावों की घोषणा तथा चुनाव कराने के समाचारों का प्रसारण चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित मापदंडों के अनुसार किया गया।

4.3.8. जून **1991** में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के परिणामों का आकाशवाणी से प्रसारण अब तक का सबसे अधिक व्यापक प्रसारण रहा है। हिन्दी और अंग्रेजी में **175** विशेष चुनाव बुलेटिन प्रसारित हुए। इनमें से **16** बुलेटिन **15-15** मिनट के, **15** बुलेटिन **10-10** मिनट के, छह बुलेटिन साढ़े **7-7** मिनट के, **84** बुलेटिन पांच-पांच मिनट के और **54** बुलेटिन टैली और फ्लैश के रूप में एक-एक मिनट के थे। हिन्दी और अंग्रेजी में कुल **41** चुनाव वार्तायें प्रसारित की गयीं जिनमें से **15** दिल्ली से और **26** क्षेत्रीय केन्द्रों से राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित हुईं।

4.3.9. राष्ट्रीय प्रसारण के अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेजी में **9** परिचर्चायें आयोजित की गयीं। इनमें से पांच दिल्ली से और चार कलकत्ता, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, और लखनऊ से प्रसारित हुईं। इन कार्यक्रमों में सबसे महत्वपूर्ण रेडियो ब्रिज या रेडियो सम्मेलन था, जो राष्ट्रीय प्रसारण में दो दिन तक सीधे प्रसारित हुआ। आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र को पहली बार विशेष सर्किट के माध्यम से **14** राज्यों की राजधानियों से एक साथ जोड़ा गया और सभी **15** स्थानों पर विशेषज्ञों ने अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। इस कार्यक्रम में विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं से टेलीफोन पर भेंटवार्तायें भी सीधे प्रसारित की गयीं।

4.3.10. चुनाव परिणामों की घोषणा के दौरान पांच विशेष न्यूज रील और समाचार दर्शन कार्यक्रम प्रसारित हुए जिनमें भेंटवार्तायें तथा चुनाव विश्लेषण शामिल किये गये। नई दिल्ली में समाचार कक्ष में चुनाव के समाचारों के प्रसारण की प्रक्रिया को पहली बार कम्प्यूटरीकृत किया गया। चुनाव परिणाम प्राप्त होते ही उन्हें प्रसारित कर दिया जाता था और कम्प्यूटरों के ज़रिये उनका विश्लेषण किया गया।

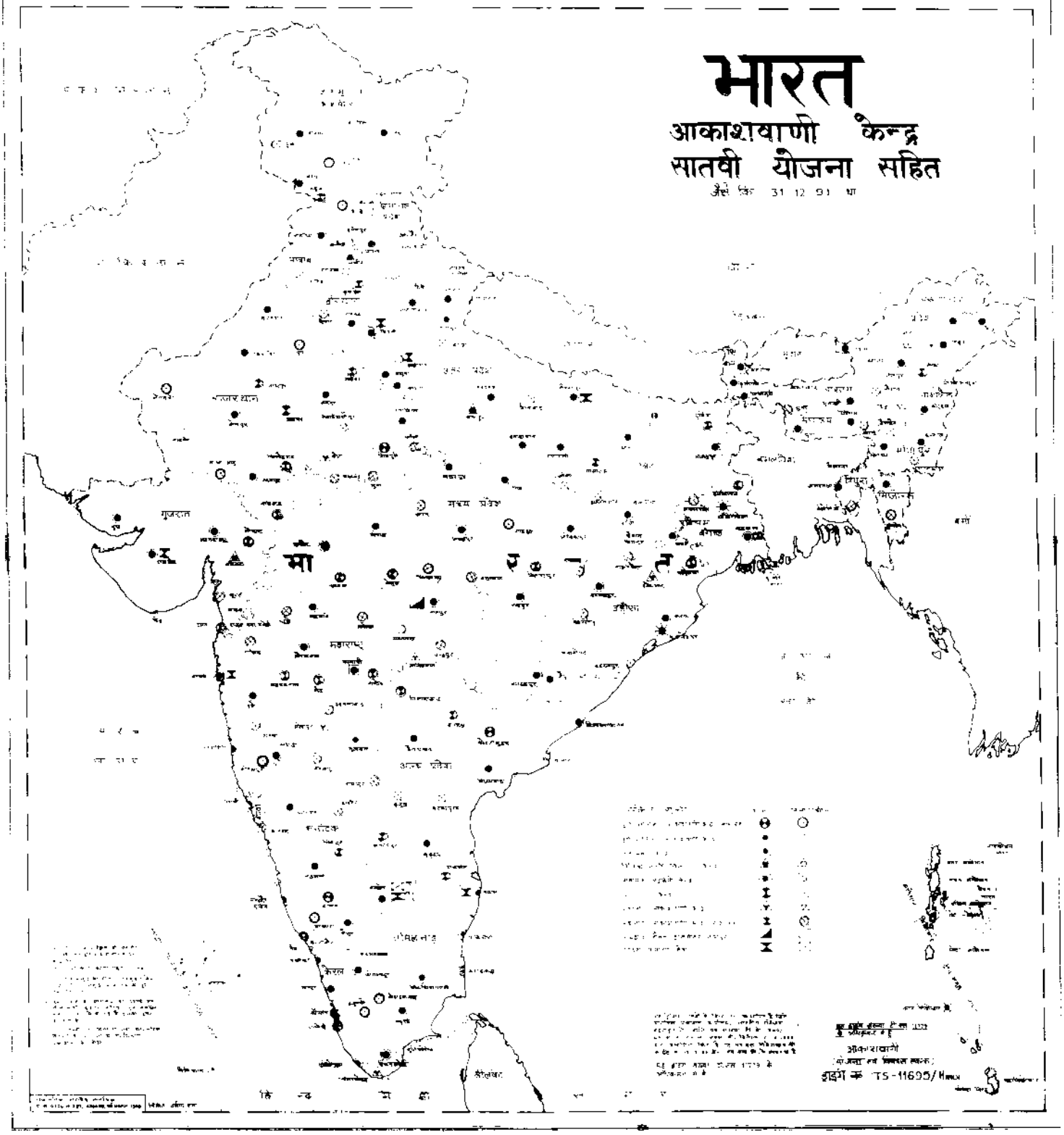

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित

4.3.11. समाचार सेवा प्रभाग ने जिन अन्य प्रमुख घटनाओं को प्रसारित किया, उनमें दसवीं लोकसभा का गठन, केन्द्र में श्री नरसिम्ह राव के नेतृत्व में मंत्रिपरिषद द्वारा शपथ ग्रहण, असम, हरियाणा, केरल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, और पांडिचेरी में चुनावों के बाद सरकारों का गठन, नरसिम्ह राव सरकार द्वारा विश्वास मत प्राप्त करना, संसद का बजट अधिवेशन, आम बजट और रेल बजट का प्रस्तुत किया जाना और सरकार द्वारा व्यापार तथा आर्थिक क्षेत्र में ढांचागत सुधारों की घोषणा आदि शामिल है।

4.3.12. बजट अधिवेशन के दौरान संसद की प्रतिदिन की कार्यवाही की जानकारी 'संसद समीक्षा', और 'इस सप्ताह संसद में' जैसे कार्यक्रमों के अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेजी में प्रसारित की गयी।

4.3.13. राष्ट्रपति श्री आर. वेंकटरामन की वियतनाम और फिलीपीन्स की यात्रा तथा प्रधानमंत्री श्री नरसिम्ह राव की मारिशस, जर्मनी, हरारे, पेरिस और करावस की यात्राओं के समाचार व्यापक रूप से दिये गये।

4.3.14. समाचार बुलेटिनों में नए संयुक्त राष्ट्र महासचिव का चुनाव, इराक द्वारा संयुक्त राष्ट्र की युद्ध विराम की शर्त की स्वीकृति, अमरीका तथा सोवियत संघ के बीच सामरिक हथियारों में कटौती की संधि पर हस्ताक्षर, सोवियत संघ में सरकार का तख्ता पलटने का विफल प्रयास और नेपाल में आम चुनाव जैसी अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के समाचार भी प्रसारित किये गये। इसके अलावा हरारे में गुटनिरपेक्ष देशों के शासनाध्यक्षों का शिखर सम्मेलन, जर्मनी में भारत महोत्सव और सिंगापुर में राष्ट्र मंडल देशों के वित्त मंत्रियों की बैठक के समाचारों को भी बुलेटिनों में प्रमुखता दी गयी।

4.3.15. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिताओं के बारे में भी पर्याप्त रूप से समाचार दिये गये। इनमें विंबलडन टेनिस प्रतियोगिता, भारत-आस्ट्रेलिया हॉकी मैच, शारजाह कप क्रिकेट मैच, प्रीओलंपिक क्वालीफाईंग हाकी प्रतियोगिता, नई दिल्ली में विश्व कैरम प्रतियोगिता, भारत और दक्षिण अफ्रीका के बीच कलकत्ता, ग्वालियर और नई दिल्ली में ऐतिहासिक एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच, तिरुपति में पच्चीसवीं राष्ट्रीय हॉकी प्रतियोगिता आदि शामिल हैं।

4.3.16. आकाशवाणी ने समाचार और समाचारों पर आधारित कार्यक्रमों के माध्यम से पंजाब, जम्मू-कश्मीर और पूर्वोत्तर राज्यों में आतंकवादी गतिविधियों पर नियंत्रण पाने में सरकार के प्रयासों की जानकारी देने का क्रम जारी रखा। चंडीगढ़ और श्रीनगर की क्षेत्रीय समाचार इकाइयों ने पंजाब और चंडीगढ़ में कर्मचारियों को जान से मारने की धमकियों के बावजूद आतंकवादी गतिविधियों और उनके शिकार हुए लोगों के बारे में समाचार देना जारी रखा।

4.3.17. रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद जैसे विवादास्पद मसलों को निष्पक्ष, संतुलित और तथ्यात्मक ढंग से समाचार बुलेटिनों और अन्य कार्यक्रमों में प्रस्तुत किया गया।

4.3.18. करंट अफेयर्स, चर्चा का विषय है, स्पॉट लाइट सामयिकी, तबसरा, समाचार प्रभात और मार्निंग न्यूज में समीक्षाओं, न्यूज रील और समाचार दर्शन जैसे समाचार-आधारित कार्यक्रम में अयोध्या समस्या और साम्प्रदायिक सद्भाव, आरक्षण, जम्मू-कश्मीर, पंजाब और असम की स्थिति, केन्द्र सरकार के नये आर्थिक उपाय, सोवियत संघ में परिवर्तन, उत्तरकाशी में भूकंप, सार्वजनिक वितरण प्रणाली, नरसिम्ह राव सरकार के पहले सौ दिन, पंचायती राज, पूजा स्थल विधेयक, उर्वरक सबसिडी, रेल बजट और आम बजट से पूर्व आर्थिक स्थिति जैसे विषयों को लिया गया।

घरेलू सेवायें

4.4.1. राष्ट्रीय प्रसारण सेवा (नेशनल) **13** मई **1988** को शुरू की गई थी। इस समय इस सेवा का लाभ देश की **54** प्रतिशत आबादी को हो रहा है। इसके माध्यम से श्रोताओं का मनोरंजन भी किया जाता है और उन्हें सूचनाएं भी दी जाती हैं।

इस कार्यक्रम में उच्चकोटि के हिन्दुस्तानी, कर्नाटक और पश्चिमी संगीत, अन्वेषणपूर्ण रिपोर्ट, फीचर, पत्रिका, नाटक, खेल और वित्तीय समीक्षाएं, उर्दू के कार्यक्रम, विविधा यानि लोग व स्थानों, विषयों और संगीत का मिश्रित कार्यक्रम शामिल है।

4.4.2. आकाशवाणी ने भारतीय संगीत-शास्त्रीय, सुगम, लोक और आदिवासी-संगीत तथा पश्चिमी संगीत के प्रति लोगों में जागरूकता और रुचि पैदा करने में विशेष योगदान दिया है। कुल प्रसारण का **37.57** प्रतिशत भाग संगीत के कार्यक्रमों का होता है। संगीत का अखिल भारतीय कार्यक्रम, चैन कन्सर्ट्स और वार्षिक रेडियो संगीत सम्मेलन जैसे नेटवर्क कार्यक्रमों के जरिए आकाशवाणी ने शास्त्रीय संगीत को विशेष संरक्षण प्रदान किया है। इस तरह के दो राष्ट्रीय कार्यक्रम मंगलवार को हिन्दुस्तानी संगीत सभा तथा शुक्रवार को कर्नाटक संगीत सभा हैं। इनके माध्यम से प्रतिभाशाली युवा प्रतिभाओं को उभारा जाता है।

4.4.3. इस वर्ष का आकाशवाणी संगीत सम्मेलन अपने क्रम में **37** वां सम्मेलन था। इसमें कुल **21** सभाएं हुईं जिनमें **12** हिन्दुस्तानी और **9** कर्नाटक संगीत की थीं। यह संगीत सम्मेलन उत्तर भारत में **9** स्थानों और दक्षिण भारत में **6** स्थानों पर **12** और **13** अक्तूबर को आयोजित किये गये, जिन्हें **2** नवंबर से **3** दिसंबर **1991** तक आकाशवाणी से प्रसारित किया गया। इन आयोजनों में उच्चकोटि के **146** संगीतकारों ने भाग लिया। कर्नाटक संगीत के **3** सम्मेलन दिल्ली, बंबई और कलकत्ता में तथा हिन्दुस्तानी संगीत की **2** सभायें मद्रास और हैदराबाद में हुईं। संगीत सम्मेलन से राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने में काफी मदद मिलती है।

4.4.4. संगीत के क्षेत्र में उच्चकोटि की प्रतिभाओं को खोजने के उद्देश्य से आकाशवाणी ने संगीत प्रतियोगिताओं का आयोजन किया।

इस वर्ष **44** कलाकारों को इस प्रतियोगिता में चुना गया। इनमें **20** हिन्दुस्तानी तथा **24** कर्नाटक संगीत के थे।

4.4.5. आकाशवाणी का दिल्ली और मद्रास का राष्ट्रीय वाद्य वृन्द भारतीय संगीत के आर्केस्ट्रा पर पारंपरिक राग, लोक धुनों और अन्य रचनाओं को लेकर प्रयोग करता है। इसके साथ ही **17** केन्द्रों पर वृन्द गान एकांश भी बनाए गए हैं, जिनसे पूरे देश में समूह गान को बढ़ावा दिया गया है। दो प्रमुख संगीत समारोहों, त्यागराज व तानसेन, को आकाशवाणी द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया गया।

4.4.6. लोक संगीत व आदिवासी संगीत को देश के सुदूर इलाकों में जाकर एकत्रित करने, संग्रह करने व सूची बनाकर रखने के लिए **20** केन्द्र स्थापित किए गए। पश्चिमी संगीत में रुचि रखने वालों के लिए आकाशवाणी से **17** राज्यों में, विशेषकर युवाओं के कार्यक्रमों में पश्चिमी संगीत प्रसारित किया जाता है। इन कार्यक्रमों में न केवल विदेशी बल्कि स्थानीय कलाकारों को भी प्रस्तुत किया जाता है।

4.4.7. आकाशवाणी ने अपना गौरवशाली कार्यक्रम 'रामचरितमानस' पूरा कर लिया है। 408 भागों का यह कार्यक्रम आकाशवाणी के **53** केन्द्रों से प्रसारित हो रहा है।

4.4.8. आकाशवाणी डिस्क/कैसेट पर संग्रहालय की सामग्री लगातार जारी कर रहा है। औसतन हर तिमाही में दो कार्यक्रम जारी किये जाते हैं। संगीत प्रेमियों और आम लोगों ने इस योजना का अच्छा स्वागत किया है। अब तक इस योजना के अंतर्गत **26** कैसेट/डिस्क जारी हो चुके हैं।

4.4.9. गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर आकाशवाणी ने सर्वभाषा कवि सम्मेलन प्रसारित किया, जिसका हिन्दी अनुवाद नेटवर्क पर तथा क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद क्षेत्रीय केन्द्रों से प्रसारित हुआ। इस वर्ष वाराणसी में विभिन्न भारतीय भाषाओं के **16** जाने-माने कवियों ने कवि सम्मेलन में भाग लिया।

खेल प्रसारण

4.4.10. आकाशवाणी के कार्यक्रमों में खेल प्रसारण का प्रमुख स्थान है, क्योंकि खेल प्रसारणों को बड़ी संख्या में लोग सुनते हैं। इन खेल प्रसारणों में विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं की जानकारी देने और श्रोताओं खासकर युवाओं में खेल चेतना पैदा करने में मदद मिलती है।

4.4.11. खेलों तथा खेल प्रतियोगिताओं के संबंध में श्रोताओं तक निरंतर रूप से जानकारी पहुंचाने की दृष्टि से आकाशवाणी से निश्चित समय पर नियमित खेल कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इनमें प्रतिदिन हिन्दी और अंग्रेजी में पांच-पांच मिनट के खेल समाचार बुलेटिन, 15 मिनट की अंग्रेजी में साप्ताहिक स्पोर्ट न्यूज़रील और हिन्दी और अंग्रेजी में तीस मिनट का मासिक खेल पत्रिका कार्यक्रम शामिल है। इनसे देश में खेलकूद को लोकप्रिय बनाने में मदद मिलती है।

4.4.12. अप्रैल 1991 से दिसंबर 1991 तक आकाशवाणी ने विभिन्न अंतराष्ट्रीय और राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं का आंखों देखा हाल, वाइस कास्ट और भेंटवार्ताओं के रूप में खेलों से जानकारी देते रहने का निरंतर प्रयास किया।

4.4.13. राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों के समाचार देने के साथ-साथ आकाशवाणी से खो खो, कबड्डी आदि परंपरागत खेलों का आंखों देखा हाल प्रसारित करके उन्हें देश के युवकों में लोकप्रिय बनाने तथा परंपरागत खेलों में खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जाता है।

4.4.14. प्रत्येक माह के चौथे बृहस्पतिवार को नाटकों का अखिल भारतीय कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। इसका क्षेत्रीय भाषाओं में रूपान्तरण भी संबद्ध केन्द्रों द्वारा साथ-साथ प्रसारित किया जाता है। दिल्ली में केन्द्रीय नाटक एकांश में 30 मिनट की अवधि के मॉडल रेडियो नाटक तैयार किए गए, जिनका प्रसारण 30 से अधिक केन्द्रों से किया गया। कुछ चुने हुए विषयों पर सुप्रसिद्ध नाटककारों से श्रृंखला नाटकों के अखिल भारतीय कार्यक्रम के अंतर्गत नाटक लिखवाए गए। वर्तमान सामाजिक, आर्थिक समस्याओं के बारे में अनेक केन्द्रों से पारिवारिक नाटकों की कड़ियां प्रसारित की जाती हैं। हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं की साहित्यिक कृतियों पर आधारित नाट्य प्रस्तुतियों का श्रृंखलाबद्ध प्रसारण भी किया जाता है। इसका उद्देश्य श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन करना एवं विभिन्न क्षेत्रों की महान रचनाओं से उन्हें अवगत कराना है।

4.4.15. देश भर में नई प्रतिभाओं की खोज तथा रेडियो नाटकों में नई जान फूंकने के लिए 19 भारतीय भाषाओं में रेडियो नाटक लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। प्रत्येक भाषा में तीन श्रेष्ठ नाट्य रचनाओं को नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रत्येक भाषा में एक हास्य नाटक को अतिरिक्त पुरस्कार दिया गया। चुने गए नाटक उनकी मूल भाषा में प्रसारित किए गए है और सभी पुरस्कृत नाटकों को अधिक श्रोताओं तक पहुंचाने के लिए उनका हिन्दी में अनुवाद किया गया है।

4.4.16. आकाशवाणी के महानिदेशक की अध्यक्षता में 22 और 23 नवम्बर 1991 को बंबई में रेडियो नाटक पर गोष्ठी आयोजित की गई। इसमें अनेक केन्द्रों के नाटक विभागों के प्रभारी कार्यक्रम अधिकारियों ने रेडियो नाटकों के बारे में विचार-विमर्श में भाग लिया। बाहर से विशेषज्ञों, लेखकों तथा नाटककारों को भी इस गोष्ठी में आमंत्रित किया गया।

परिवार कल्याण कार्यक्रम

4.4.17. आकाशवाणी से परिवार कल्याण पर हर महीने लगभग 8 हजार कार्यक्रम प्रसारित होते है। इनमें वार्ताएं, नाटक, रूपक, भेंटवार्ताएं तथा विज्ञापन शामिल है। ये सामान्य एवं विशेष श्रोता कार्यक्रम के रूप में प्रसारित किए जाते है। परिवार कल्याण कार्यक्रमों में मुख्यतया छोटे परिवार के महत्व को समझाया गया। इनमें गर्भवती

महिलाओं एवं स्तनपान कराने वाली माताओं की देखभाल भी शामिल थी। आकाशवाणी ने परिवार कल्याण कार्यक्रमों के निर्माण के लिए 22 कार्यक्रम निर्माण एककों भी स्थापित किए हैं। एड्स बीमारी तथा शारीरिक संसर्ग से होने वाले अन्य रोगों तथा नशीले पदार्थों के सेवन की रोकथाम पर अधिक बल दिया गया। दूषित पानी पीने से होने वाली बीमारियों से बचाव के लिए श्रोताओं को स्वच्छ जल का महत्व बताने वाले कई कार्यक्रम प्रसारित किए गए। 'परिवार में बालिका के महत्व' पर भी आकाशवाणी के केन्द्रों से कार्यक्रम प्रसारित होते रहे।

युववाणी

4.4.18. 'युववाणी' कार्यक्रम में आकाशवाणी 15 से 30 वर्ष के युवाओं की निजी समस्याओं तथा देश की समस्याओं के प्रति मुक्त भाव से अपनी बात कहने के लिए एक मंच प्रदान करती है। इस बात का प्रयास किया गया कि युवाओं को देश के अन्य भागों के जीवन, संस्कृति और परंपराओं की जानकारी दी जाए। युववाणी सेवा ने साहित्य, नाटक और संगीत के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट प्रतिभाओं को सामने लाने में सहायता की है। उसने आकाशवाणी की अन्य वर्गों की सेवाओं के वास्ते भी प्रतिभाएं जुटाई हैं।

4.4.19. वृद्ध लोगों के लिये 17 राज्यों की राजधानियों के आकाशवाणी केन्द्रों से हर सप्ताह 30 मिनट की अवधि के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है। इस कार्यक्रम में उनकी रुचि के विषयों, जैसे स्वास्थ्य संबंधी देखभाल, पेंशन की समस्याएं, कर संबंधी जिम्मेवारियां, कानूनी सलाह, श्रेष्ठ रचनाओं का पाठ, वर्तमान घटनाक्रम और अन्य संबद्ध सूचनाओं को शामिल किया जाता है।

कृषि एवं गृह

4.4.20. गहन कृषि कार्यक्रम और सामान्य ग्रामीण श्रोताओं के लिए कार्यक्रम आकाशवाणी के 94 केन्द्रों। पर तैयार किए जाते है। 28 स्थानीय केन्द्र भी कृषि एवं गृह कार्यक्रमों का प्रसारण करते है। कृषि एवं गृह एककों के इस त्वरित विस्तार से ग्रामीण लोगों, विशेषकर किसान समुदाय को बहुत लाभ हुआ है। ग्रामीण प्रसारण में मुख्य ध्यान ग्रामीण लोगों को स्वस्थ एवं समृद्ध बनाने पर दिया जाता है। ग्रामीण लोगों के लिए चलाए गए गरीबी-उन्मूलन कार्यक्रमों को लागू करने में सहायता देने के लिए विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए जाते है।

4.4.21. प्रत्येक केन्द्र से ग्रामीण महिलाओं के लिए भी कार्यक्रम प्रसारित होते है। इनमें सामाजिक-आर्थिक विकास तथा कल्याण योजनाओं की जानकारी दी जाती है। आकाशवाणी के कई केन्द्रों पर यूनिसेफ के सहयोग से माता एवं शिशु कल्याण कार्यक्रम शुरू किये गये हैं।

4.4.22 आकाशवाणी के अनेक केन्द्रों पर कृषि तथा सम्बन्धित विषयों के बारे में सुदूर शिक्षा की विधि के रूप में कृषि विद्यालय योजना चलाई गई है, जिसमें कृषि तथा सम्बन्धित क्षेत्रों के बारे में पाठ प्रसारित किये जाते है।

4.4.23 ऊर्जा की बचत के उद्देश्य से जैव-टैक्नालॉजी के प्रचार-प्रसार पर वर्ष के दौरान और अधिक बल दिया गया। लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से 'अधिक पेड़ उगाओ' अभियान के लिए वर्षा के मौसम से पहले तथा बाद में विशेष रूप से तीव्र अभियान चलाया गया। कीटों एवं खरपतवार के जीव वैज्ञानिक नियंत्रण को लोकप्रिय बनाने के लिए भी कुछ कार्यक्रम तैयार किये गये हैं।

शैक्षिक कार्यक्रम

4.5.1 आकाशवाणी की केन्द्रीय शिक्षा योजना इकाई ने एक बहुत बड़ा धारावाहिक कार्यक्रम आरम्भ किया है। 'ह्यूमेन इवोल्यूशन' नाम के इस सबसे लम्बे रेडियो धारावाहिक को राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद् के सहयोग से तैयार किया गया है। 2 जून 1991 से शुरू किया गया 130 भागों वाला यह कार्यक्रम 18 भाषाओं में आकाशवाणी के 88 केन्द्रों से प्रसारित किया जा रहा है। 10 से 14 वर्ष की आयु के लगभग एक लाख बच्चों को इस कार्यक्रम के लिए पंजीकृत किया गया है जिनको ध्यान में रखकर यह कार्यक्रम प्रसारित किया जा रहा है। इसके अलावा दस हजार स्कूलों में भी यह धारावाहिक सुनाने की व्यवस्था की गई है। बच्चों को इस कार्यक्रम को सुनने के साथ-साथ बहुरंगी पूर्व-प्रसारण सामग्री प्राप्त होगी और प्रसारण के पश्चात् "स्वयं करिये किट" मिलेगी। यह सामग्री निःशुल्क दी जाएगी। इसके अलावा बीच-बीच में प्रतियोगितायें भी आयोजित की जायेंगी और बड़ी संख्या में विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे।

4.5.2 केन्द्रीय शिक्षा योजना इकाई ने इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के छात्रों के लिए भी प्रायोगिक तौर पर प्रसारण प्रारम्भ किया है। प्रारम्भ में 1 जनवरी 1992 से बम्बई तथा हैदराबाद केन्द्रों से धारावाहिक शुरू किये गये हैं।

विज्ञापन सेवा

4.6.1 लोकप्रिय सेवा 'विविध भारती' के अंतर्गत बम्बई तथा मद्रास स्थित दो शार्ट वेव ट्रांसमीटरों सहित 32 केन्द्रों से प्रतिदिन 12 घंटे 45 मिनट तथा रविवार और अवकाश वाले दिनों में 13 घंटे 15 मिनट तक श्रोताओं का मनोरंजन किया जाता है। हालांकि विविध भारती के कार्यक्रमों का मुख्य आकर्षण हिन्दी का फिल्मी तथा गैर-फिल्मी सुगम संगीत है, किन्तु इसके अलावा प्रसारित हास्य नाटिकाएं, लघु नाटक तथा फीचर और वार्ताएं भी लोकप्रिय होती है।

4.6.2 विविध भारती पर विज्ञापन प्रसारण नवम्बर 1967 से प्रारम्भ हुआ। इस चैनल से विज्ञापनों द्वारा प्राप्त राजस्व वर्ष-प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है। वर्ष 1990-91 में केवल विविध भारती से 25.25 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ। राजस्व को और अधिक बढ़ाने के लिए विज्ञापन सेवा प्राथमिक चैनलों के सीमित कार्यक्रमों में दो चरणों में शुरू की गई। अप्रैल 1982 से राष्ट्रीय समाचार नेटवर्क पर (प्रथम चरण) तथा 28 जनवरी 1985 से 55 अधिक चुनिंदा आकाशवाणी केन्द्रों पर प्रारंभिक आंकड़ों से पता चलता है कि वर्ष 1990-91 के दौरान विविध भारती तथा प्राथमिक चैनलों पर

प्रसारित विज्ञापनों से 39.30 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ, जो पिछले वर्ष की इसी अवधि में अर्जित राजस्व से 4.2 करोड़ रुपये अधिक है। (परिशिष्ट चार)

विदेश सेवा प्रभाग

4.7.1 आकाशवाणी का विदेश सेवा प्रभाग भारत तथा अन्य देशों में सम्पर्क सूत्र का काम करता है। इसमें 24 भाषाओं में प्रतिदिन 10 घंटे 15 मिनट के कार्यक्रम प्रसारित होते है। अंग्रेजी में सामान्य विदेश सेवा तथा 15 विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में विश्व के विभिन्न भागों के श्रोताओं के लिए कार्यक्रम प्रसारित होते हैं।

4.7.2 विदेश प्रसारणों में अंतर्राष्ट्रीय मसलों पर भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाता है। दैनिक वार्ताओं एवं समाचार पत्र समीक्षाओं के माध्यम से और विदेशी श्रोताओं को भारतीय जनजीवन, चिंतन, संस्कृति और परम्पराओं के सम्बन्ध में जानकारी देने के साथ-साथ उन्हें भारत की घटनाओं से अवगत कराया जाता है। विदेश सेवा प्रभाग इस प्रकार भारत की छवि को निखारते हुए विश्व में भारत के सांस्कृतिक दूत की भूमिका निभाता है। हिन्दी, तमिल, तेलुगु तथा गुजराती के कार्यक्रम बाहर रहने वाले भारतीय नागरिकों तथा बंगला उर्दू, पंजाबी व सिन्धी के कार्यक्रम भारत उपमहाद्वीप एवं पड़ोसी देशों के श्रोताओं के लिए होते हैं।

4.7.3 इस प्रसारण के अंतर्गत मिले-जुले कार्यक्रम होते है। आमतौर पर समाचार वार्ताएं और समाचार-पत्रों की समीक्षा प्रसारित की जाती है। साथ ही न्यूजरील, लेख और साहित्य पर पत्रिका कार्यक्रम, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों पर बातचीत और चर्चाएं, विकास गतिविधियों के बारे में फीचर और राष्ट्रीय जीवन की प्रगति, महत्वपूर्ण घटनाओं और संस्थानों के बारे में वार्ताएं, भारत के विभिन्न क्षेत्रों के सांस्कृतिक, लोक और आधुनिक संगीत कार्यक्रम के मुख्य हिस्से है। हर शनिवार को संयुक्त राष्ट्र के समाचार विश्व के विभिन्न भागों के लिए प्रसारित किये जाते हैं।

4.7.4 विदेश सेवा प्रभाग, प्रतिवर्ष एक सौ से अधिक देशों को द्विपक्षीय आदान-प्रदान के आधार पर संगीत, उच्चारित शब्द तथा अन्य कार्यक्रमों की 3,000 रिकार्डिंग उपलब्ध कराता है। प्रभाग प्रति सप्ताह अमरीका, ब्रिटेन और कनाडा के रेडियो केन्द्रों को विदेश मंत्रालय के माध्यम से भारतीय भाषाओं में तैयार किये गये कार्यक्रम भेजता है, ताकि प्रवासी भारतीयों को भारत के बारे में समय-समय पर अद्यतन और विश्वस्त जानकारी मिल सके।

4.7.5 विदेश सेवा प्रभाग एक मासिक कार्यक्रम पत्रिका 'इंडिया कालिंग' भी प्रकाशित करता है। इसके अलावा विदेश सेवा के प्रसारण कार्यक्रमों की अग्रिम जानकारी देने के लिए पश्तो, स्वाहिली, तिब्बती, अरबी, बर्मी, चीनी, फारसी, नेपाली, फ्रांसीसी तथा इंडोनेशियाई आदि 10 भाषाओं में त्रैमासिक फोल्डर भी प्रकाशित किये जाते है।

आकाशवाणी वार्षिक पुरस्कार

4.8 आकाशवाणी द्वारा विशिष्ट नाटकों, वार्ताओं, संगीत प्रस्तुतियों और अभिनव कार्यक्रमों के लिए पुरस्कार प्रदान किये जाते है। वर्ष में समाचार भेजने में उल्लेखनीय कार्य के लिए "वर्ष का संवाददाता" पुरस्कार और राष्ट्रीय एकता पर सर्वोत्कृष्ट कार्यक्रम तैयार करने के लिए "लासा कौल पुरस्कार" प्रदान किये जाते है। विशेष वार्ताओं, युववाणी और परिवार कल्याण से सम्बन्धित कार्यक्रमों के लिए भी पुरस्कार दिये जाते है। आकाशवाणी पुरस्कार योजना के एक अंग के रूप में समूह गान प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। अनुसंधान और विकास प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए प्रति वर्ष तकनीकी दक्षता पुरस्कार भी दिये जाते हैं।

अनुलेखन एकक

4.9 अनुलेखन एकक ने राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री के भाषणों की 200 अनुलिपियां प्राप्त की और विभिन्न सरकारी विभागों तथा जन संचार माध्यमों के तत्काल इस्तेमाल के लिए 60 प्रतियां उपलब्ध कराईं। नेहरू प्रकोष्ठ ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के 2549 भाषणों के 73 भाग तैयार करने का कार्य पूर्ण कर लिया।

आकाशवाणी संग्रहालय

4.10 आकाशवाणी संग्रहालय ने शास्त्रीय एवं लोक संगीत, नाटक, रूपक पुरस्कार पाने वाले कार्यक्रम, स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण, रेडियो आत्मकथा योजना के अंतर्गत साहित्यकारों से भेंटवार्तायें, वार्ता परिचर्चा, रेडियो संगीत सम्मेलन, स्मारक व्याख्यान मालायें और विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों की 290 घंटे की नई रिकार्डिंग प्राप्त की है। इस प्रकार अब तक 17290 घंटे की रिकार्डिंग सरक्षित की जा चुकी है जिसमें से 95 प्रतिशत सामग्री कम्प्यूटरीकृत और प्रलेखित है। जिन विख्यात संगीतकारों की रिकार्डिंग डिस्क कैसेट के रूप में जारी की गई है, वे है- उस्ताद हाफिज़ अली खां, उस्ताद जिया मोहियुद्दीन खां डागर, केराई कुरुचि पी० अरुणाचलम तथा साथी, पंडित गोविन्दप्रसाद जयपुर वाले, उस्ताद निस्सार हुसैन खां, मुश्ताक अली खां, टी०आर० महालिंगम, मदुरै मणि अय्यर, भटियाकुही रामानुज आयंगार, पं० रामचतुर मलिक, पं० पन्नालाल घोष, जी०एल० बालसुब्रहमण्यम तथा टी० चौदैया।

कार्यक्रम आदान-प्रदान एकक

4.11. कार्यक्रम आदान-प्रदान एकक के संग्रहालय में विभिन्न कार्यक्रमों की 7000 रिकार्डिंग है। संग्रहालय ने धारावाहिकों, नाटकों, श्रृंखला नाटकों, भाषा पाठ, समूह गानों, रूपकों आदि की 6500 टेप प्रतियां आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों को उपलब्ध कराईं। इनमें नये केन्द्रों को भेजी गई टेस्ट ट्रांसमिशन रिकार्डिंग तथा शोक संगीत की रिकार्डिंग भी शामिल है। इसके अलावा नवरचित कार्यक्रम रामचरितमानस के 408 भाग आकाशवाणी के 53 केन्द्रों को भेजे गये। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत 50 विदेशी प्रसारण संगठनों से प्राप्त हुए कार्यक्रम, जो मुख्यतया पश्चिमी संगीत के

कार्यक्रम थे और संयुक्त राष्ट्र, यूनेस्को, विश्व स्वास्थ्य संगठन आदि से प्राप्त कार्यक्रम भी विभिन्न केन्द्रों को दिये गये।

कर्मचारी प्रशिक्षण

4.12.1 आकाशवाणी का कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान दिल्ली में स्थित है। इसके छह क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान हैदराबाद, शिलांग, अहमदाबाद, लखनऊ, कटक और तिरुअनंतपुरम् में स्थित है। यह संस्थान कार्यक्रम निर्माण, योजना, प्रस्तुतिकरण और प्रशासन में सेवाकालीन प्रशिक्षण देने वाली एकमात्र संस्था है। 1991-92 के दौरान 779 कर्मचारियों ने विभिन्न प्रकार के 42 पाठ्यक्रमों में भाग लिया। मार्च 1992 से पहले 42 और पाठ्यक्रम प्रस्तावित है।

4.12.2 प्रसारण की नई टेक्नोलोजी में प्रशिक्षण देने के लिए संस्थान की क्षमता बढ़ाने की संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की सहायता से चलाई जाने वाली एक योजना को मंजूरी मिल गई है।

श्रोता अनुसंधान एकक

4.13 आकाशवाणी का श्रोता अनुसंधान एकक श्रोताओं की संख्या और स्वरूप तथा कार्यक्रमों के बारे में श्रोताओं की प्रतिक्रिया से सम्बन्धित जानकारी उपलब्ध कराता है और उन श्रोताओं पर कार्यक्रमों के प्रभाव का आकलन करता है जिनके लिए कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। विभिन्न केन्द्रों में 25 श्रोता अनुसंधान एकक है जिनमें से 20 एकक राज्यों की राजधानियों में है। क्षेत्रीय केन्द्रों, दिल्ली, बम्बई, मद्रास तथा कलकत्ता में चार चलते-फिरते एकक और विज्ञापन प्रसारण सेवा के लिए बम्बई में एक पृथक एकक है। इसके अलावा सातवीं योजना में श्रोता अनुसंधान व्यवसाय को और सशक्त बनाने के लिए 25 अतिरिक्त एकक खोलकर इलाहाबाद एवं शिलांग में दो क्षेत्रीय सचल एकक तथा विभिन्न केन्द्रों में 25 श्रोता अनुसंधान एककों की मंजूरी दी गई है।

अनुसंधान

4.14 आकाशवाणी और दूरदर्शन का अनुसंधान विभाग मीडियम और उच्च फ्रीक्वेंसी बैंडों पर ध्वनि के स्तर का अध्ययन करता है, ताकि प्रसारण सेवाओं को वैज्ञानिक ढंग से योजनाबद्ध किया जा सके। यह देश में प्रसारण के विकास और रख-रखाव से सम्बन्धित समस्याओं की भी जांच करता है। यह विभाग दूरदर्शन की अनुसंधान आवश्यकताओं की भी पूर्ति करता है। सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान प्रसारण में डिजिटल तकनीकों से सम्बन्धित एक केन्द्र की स्थापना की गई। इसके लिए संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम ने 5 लाख 70 हजार अमरीकी डालर की सहायता प्रदान की।

केन्द्र का उद्देश्य देश में प्रसारण तंत्र में आधुनिक टेक्नोलोजी का इस्तेमाल करने के साथ-साथ ऐसी डिजिटल प्रणालियां विकसित करने का है, जो आकाशवाणी तथा दूरदर्शन की आवश्यकताओं के अनुरूप हों।

सभी विविध भारती केन्द्रों के लिए कम्प्यूटरीकृत नेटवर्क प्रणाली विकसित की गई है। कार्यक्रमों को बम्बई से अपलिंक किया जायेगा और उपग्रह ग्रहण टर्मिनल तथा कम्प्यूटर के प्रयोग से विविध भारती कार्यक्रमों का वास्तविक समय पर प्रसारण हो सकेगा तथा प्रत्येक केन्द्र पर स्पॉट विज्ञापनों का समावेश संभव हो जायेगा। इससे काफी मात्रा में आवर्ती खर्च घटाया जा सकेगा तथा विविध भारती सेवा की कार्यक्षमता में सुधार होगा। बम्बई तथा दिल्ली में इस प्रणाली के परीक्षण किये जा रहे हैं।

विभाग ने 28 चैनल का आर०एन० रिसीवर विकसित किया है और इसकी तकनीकी जानकारी केल्ट्रान को दी गई है। इसी प्रकार वर्ष के दौरान एस-लैंड टी०वी०आर०ओ० सिग्नल जेनरेटर की तकनीकी जानकारी "बेल" को प्रदान की गई है। ये दोनों प्रणालियां आकाशवाणी तथा दूरदर्शन नेटवर्क में व्यापक रूप से काम में लाई जायेंगी।

विभाग ने स्वदेशी साधनों से एक सचल प्रेषण अनुसंधान प्रयोगशाला भी विकसित की है। यह देश में अपनी तरह की पहली प्रयोगशाला है। इस वाहन में न्यूमैटिक रूप से नियंत्रित 10 मीटर ऊंचा दूरदर्शक कस्तूल लगा होता है, जिसमें रिसीविंग एंटीना भी होता है। इस वाहन में रिकार्डिंग तथा मानीटरिंग के साथ-साथ छायांकन के सभी आवश्यक उपकरण भी लगे रहते है। इस वातानुकूलित वाहन में बिजली सप्लाई की वैकल्पिक व्यवस्था और जल सप्लाई का प्रबंध भी है। इससे अनुसंधान तथा विकास कर्मचारी प्रतिकूल मौसम में भी अपना अनुसंधान कार्य पूरी कुशलता के साथ कर सकते है। देश में वी०एच०एफ/यू०एच०एफ० प्रेषण स्टुडियो बड़ी संख्या में बनाने के उद्देश्य से विभाग का इस तरह की और सचल प्रयोगशालाएं तैयार करने का विचार है। देश के रेडियो एवं टेलीविजन के विस्तार की योजना बनाने में ये प्रयोगशालायें बहुत सहायक हो सकती है। ऐसी प्रयोगशालायें विकसित करने से विदेशी मुद्रा की भी काफी बचत होती है।

विभाग द्वारा उच्च शक्ति के प्रेषण के लिए विकसित की गई डायनामिक कैरियर कंट्रोल प्रणाली का आकाशवाणी के डिब्रूगढ़ तथा लखनऊ केन्द्रों में परीक्षण किया गया है। इस प्रणाली से उच्च शक्ति के प्रेषण में ऊर्जा की पर्याप्त बचत होगी और प्रेषण की गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी भी नहीं होगी।

बहु-मंजिले स्टुडियो के लिए फ्लोटिंग फ्लोर कंस्ट्रक्शन तैयार किया गया है और आकाशवाणी पुणे में इसे क्रियान्वित किया गया है। वहां पर किये गये अध्ययन से संकेत मिलता है कि बहुमंजिले भवनों में प्रसारण स्टुडियो बनाये जा सकते है और उसमें एक से दूसरी छत के बीच शोर की समस्या नहीं आएगी। इस डिजाइन से बहुत से क्षेत्रों में बहुमंजिले स्टुडियो बनाये जा सकेंगे। विभाग शेडापुर (नई दिल्ली) में एक संदर्भ श्रवण कक्ष तथा एक स्टीरियोफोनिक स्टुडियो का डिजाइन एवं निर्माण भी कर रहा है। देश में और अधिक यू०एच०एफ०टी०वी० ट्रांसमीटरों का इस्तेमाल करने के लिए एंटीना आयात करने पड़ते है। अनुसंधान विभाग ने 8 स्लाट वाला यू०एच०एफ० एंटीना विकसित

किया है जो प्राथमिक क्षेत्र में आयातित एंटीना के मुकाबले 16 प्रतिशत अधिक कवरेज एरिया प्रदान करता है।

विविध

4.15.1 मौसम चेतावनी तथा रेडियो संचार विषय पर आकाशवाणी ने नई दिल्ली में दो दिन की भारत-अमरीका कार्यशाला आयोजित की।

4.15.2 अक्तूबर 1991 में क्वालालम्पुर (मलेशिया) में एशिया पैसेफिक ब्राडकास्टिंग यूनियन की आम सभा/इंजीनियरी समिति की बैठक में आकाशवाणी को तीन ए०बी०यू० इंजीनियरी पुरस्कार मिले। इनके ए०बी०यू० टेक्नीकल रिव्यू में प्रकाशित लेख के लिए प्रथम पुरस्कार तथा "प्रशंसा" वर्ग के दो पुरस्कार शामिल है।

कार्मिक विकास

4.16.1 आकाशवाणी तथा दूरदर्शन में कार्यरत सभी स्टाफ आर्टिस्ट/आर्टिस्ट (विदेशी नागरिकों को छोड़कर) अब सरकारी कर्मचारी माने जायेंगे।

4.16.2 विश्व भर में विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में तेजी से हो रहे परिवर्तन के अनुरूप अपनी क्षमता बढ़ाने के उद्देश्य से आकाशवाणी ने विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ए०आई०बी०डी०, आई०टी०यू०, ए०बी०यू०, ई०बी०यू० आदि के साथ विचार- विनिमय बनाये रखने के लिए कार्यशालाओं एवं गोष्ठियों का आयोजन किया। वर्ष भर में विभिन्न कार्यक्रमों तथा इंजीनियरी गतिविधियों में 29 अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया।

अध्याय 5

दूरदर्शन

नेटवर्क

5.1.1. दूरदर्शन अपने एक केन्द्रीय कार्यक्रम निर्माण केन्द्र, 20 निर्माण केन्द्रों और अलग-अलग शक्ति के 534 ट्रांसमीटरों की सहायता से देश के 78.7 प्रतिशत लोगों तक अपने कार्यक्रम पहुंचा रहा है। यह विश्व के प्रमुख टेलीविजन प्रतिष्ठानों में गिना जाने लगा है। दूरदर्शन के ट्रांसमीटरों का ब्यौरा इस प्रकार है :

1. उच्च शक्ति के ट्रांसमीटर	66
2. कम शक्ति के ट्रांसमीटर	370
3. बहुत कम शक्ति के ट्रांसमीटर	76
4. ट्रांसपोंजर	22

5.1.2. सातवीं योजना के अंतर्गत चल रही परियोजनाओं के पूरा हो जाने पर देश में कार्यक्रम निर्माण केन्द्रों की संख्या बढ़कर 48 और दूरदर्शन ट्रांसमीटरों की संख्या बढ़कर 545 हो जाएगी जिससे देश की लगभग 84 प्रतिशत जनसंख्या इन कार्यक्रमों को देख सकेगी। दूरदर्शन के दूसरे चैनल की सेवा अभी दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के चार महानगरों को उपलब्ध है।

उपग्रह सेवा

5.2.1. दूरदर्शन विश्व के उन इने-गिने टेलीविजन प्रतिष्ठानों में है जो कार्यक्रमों के प्रसारण के लिए देश में ही निर्मित उपग्रह काम में लाते है। भारत के अपने बहुउद्देश्यीय उपग्रह इन्सेट-I डी ने जुलाई 1990 में काम करना शुरू कर दिया था। यह दूर संचार, मौसम और प्रसारण सेवाएं प्रदान करने के साथ-साथ दूरदर्शन के कार्यक्रम भी प्रस्तुत करने के काम आ रहा है। इसकी कुछ क्षमता विदेशी उपग्रह 'अरब सेट' को पट्टे पर दी गयी है।

5.2.2. राष्ट्रीय दूरदर्शन सेवा, इन्सेट एक-डी के एस-बैंड ट्रांसपोंडर के साथ-साथ दूरदर्शन के सभी ट्रांसमीटरों का उपयोग करते हुए आगे प्रसारण के लिए संकेत देती है। उपग्रह आधारित क्षेत्रीय सेवाएं पहले से ही चल रही है। इनसे किसी क्षेत्र विशेष के लिए उस क्षेत्र की भाषा में ही कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। ऐसी ही सेवाएं उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में आरम्भ की गई हैं जो इन्सेट एक-डी के क्रमशः सी-बैंड और एस-बैंड ट्रांसपोंडर का उपयोग कर रही हैं।

राष्ट्रीय कार्यक्रम

5.3.1. दूरदर्शन सप्ताह में कामकाज के दिनों में रात को 8.40 से 11.30 तक अपने विभिन्न केन्द्रों से राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित करता रहा है। प्रत्येक शुक्रवार को देर रात कला फिल्मों को दिखाने के लिए प्रसारण का समय 11.30 के बाद भी चलता है जिससे हिन्दी और अंग्रेजी में उत्कृष्ट फिल्में दिखाई जा सकें। विशेष रूप से तैयार की गई टेली-फिल्में और वृत्त चित्र भी शनिवार को दिखाए जाते हैं। राष्ट्रीय कार्यक्रम 15 अगस्त 1982 को शुरू किया गया था और केवल डेढ़ घंटे के लिए था। इसमें राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण, भारतीय सांस्कृतिक विरासत आदि पर आधारित कार्यक्रमों पर जोर दिया जाता है। नृत्य, नृत्य-नाटक, संगीत, मुशायरा और कवि सम्मेलन, प्रश्नोत्तर-कार्यक्रम, विभिन्न क्षेत्रों के महान आचार्यों के जीवन और उपलब्धियों को लेकर बनाए गए कार्यक्रम भी इसमें शामिल किए जाते हैं। विकास की गतिविधियों से संबद्ध कार्यक्रम, इन राष्ट्रीय कार्यक्रमों की मुख्य विशेषता है।

5.3.2. इस समय सप्ताह में काम के दिनों में राष्ट्रीय कार्यक्रमों का कुल प्रसारण समय रात 8.40 से लेकर 11.30 तक अर्थात् दो घंटे 50 मिनट होता है। प्रत्येक शुक्रवार और शनिवार को यह समय इससे भी अधिक होता है। कभी-कभी राष्ट्रीय कार्यक्रम बढ़ा दिया जाता है।

भारत

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्र पर आधारित

ऐसा तब होता है जब राष्ट्रीय हित के कुछ विशेष कार्यक्रम राष्ट्रव्यापी प्रासंगिकता के कारण प्रसारित करने होते है।

प्रातःकालीन प्रसारण

5.4. प्रातःकालीन प्रसारण 23 फरवरी 1987 को आरंभ किया गया था। शुरू मे यह 45 मिनट का था, लेकिन अब यह सप्ताह में सभी दिन सवेरे सात बजे से आरंभ होकर पौने दो घंटे के लिए चलता है। लेकिन रविवार को प्रसारण अवधि 90 मिनट की रहती है। इस सभा में प्रायः हल्के-फुल्के प्रहसन, धारावाहिक, विशिष्ट व्यक्तियों से साक्षात्कार, लघु वृत्त चित्र, स्वास्थ्य संबंधी बातें, सुगम संगीत और गीतों तथा नृत्यों पर आधारित कार्यक्रमों के अलावा आर्थिक पहलुओं को दर्शाने वाले विषय शामिल होते है। इस सभा में दो समाचार बुलेटिन भी प्रसारित होते है, इनमें एक हिन्दी मे और एक ही अंग्रेजी में होता है। दूरदर्शन ने परीक्षण के तौर पर तीन दिसम्बर 1991 से संसद के दोनों सदनों के प्रश्नोत्तर काल की कार्रवाई का प्रसारण आरंभ कर दिया है। एक सप्ताह लोकसभा के प्रश्नोत्तर काल का प्रसारण होता है और एक सप्ताह राज्य सभा के प्रश्नोत्तर काल का प्रसारण किया जाता है।

अपराह्न प्रसारण

5.5. दोपहर बाद के कार्यक्रमों का प्रसारण पहले प्रत्येक रविवार को होता था। बाद में शनिवार को भी इस सभा के कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे। 26 जनवरी 1989 से ये कार्यक्रम रविवार को छोड़कर सप्ताह के अन्य सभी दिन प्रसारित होने लगे हैं। आजकल रविवार को प्रसारण अपराह्न सवा एक बजे से ही शुरू हो जाता है। सबसे पहले गूंगों और बहरों के लिए समाचार बुलेटिन प्रसारित किया जाता है। इसका शीर्षक होता है 'बाधित श्रवण शक्ति वालों के लिए समाचार'। इन समाचारों के बाद क्षेत्रीय भाषा में कथाचित्र दिखाया जाता है। प्रत्येक शनिवार को प्रसारण तीसरे पहर दो बजे से साढ़े चार बजे तक और बाकी दिनों में प्रसारण समय दो बजे से 3.10 तक रहता है। इस प्रसारण में मुख्य रूप से बच्चों, महिलाओं और बुजुर्गों के लिए कार्यक्रम होते हैं जो प्रायः उस समय घर पर ही होते हैं। 22 अक्तूबर 1990 से सप्ताह में कामकाज के दिनों में हिन्दी और अंग्रेजी मे साढ़े सात मिनट के दो समाचार बुलेटिनों का प्रसारण शुरू हुआ और प्रत्येक रविवार को इन बुलेटिनों की अवधि पांच मिनट होती है। हिन्दी का समाचार बुलेटिन हर रोज अपराह्न दो बजे और अंग्रेजी का बुलेटिन अपराह्न तीन बजे प्रसारित किया जाता है।

सांध्यकालीन प्रसारण

5.6. रात को साढ़े आठ बजे तक के समय में विभिन्न केन्द्र अपने क्षेत्र की भाषाओं मे कार्यक्रम प्रसारित करते है। हिन्दी और अंग्रेजी के प्रमुख समाचार बुलेटिन क्रमशः 8.40 और 9.30 पर प्रसारित किये जाते हैं। जिन दिनों संसद का सत्र चल रहा होता है, अंग्रेजी समाचार बुलेटिन के तुरंत बाद रात को 9.50 पर संसद समाचार प्रसारित किए जाते हैं। यह प्रसारण सप्ताह मे काम-काज के दिनों में होता है। अंग्रेजी में दस मिनट का 'टुडे इन पार्लियामेंट' कार्यक्रम रात को साढे दस बजे प्रसारित किया जाता है।

समाचार और सामयिक घटनाचक्र

5.7.1. समाचार और सामयिक विषयों पर कार्यक्रम दूरदर्शन कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग है। दर्शकों को समुचित,वास्तविक और प्रामाणिक जानकारी देने के निरन्तर प्रयत्न किए जाते है। सामयिक घटनाओं के कार्यक्रम अंग्रेजी में 'फोकस' और हिन्दी में 'आजकल' शीर्षक से प्रसारित किए जाते हैं। दूरदर्शन ने 1991 के मई-जून महीने में लोकसभा और विधानसभा चुनावों के समाचार देने के लिए व्यापक प्रबंध किए। चुनाव परिणाम और राजनीतिक विश्लेषण देने के लिए लगभग चौबीसो घंटे प्रसारण चलता रहा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के बराबर कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए कई प्रमुख प्रसारणकर्ताओं की सेवाएं ली गईं। चुनाव विश्लेषण सीधे प्रसारित करने के अलावा जहां भी आम चुनाव के साथ ही विधानसभा चुनाव हुए, वहां के महत्वपूर्ण चुनाव क्षेत्रों के मौके पर सम्वाद देने के लिए बाह्य-प्रसारण वाहन काम मे लाए गए। 1991-92 के केन्द्रीय बजट का व्यापक प्रसारण किया गया। दिल्ली में टेली-टैक्स्ट सेवाएं, विमानों, रेलों, परिवहन, शेयर बाजार, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, पर्यटन और मौसम सहित सभी प्रकार के ताजा राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों की नवीनतम जानकारी लोगों को बराबर देती रही।

5.7.2. दिल्ली स्थित दूरदर्शन केन्द्र प्रतिदिन राष्ट्रीय कार्यक्रमों में बीस-बीस मिनट के समाचार बुलेटिन हिन्दी और अंग्रेजी में प्रसारित करता है। सवेरे की सभा में भी दस-दस मिनट के समाचार बुलेटिन हिन्दी और अंग्रेजी मे प्रसारित किए जाते है। जब कि तीसरे पहर की सभा में इन दोनों बुलेटिन की अलग-अलग अवधि साढ़े सात मिनट रहती है। संसद के प्रत्येक सत्र से पहले 'संसद के सामने विभिन्न मुद्दे' नाम से कार्यक्रम प्रसारित होता है। सत्र के दौरान राष्ट्रीय कार्यक्रम में हिन्दी में 'संसद समाचार' और अंग्रेजी में 'पार्लियामेंट न्यूज' दस-दस मिनट के लिए प्रसारित किए जाते है। सांध्यकालीन सभा के अंत मे संवादों की शीर्ष पंक्तियां भी प्रसारित की जाती है। 'द वर्ल्ड दिस वीक' के नाम से विश्व की घटनाओं का साप्ताहिक ब्यौरा प्रसारित होता है। हिन्दी में ताना-बाना नाम से एक अन्य साप्ताहिक संवाद पत्रिका कार्यक्रम प्रसारित होता है, जिसमें देश की सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाएं होती हैं।

5.7.3. इस समय केवल 14 दूरदर्शन केन्द्रों में अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में कार्यक्रम निर्माण तथा समाचार-बुलेटिनों के प्रसारण की सुविधा उपलब्ध है। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मदास केन्द्र भी दूसरे चैनल पर क्षेत्रीय भाषाओं में समाचार प्रसारित करते है। केन्द्र महीने में कम से कम दो बार क्षेत्रीय भाषाओं में क्षेत्रीय विषयों पर सामयिक कार्यक्रम भी प्रसारित करते हैं।

प्रायोजित योजना

5.8.1. प्रायोजित योजना के अंतर्गत निर्माता (प्रोड्यूसर) को कार्यक्रमों के निर्माण की लागत स्वयं देनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त उसे समय-समय पर लागू स्वीकृत दर के हिसाब से दूरदर्शन को शुल्क देना होता है। इसके बदले निर्माता/प्रायोजक को अपने ग्राहकों के विज्ञापन

प्रसारित करने के लिए दूरदर्शन द्वारा निर्धारित मुक्त-वाणिज्यिक-समय पाने का हक मिल जाता है।

5.8.2. दूरदर्शन ने अक्तूबर 1990 से एक नया प्रायोजना-कार्यक्रम आरंभ किया है। इसके लिए बाहर के निर्माताओं और व्यावसायिकों से विभिन्न वर्गों के कार्यक्रमों के लिए लगभग 3500 प्रस्ताव प्राप्त हुए है। इन प्रस्तावों का एक विशेषज्ञ-समिति मूल्यांकन कर रही है। इस समिति में सरकार द्वारा नियुक्त गैर-सरकारी सदस्य हैं। इस बीच उन्हीं धारावाहिकों के प्रसारण की समय सारणी तैयार की जा रही है जिनको पुरानी योजना के अंतर्गत पहले मंजूरी दी जा चुकी है और जो तैयार किए जा रहे हैं। दूरदर्शन ने सामाजिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, मनोविनोद, विकास, राष्ट्रीय एकता के संवर्धन आदि विषयों पर, सारे सप्ताह, शाम और सवेरे सबसे अधिक व्यस्तता के समय तथा रविवार को सवेरे प्रायोजित कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया है। बच्चों की रुचि के धारावाहिक प्रायः रविवार को सुबह की सभा में प्रसारित किए जाते हैं। इसमें अतिरिक्त लोकप्रिय ज्ञानप्रद अंतर्राष्ट्रीय धारावाहिक भी प्रसारण कार्यक्रमों में सम्मिलित किए जाते हैं। विभिन्न भारतीय भाषाओं के जाने माने गौरव ग्रंथों को भी छोटे पर्दे पर दिखाया जाता है।

विज्ञापन

5.9.1. दूरदर्शन पर विज्ञापन-सेवा 1976 में शुरू की गई। बड़े छोटे विज्ञापन और प्रायोजित कार्यक्रम राष्ट्रीय संजाल के अलावा निम्नांकित केन्द्रों से भी प्रसारित किए जाते हैः

1. दिल्ली चैनल एक और दो
2. कलकत्ता चैनल एक और दो
3. मद्रास चैनल एक और दो
4. बम्बई चैनल एक और दो
5. हैदराबाद
6. बंगलौर
7. जालंधर
8. लखनऊ
9. श्रीनगर
10. त्रिवेन्द्रम
11. अहमदाबाद

दिल्ली में दूरदर्शन की विज्ञापन सेवा, राष्ट्रीय संजाल और सभी केन्द्रों के लिए विज्ञापन लेती है। प्रादेशिक केन्द्रों के लिए दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रायोजन का काम भी दूरदर्शन विज्ञापन सेवा करती है। अलग-अलग दूरदर्शन केन्द्रों में अपने कार्यक्रमों के अलावा विज्ञापनों और प्रायोजित कार्यक्रमों की बुकिंग की व्यवस्था है।

5.9.2. व्यापारिक-विज्ञापन आचार संहिता के अनुसार ही विज्ञापन स्वीकार किए जाते हैं। सिगरेटों, तम्बाकू से तैयार चीजों, तरह-तरह की शराबों, मादक पदार्थों, गहनों और पानमसालों के विज्ञापन स्वीकार नहीं किए जाते। सामान्यतया हिन्दी और अंग्रेजी के विज्ञापन राष्ट्रीय संजाल से प्रसारण किए जाते है जबकि क्षेत्रीय भाषाओं के विज्ञापन, स्थानीय केन्द्रों से प्रसारित किए जाते है।

5.9.3. विज्ञापनों से दूरदर्शन की आय में निरन्तर वृद्धि होती चली गई है। पिछले पांच वर्षों में कुल हुई आमदनी का ब्यौरा निम्नांकित है :

वर्ष	रुपये-करोड़ में कुल राजस्व
1985-86	60.2
1986-87	98.0
1987-88	136.3
1988-89	161.26
1989-90	210.13
1990-91	256.00
1991-92	290 00 अनुमानित

5.9.4. नीति यह है कि विज्ञापनों की कुल अवधि, कुल समय के पांच प्रतिशत तक रहनी चाहिए। लेकिन इस समय विज्ञापनों की अवधि तीन प्रतिशत से भी कम है।

विशेष अभियान

5.10.1. दूरदर्शन अपनी स्थापना के समय से ही सामाजिक महत्व के संदेशों, विकास गतिविधियों और राष्ट्रीय एकता आदि के कार्यक्रम प्रसारित कर रहा है। इन दिनों दूरदर्शन छोटे परिवार के सिद्धान्त सहित परिवार कल्याण, 20-सूत्री कार्यक्रम, मद्यनिषेध, टीकाकरण, स्वास्थ्य, एड्स, कुष्ठनिवारण, राष्ट्र पुनर्निर्माण में युवाओं की भागीदारी, महिलाओं की स्थिति, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, उपभोक्ता संरक्षण, प्रौद्योगिकी मिशन, अस्पृश्यता निवारण, छोटी बचतों, ऊर्जा संरक्षण और अल्पसंख्यकों के कल्याण के 15-सूत्री कार्यक्रम के नियमित अभियान चला रखे है।

5.10.2. दूरदर्शन मंत्रालयों के साथ सहयोग से वयस्क साक्षरता, बालश्रमिक आयकर और अग्निशमन जैसे क्षेत्रों के लिये संयुक्त-कार्य नीति तैयार करता है।

5.10.3. दूरदर्शन पंजाब, असम और जम्मू-कश्मीर की सरकारों तथा विभिन्न केन्द्रीय मंत्रालयों के साथ सम्पर्क में रहता है और विभिन्न उच्च स्तरीय बैठकों के निर्णयों के अनुसार इन क्षेत्रों के लिए प्रचार अभियान निर्धारित करता है। इस वर्ष के दौरान दूरदर्शन का प्रयास यह रहा है कि इन क्षेत्रों के लोगों को यह बताया-समझाया जाए कि राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव की कितनी ज्यादा आवश्यकता है।

ग्रामीण कार्यक्रम

5.11.1 सभी दूरदर्शन केन्द्र अपने सामान्य कार्यक्रमों में गांवों में रहने वाले श्रोताओं के लाभ के लिए अपने सेवा-क्षेत्र में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रस्तुत करते है। इन कार्यक्रमों में ग्रामीण रुचि के अनुसार मनोरंजक बातें तो होती ही है, विकास के अन्य कई पहलू भी शामिल होते हैं, जैसे परिवार कल्याण परियोजनायें, सामुदायिक विकास, पशु-पालन, व्यवहारात्मक साक्षरता आदि। लेकिन मुख्य जोर कृषि पर

चुनाव परिणामों के प्रसारण की तैयारी में व्यस्त दूरदर्शन और आकाशवाणी केन्द्र

संसदीय सलाहकार समिति के सदस्य नई दिल्ली में दूरदर्शन के केन्द्रीय निर्माण केन्द्र में । चित्र में संसद सदस्य श्री छोटू भाई, श्रीमती सुषमा स्वराज, श्री सुरेश पचौरी और श्री एस.एस. के. राजेन्द्र कुमार दिखाई दे रहे हैं

सूचना और प्रसारण मंत्री, नवम्बर 1991 में कलकत्ता में उपग्रह से प्रसारित दूरदर्शन सेवा का शुभारम्भ करते हुए । समारोह में(दाएं से बाएं) पश्चिम बंगाल विधान सभा में विपक्ष के नेता श्री सिद्धार्थ शंकर राय, पश्चिम बंगाल के मुख्य मंत्री श्री ज्योति बसु और प्रख्यात फिल्म निर्देशक श्री मृणाल सेन भी उपस्थित थे ।

दिया जाता है। प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में 'कृषि-दर्शन', 'विकास की ओर', 'हमारे अधिकार और कर्तव्य', 'निर्माण और परिवर्तन' शामिल है।

5.11.2 प्रत्येक दूरदर्शन केन्द्र की एक ग्रामीण कार्यक्रम सलाहकार समिति है। इस समिति में राज्यों के सम्बद्ध विभागों के सरकारी कर्मचारी, कृषि विश्वविद्यालयों के विशेषज्ञ और प्रगतिशील किसान, सदस्य के रूप में शामिल होते हैं। समिति ग्रामीण कार्यक्रमों और अन्य जुड़े मामलों की तिमाही सूची को अंतिम रूप देने में केन्द्र को परामर्श देती है।

शैक्षिक कार्यक्रम

5.12.1. शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम दिल्ली से प्रसारित किये जाते हैं और इन्हें प्रत्येक दिन सवेरे 9.30 से दोपहर 12 बजे तक चार राज्यों–बिहार, उत्तर प्रदेश, गुजरात और उड़ीसा में दूरदर्शन रिले ट्रांसमीटरों द्वारा दिखाया जाता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी में ये कार्यक्रम उत्तर प्रदेश और बिहार के तीन जिला समूहों के लिए प्रसारित होते हैं। अन्य हिन्दी भाषी राज्यों–मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश में भी सभी दूरदर्शन ट्रांसमीटरों द्वारा दिखाया जाता है। इसके अलावा मराठी और तेलुगु शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम क्रमशः बम्बई और हैदराबाद केन्द्रों से प्रसारित किये जाते हैं।

5.12.2 शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम सामान्य ज्ञान वृद्धि के कार्यक्रम होते है और स्कूली पाठ्यक्रम पर आधारित नहीं होते। प्रत्येक भाषा में इन कार्यक्रमों की अवधि 45 मिनट होती है। प्राथमिक विद्यालयों के चार से आठ वर्ष तक और नौ से ग्यारह वर्ष तक की आयु वर्ग के बच्चों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित किये जाते है। प्रत्येक शनिवार को प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के मार्गदर्शन/प्रशिक्षण के लिए कार्यक्रम प्रसारित किये जाते हैं।

5.12.3 स्कूल दूरदर्शन कार्यक्रम पाठ्यक्रम पर आधारित होते हैं। इन्हें दिल्ली, बम्बई, मद्रास और श्रीनगर के दूरदर्शन केन्द्रों से सम्बद्ध राज्यों अथवा केन्द्र शासित प्रदेशों के शिक्षा अधिकारियों के परामर्श से तैयार किया जाता है। प्रत्येक केन्द्र में इन कार्यक्रमों की संख्या प्रति सप्ताह दो से पांच तक रहती है।

5.12.4 उच्चतर शिक्षा विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए सामान्य ज्ञानवृद्धि का एक घंटे का कार्यक्रम दूरदर्शन के राष्ट्रीय नेटवर्क से प्रसारित किया जाता है। नेटवर्क द्वारा इन कार्यक्रमों को दोबारा भी प्रसारित किया जाता है। ये कार्यक्रम अंग्रेजी में होते है और इन्हें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा तैयार किया जाता है। प्रत्येक बुधवार और शुक्रवार को सवेरे इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के सहायक शिक्षा कार्यक्रम परीक्षण के तौर पर प्रसारित किये जा रहे है।

5.12.5 वयस्क शिक्षा कार्यक्रम दूरदर्शन प्रसारण का एक महत्वपूर्ण अंग है। ग्रामीण युवकों, महिलाओं और औद्योगिक श्रमिकों जैसे खास वर्ग के दर्शकों के लिए तैयार किये गये कार्यक्रम मूलतः वयस्क शिक्षा कार्यक्रम हैं। ये कार्यक्रम बुनियादी तौर पर अनौपचारिक होते है और वयस्क शिक्षा से सीधे जुड़े होते हैं। 'चौराहा' नाम का एक वयस्क शिक्षा धारावाहिक सप्ताह में पांच दिन दोपहर की सभा म प्रसारित किया जा रहा है।

खेल

5.13 दूरदर्शन ने समाचारों के बाद खेलों को उच्च प्राथमिकता प्रदान की है। वह देश-विदेश के महत्वपूर्ण राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय खेलों को प्रसारित करता है। खेलों के सीधे प्रसारणों के अतिरिक्त, 'वर्ल्ड आफ स्पोर्ट्स नाम' की साप्ताहिक राष्ट्रीय खेल पत्रिका में कई खेल प्रतियोगिताओं को दिखाया जाता है।

कार्यक्रम आदान-प्रदान

5.14.1 भारत के 59 देशों के साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान के समझौते हैं। दूरदर्शन ने भी कई देशों के टेलीविजन संगठनों के साथ समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं। 1991-92 के दौरान दूरदर्शन ने सांस्कृतिक समझौतों के अंतर्गत लगभग 56 देशों को 250 से अधिक कार्यक्रम भेजे। इसी तरह लगभग 21 देशों से प्राप्त सौ से अधिक कार्यक्रम दूरदर्शन से प्रसारित किये गये है। विभिन्न देशों के राष्ट्रीय दिवसों पर राजदूतों अथवा उच्चायुक्तों के संदेश भी प्रसारित किये गये।

5.14.2 इस वर्ष के दौरान कार्यक्रम विनिमय एकांश को संगठनों और व्यक्तियों को सेवायें प्रदान करने से 22 लाख रुपये की आमदनी होने की आशा है। यह आमदनी कार्यक्रमों की बिक्री और वीडियो प्रतियां तैयार करने के लिए तकनीकी शुल्कों से होती है।

5.14.3. दूरदर्शन ने फ्रांस में कांस में अप्रैल 1991 में प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय टी०वी० कार्यक्रम बाजार समारोह में भाग लिया। वह अपने कार्यक्रमों के लिए अमरीका, नार्वे, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, ओमान, सीरिया, कुवैत, कनाडा, सऊदी अरब, सिंगापुर, सेशल्स, री-यूनियन द्वीप समूह के विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय टी०वी० संजालों अथवा केबल चैनलों से तीन लाख अमरीकी डालर के आर्डर प्राप्त किये।

5.14.4 विदेशी संगठनों और सरकारों के साथ कार्यक्रम आदान-प्रदान और सांस्कृतिक समझौतों को सुदृढ़ करने के लिए दूरदर्शन परस्पर स्वीकृत शर्तों के आधार पर फिल्में और कार्यक्रम तैयार करेगा। 1991-92 में दूरदर्शन के कार्यक्रम निर्माण दल ने 'ज़ेन' के पहले धर्माध्यक्ष और एक भारतीय राजकुमार जिसने बौद्ध धर्म में दीक्षा ली थी 'बोधिधर्म' नामक दो घंटे की एक टेली फिल्म का निर्माण शुरू किया। इसके महत्वपूर्ण दृश्यों को भारत और चीन में जाकर फिल्माया गया।

लोक सेवा संचार परिषद

5.15.1 लोक सेवा संचार परिषद् लाभ न कमाने वाला एक स्वयंसेवी संगठन है। परिषद् राष्ट्रीय एकता, उपभोक्ता जागरण, पर्यावरण, नशीली दवाओं का सेवन रोकने जैसे जनहित के विषयों पर क्वीकीज, जनहित फिल्में और संदेश तैयार करती है। इस परिषद् में

विज्ञापन एजेंसियों, बाजार अनुसंधान और माध्यम एकको के प्रतिनिधि हैं जो स्वेच्छा से अपनी सेवायें उपलब्ध कराते हैं। दूरदर्शन के महानिदेशक परिषद् के अध्यक्ष हैं।

5.15.2 लोक सेवा संचार परिषद् द्वारा तैयार अनेक क्वीकीज़/लघु फिल्मों का प्रसार किया जा चुका है। इनमें टार्च कैप्सूल, फ्रीडम रन, गांधीजी, पुष्प की अभिलाषा, हेल्प द म्यूनिसीपेलिटी हेल्प यू, एंटी ड्रग्स, एंटी स्मोकिंग, वाटर कंजरवेशन, एक सुर, हेल्मेट सेफ्टी, नेशनल एंथम, श्रद्धांजलि, राग देश, डा० एस० राधाकृष्णन, एनवायरनमेंटल पाल्यूशन और एल्कोहलिज्म शामिल हैं। परिषद् ने लोक सेवा संचार के क्षेत्र में प्रतिष्ठित स्थान बना लिया है।

कमीशंड कार्यक्रम

5.16.1 दूरदर्शन ने कमीशंड कार्यक्रमों की विशेष साफ्टवेयर योजना के तहत बाहर के निर्माताओं को कार्यक्रम तैयार करने का कार्य सौंपा है। इन कार्यक्रमों में विशेष अभियानों के अलावा समाचार और सामयिक विषय, राष्ट्रीय एकता, साम्प्रदायिक सद्भाव, समाज कल्याण, लोकतंत्र और धर्मनिरपेक्षता, महिलाओं, युवाओं और बुजुर्गों की रुचि के विषयों, विज्ञान और टेक्नालॉजी, संगीत और नृत्य तथा समाज में सांस्कृतिक प्रवृत्तियां, आदिवासियों और पिछड़े वर्गों का कल्याण, स्वास्थ्य, स्वच्छता, परिवार कल्याण, महान् पुरुषों की पुण्य तिथियां और जन्मशती और त्योहार आदि विषय शामिल हैं। इन कार्यक्रमों में टेली फिल्में, धारावाहिक, फीचर फिल्में, वृत्त चित्र, समाचार रूपक, स्थल आधारित कार्यक्रम और साक्षात्कार आदि की वीडियो टेप तथा 16 मिलीमीटर/ 35 मिलीमीटर फिल्में तैयार की जाती हैं।

5.16.2 इस योजना का मुख्य उद्देश्य न केवल सुयोग्य निर्माताओं को स्तरीय कार्यक्रम तैयार करने के लिए प्रोत्साहित करना व उनका सहयोग प्राप्त करना है बल्कि अच्छी फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देना भी है जो व्यावसायिक फिल्म निर्माताओं द्वारा निर्मित फिल्मों से भिन्न हों। दूरदर्शन द्वारा बाहर के निर्माताओं द्वारा भी कार्यक्रम तैयार करवाये जाते है। दूरदर्शन की बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने कार्यक्रमों तथा प्रायोजित कार्यक्रमों के साथ-साथ बाहर के निर्माताओं से कार्यक्रम तैयार करवाना जरूरी है।

5.16.3 दूरदर्शन बहुआयामी दृष्टिकोण वाले और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों की क्षमता के उपयोग के लिए प्रयत्नशील रहा है। इस प्रकार तैयार करवाये गये कई कार्यक्रमों को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में सम्मान/पुरस्कार मिले हैं। इनमें से बहुत से सिनेमाघरों में दिखाये जाने के अलावा देश के अन्दर और बाहर बेचे गये हैं।

दर्शक अनुसंधान

5.17.1 दूरदर्शन के 19 दर्शक अनुसंधान एकांश हैं जो दर्शकों और कार्यक्रम आयोजकों/निर्माताओं के बीच कड़ी का काम करते हैं। ये एकांश दूरदर्शन के प्रत्येक कार्यक्रम निर्माण केन्द्र के साथ संलग्न हैं।

5.17.2 दर्शक अनुसंधान एकांश दो प्रकार के अनुसंधान करता है– रचनात्मक और योगात्मक। रचनागत अनुसंधान में दर्शकों के बारे में विवरण और आवश्यकताओं का आकलन रहता है। जिससे कृषि, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण तथा सामाजिक शिक्षा जैसे विकासशील क्षेत्रों की समस्याओं और प्राथमिकताओं का पता लगाकर लोगों की जरूरत के अनुसार कार्यक्रम तैयार किये जा सके। प्रत्येक अनुसंधानकर्ता को विशेषज्ञता के लिए एक विशिष्ट विकासात्मक क्षेत्र दे दिया जाता है। यह अनुसंधानकर्ता निर्माता के साथ मिलकर कार्यक्रम बनाता है। इन कार्यक्रमों के प्रारूप की वास्तविक प्रसारण और योगात्मक मूल्यांकन से पहले जांच की जाती है। हालांकि अधिकतर अध्ययन सर्वेक्षण दर्शक अनुसंधान एकांश द्वारा किये जाते है किन्तु कुछ विषय अथवा अध्ययन-कार्य बाहरी अनुसंधान संगठनों को भी सौंपे जाते हैं।

प्रशिक्षण

5.18 दूरदर्शन के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए (1) भारतीय फिल्म और टेलीविजन प्रशिक्षण संस्थान, पुणे, (2) कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान, नई दिल्ली (3) अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद में प्रशिक्षण सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हैं। जहां भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे और अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र, अहमदाबाद कार्यक्रम कर्मचारियों तथा कार्यक्रमों से जुड़े काम करने वाले इंजीनियरी कर्मचारियों को प्रशिक्षित करते हैं, वहां कर्मचारी प्रशिक्षण संस्थान (इ), कम शक्ति के ट्रांसमीटरों/उच्च शक्ति के ट्रांसमीटरों का संचालन और रख-रखाव करने वाले इंजीनियरी कर्मचारियों और प्रशासनिक कर्मचारियों को प्रशिक्षण देता है। जब कभी अनुमति मिल जाती है, सचिवालय प्रशिक्षण और प्रबंध संस्थान, भारतीय जनसंचार संस्थान और भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की सेवाओं का भी उपयोग कर लिया जाता है, जिससे दूरदर्शन कर्मचारियों की विशिष्ट प्रशिक्षण आवश्यकता पूरी हो सके। दूरदर्शन अधिकारियों को प्रशिक्षण के लिए विदेशों में भी भेजा जाता है। इतना ही नहीं दूरदर्शन अपने कार्यक्रम कर्मचारियों और इंजीनियरों के लिए देश में भी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए कुछ विदेशी विशेषज्ञों की सेवाओं और तकनीकी कौशल का लाभ उठाता है।

वीडियो साफ्टवेयर

5.19 पिछले दशक में देश मे दूरदर्शन नेटवर्क के तेजी से विस्तार को देखते हुए दूरदर्शन के लिए वीडियो, साफ्टवेयर निर्माण क्षमता के विस्तार की आवश्यकता का महत्व काफी बढ़ गया है। इस क्षेत्र में दूरदर्शन तो अपनी क्षमता का विस्तार कर ही रहा है, दूरदर्शन के बाहर भी वीडियो साफ्टवेयर निर्माण इकाइयां स्थापित करने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। निजी क्षेत्र में ऐसी इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहन देने के लिए जनवरी 1985 में एक योजना की घोषणा की गयी थी। अब तक वीडियो साफ्टवेयर के निर्माण के लिए 298 इकाइयां पंजीकृत की जा चुकी हैं।

अध्याय 6

फिल्में

फिल्म प्रभाग

6.1.1. फिल्म प्रभाग भारत सरकार का फिल्म माध्यम से संबंधित प्रमुख संगठन है। इसका मुख्यालय बम्बई में है। अपने 43 वर्षों के इतिहास में फिल्म प्रभाग ने भारत में वृत्तचित्र आंदोलन के उद्भव और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। प्रभाग ने कई प्रतिभाशाली फिल्मकार तैयार किए है। इसने विभिन्न विषयों पर कई फिल्में बनवायी हैं। प्रभाग सिनेमाघरों को नियमित रूप से वृत्तचित्र सप्लाई करता है। समय के साथ-साथ फिल्म प्रभाग का विस्तार हुआ है और आज यह विश्व में सर्वाधिक लघु फिल्म निर्माता प्रतिष्ठानों में से है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन-यूनेस्को-ने इसे कनाडा के नेशनल फिल्म बोर्ड, स्वीडन के फिल्म इन्स्टिट्यूट, ब्रिटिश फिल्म इन्स्टिट्यूट, फ्रांस के सेंटर नेशनल द ला सिनेमाग्राफिक और पोलैण्ड की राष्ट्रीयकृत फिल्म इंडस्ट्री के समकक्ष रखा है।

6.1.2. फिल्म प्रभाग का उद्देश्य और लक्ष्य लोगों को फिल्म जैसे सशक्त माध्यम के जरिए शिक्षित और प्रेरित करना है, जिससे राष्ट्र निर्माण के कार्यक्रमों को लागू करने में उन्हें सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जा सके। प्रभाग देश-विदेश के लोगों के सामने भारत और यहां के लोगों की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की छवि प्रस्तुत करता है। भारत में वृत्तचित्र आंदोलन के विकास को बढ़ावा देने में प्रभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

निर्माण खंड

6.2.1. फिल्म प्रभाग का मुख्यालय बम्बई में है। दिल्ली, कलकत्ता और बंगलौर में इसके तीन फिल्म केन्द्र हैं। फिल्म प्रभाग हर साल जो फिल्में बनाता है उनमें से साठ प्रतिशत उसके अपने निर्देशकों और प्रोड्यूसरों द्वारा बनायी जाती हैं। प्रभाग के निर्माण खंड के चार अनुभाग हैं : (1) वृत्त चित्र, (2) समाचार पत्रिका (3) ग्रामीण दर्शकों के लिए विशेष रूप से बनायी गयी छोटी फीचर फिल्में, और (4) एनीमेशन फिल्में।

6.2.2. फिल्म प्रभाग विभिन्न विषयों पर वृत्तचित्र बनाता है। इनमें कृषि, कला, वास्तुशिल्प, उद्योग, अंतर्राष्ट्रीय मामले, खाद्य-सामग्री, उत्सव समारोह, स्वास्थ्य-चिकित्सा, आवास, विज्ञान और टेक्नोलाजी, खेल, व्यापार और वाणिज्य, परिवहन, जनजाति-कल्याण, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता जैसे विविध विषय शामिल हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि प्रभाग ने मानव जीवन की गतिविधियों और प्रयासों के सभी पहलुओं को सम्मिलित किया।

6.2.3. वृत्तचित्र के क्षेत्र में व्यक्तिगत प्रतिभाओं को बढ़ावा देने और देश में वृत्तचित्र आंदोलन को सशक्त बनाने के लिए फिल्म प्रभाग अपने निर्माण कार्यक्रम के तहत बनने वाली चालीस प्रतिशत फिल्में अपने विभिन्न केन्द्रों के जरिए स्वतंत्र फिल्म निर्माताओं से बनवाता है।

6.2.4. अपने सामान्य निर्माण कार्यक्रम के अलावा फिल्म प्रभाग भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को भी वृत्तचित्र बनाने में सहायता प्रदान करता है।

6.2.5. प्रभाग के समाचार दर्शन एकांश के दायरे में राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों की राजधानियों सहित सभी प्रमुख नगर और शहर शामिल हैं। प्रभाग हर पखवाड़े एक समाचार पत्रिका तैयार करता है और संग्रहणीय सामग्री का संकलन करता है। कमेन्टरी अनुभाग अंग्रेजी और हिन्दी में बनी फिल्मों का 14 भारतीय भाषाओं में रूपांतरण करता है। जब कभी जरूरत होती है विदेशी भाषाओं में भी फिल्मों का रूपान्तरण किया जाता है।

6.2.6. प्रभाग का कार्टून फिल्म एकांश वृत्त चित्रों और समाचार पत्रिकाओं के लिए एनीमेशन चित्र तैयार करता है। अब इसके पास कठपुतली फिल्म बनाने की भी सुविधा उपलब्ध है।

6.2.7. फिल्म प्रभाग का दिल्ली एकांश कृषि और सहकारिता मंत्रालय तथा परिवार कल्याण विभाग के लिए शिक्षाप्रद और प्रेरक फिल्में भी बनाता है।

6.2.8. रक्षा फिल्म खंड सेना की प्रशिक्षण संबंधी फिल्मों की आवश्यकता पूरी करता है।

क्षेत्रीय केन्द्र

6.3.1. फिल्म प्रभाग के कलकत्ता और बंगलौर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र गांवों से संबंधित विषयों पर एक-एक घंटे की छोटी फीचर फिल्में बनाते हैं। इस तरह की फिल्में किसी कथानक पर आधारित होती हैं। इनका उद्देश्य परिवार कल्याण और साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर संदेश प्रचारित करना या दहेज, बंधुआ मजदूरी और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों पर लोगों का ध्यान केन्द्रित करना है।

6.3.2. तमिल, तेलुगु, कन्नड़, बंगला, असमिया, उड़िया तथा पूर्वोत्तर और दक्षिण क्षेत्र की कई भाषाओं और बोलियों में बनने वाली इन फिल्मों में क्षेत्रीय और भाषा संबंधी विशिष्टता बनाए रखने के लिए स्थानीय प्रतिभाओं का उपयोग किया जाता है। इस तरह की फिल्मों ने समाज पर अपनी छाप छोड़ी है। गांवों के लोग सामाजिक-आर्थिक न्याय दिलाने के कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रहे है।

वितरण खंड

6.4.1. सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या में लगातार वृद्धि से फिल्म प्रभाग के वितरण खंड का भी विस्तार हुआ है। अब इसके दस शाखा कार्यालय है। ये बम्बई, नागपुर, लखनऊ, कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, विजयवाड़ा, बंगलौर, मदुरई और तिरुअनंतपुरम में स्थित है।

6.4.2. फिल्म प्रभाग की फिल्में प्रदर्शित करने वाले सिनेमाघरों में कितनी वृद्धि हुई है, इसका अनुमान उनकी संख्या में हुई वृद्धि से लगाया जा सकता है। 1952 में सिनेमाघरों और चलते-फिरते सिनेमाघरों की संख्या 3,348 थी जो 1991 में बढ़कर 13,181 हो गयी है। सिनेमेटोग्राफ अधिनियम तथा अन्य नियमों के अंतर्गत सिनेमाघरों को लाइसेंस इस शर्त पर दिए जाते हैं कि इनमें प्रत्येक फिल्म शो में 609.60 मीटर से कम लम्बी 'प्रमाणित डाक्यूमेंटरी/समाचार पत्रिका फिल्म' प्रदर्शित की जाएगी। इसके लिए फिल्म प्रभाग देश के सभी सिनेमाघरों में प्रदर्शन के लिए हर सप्ताह वृत्तचित्र और समाचार पत्रिका फिल्में जारी करता है। इस समय प्रभाग हर सप्ताह 15 भाषाओं में वृत्तचित्रों और समाचार पत्रिका फिल्मों के 906 प्रिन्ट जारी कर रहा है। इन फिल्मों को एक-एक सप्ताह के लिए हर सिनेमाघर में बदल-बदल कर प्रदर्शित किया जाता है। प्रदर्शन तब तक जारी रहता है जब तक देश के सभी 13181 सिनेमाघरों में ये दिखा लिए नहीं जाते। अनुमान है कि हर सप्ताह करीब 9-10 करोड़ दर्शक इन सिनेमाघरों में इन फिल्मों को देखते है।

6.4.3. फिल्म प्रभाग अपनी फिल्मों (16 मिलीमीटर) के प्रिन्ट क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय तथा केन्द्र और राज्य सरकारों के विभागों को देता है। ये इकाइयां हर सप्ताह करीब पांच करोड़ दर्शकों को ये फिल्में दिखाती है। वीडियो फिल्मों के जरिये अब इनको व्यापक पैमाने पर दर्शकों तक पहुंचाने की प्रबल संभावना है।

6.4.4. उपर्युक्त माध्यमों के अलावा फिल्म प्रभाग के वृत्त चित्र दूरदर्शन के राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यक्रमों के अंतर्गत भी प्रदर्शित किये जा रहे हैं। 1991-92 में प्रभाग ने अपनी 20 फिल्में दूरदर्शन को प्रदर्शन के लिए दी।

6.4.5. देश भर में कई शैक्षिक संस्थाएं तथा सामाजिक संगठन प्रभाग के दस शाखा कार्यालयों की फिल्म लाइब्रेरी से डाक्यूमेंटरी फिल्में उधार लेते है।

6.4.6. फिल्म प्रभाग की फिल्मों के वीडियो कैसेट तथा फिल्म प्रभाग द्वारा निर्मित फिल्में, गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए रेलवे, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, केन्द्र और राज्य सरकारों, शैक्षिक संस्थाओं और आम लोगों को बेचे जाते है। इस वर्ष गैर-व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए वी एच एस फिल्मों के 3506 कैसेटों की बिक्री से 3.32 लाख रुपये की आमदनी हुई।

6.4.7. विदेश मंत्रालय का विदेश प्रचार प्रभाग फिल्म प्रभाग के वृत्तचित्रों का चुनाव करता है तथा इनके प्रिन्ट विदेशों में भारतीय दूतावासों को भेजता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और कुछ निजी एजेंसियां भी विदेशों में ऐसी फिल्मों के वितरण की व्यवस्था करती है। प्रभाग की फिल्मों को रायल्टी अदा करने पर विदेशों में टेलीविजन और वीडियो नेटवर्क पर भी व्यावसायिक रूप से दिखाया जा सकता है।

फिल्म समारोह

6.5.1. प्रभाग बम्बई में वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों के एक-एक साल के अंतर से होने वाले अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह के आयोजन की व्यवस्था करता है। यह दुनिया भर में वृत्तचित्र, एनीमेशन फिल्म और लघु फिल्म के निर्माण से जुड़े सभी व्यक्तियों तथा संगठनों से सम्पर्क रखता है।

6.5.2. वृत्त चित्रों और लघु फिल्मों का दूसरा अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह फरवरी 1992 में अयोजित किया गया। इस समारोह में कुछ नये विषयों को शामिल करके इसका विस्तार किया गया। इस बार एनीमेशन फिल्मों का अलग से एक खंड बनाया गया था और पुरस्कारों की संख्या भी बढ़ा दी गयी थी। अब कुल 17 लाख रुपये मूल्य के पुरस्कार विभिन्न खंडों में सर्वश्रेष्ट फिल्मों के निर्देशकों को दिये जाते है। इस समारोह का एक खंड अंतर्राष्ट्रीय फिल्म बाजार का भी होता है जिसमें विदेशी खरीदारों को फिल्में बेची जाती है।

6.5.3. फिल्म प्रभाग की शैक्षिक और सूचनात्मक फिल्मों के बारे में बेहतर जानकारी देने और इनके उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रभाग राज्य सरकारों के सहयोग से राज्यों की राजधानियों में वृत्त चित्रों का समारोह आयोजित करता है। अब तक कलकत्ता, भोपाल, कोल्हापुर

और नागपुर में इस तरह के समारोह आयोजित किये जा चुके हैं और ये काफी सफल रहे हैं। फिल्म प्रभाग ने त्रिवेन्द्रम में आयोजित सातवें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह के बाजार खंड में भी हिस्सा लिया।

निर्माण संबंधी गतिविधियां

6.6.1. 1991 में अप्रैल से दिसंबर तक फिल्म प्रभाग ने 39 वृत्त चित्रों/लघु फिल्मों और छोटी फीचर फिल्मों की 81 रीलें बनायीं। इनमें से 35 फिल्में (68 रीलें) प्रभाग ने स्वयं बनायीं और 4 फिल्में (13 रीलें) स्वतंत्र रूप से फिल्में बनाने वाले प्रोड्यूसरों से बनवायीं। इस दौरान प्रभाग ने 31 समाचार पत्रिका फिल्में भी बनायीं। मार्च 1992 तक छह और फिल्में तैयार हो जाने की संभावना है।

6.6.2. प्रभाग ने साम्प्रदायिक सद्भाव, राष्ट्रीय एकता; अस्पृश्यता- निवारण, दहेज, नशाबंदी, परिवार कल्याण कार्यक्रम और महिलाओं की स्थिति के बारे में राष्ट्रीय अभियान के दौरान अपने वृत्त चित्रों और समाचार-पत्रिका फिल्मों के जरिए प्रचार में लगातार मदद दी।

6.6.3. प्रभाग ने 'जर्नी थ्रू द यूनीवर्स' नामक पन्द्रह कड़ियों का एक धारावाहिक भी बनाया, जिसमें वांछित प्रभाव उत्पन्न करने के लिए विशेष तकनीक और एनीमेशन का सहारा लिया गया। अब तक इस धारावाहिक की छह कड़ियां बन चुकी हैं।नौ कड़ियों का काम अलग-अलग चरणों में है और इनके भी जल्द पूरा हो जाने की संभावना है। अपना उत्सव के बारे में 'भारत मिलन दिल्ली में' (देश का प्रवेश) नाम की एक फिल्म का निर्माण कार्य पूरा होने को है। भारत के स्वाधीनता संग्राम के बारे में इस वर्ष भी प्रभाग ने फिल्में बनाईं और जारी कीं। स्वाधीनता संग्राम में विभिन्न राज्यों के योगदान के बारे में छह फिल्में निर्माण के अलग-अलग चरणों में हैं। प्रभाग के निर्माण कार्यक्रम में 16 फिल्में शामिल की गयीं हैं। श्रीमती नरगिस दत्त की जीवनी पर आधारित एक फिल्म पूरी हो चुकी है। जानी-मानी हस्तियों पर इसी तरह की 32 फिल्मों का निर्माण कार्य चल रहा है। भारत की स्वाधीनता की 40वीं जयंती के अवसर पर उद्योग, कृषि, ऊर्जा तथा विज्ञान और टेक्नोलाजी के क्षेत्र में पूरे देश में हुई प्रगति के बारे में पांच फिल्मों का निर्माण शुरू किया गया। हिन्दी में 'पूर्वांजलि' नाम की एक फिल्म का काम पूरा होने के बाद उसे दूरदर्शन पर प्रदर्शित किया गया।

पुरस्कार और मान्यता

6.7.1. दिसंबर 1991 को खत्म हुए साल के दौरान प्रभाग की फिल्मों ने निम्नलिखित राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार जीते।

राष्ट्रीय पुरस्कार

फिल्म का नाम	वर्ग	पुरस्कार
1. सेफ ड्रिंकिंग वाटर फार आल	सामाजिक विषय पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म	रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार (निर्माता और निर्देशक दोनों को)
2. बायो टेक्नोलाजी-सम पासीबिलिटीज़	सर्वश्रेष्ठ विज्ञान फिल्म	रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार (निर्माता और निर्देशक दोनों को)
3. डक्स आउट आफ वाटर	सर्वश्रेष्ठ शिक्षाप्रद/प्रेरक/ सूचनात्मक फिल्म	रजत कमल और 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार (निर्माता और निर्देशक दोनों को)
4. मोहिनी अट्टम	सर्वश्रेष्ठ सिनेमेटोग्राफी	रजत कमल और 10,000 रुपये नकद
5. उस्ताद अमजद अली खां	ज्यूरी का विशेष पुरस्कार	फिल्म निर्देशक को रजत कमल और 10,000 रुपये नकद
6. मोहिनी अट्टम	सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र पुरस्कार	केरल फिल्म पुरस्कार 1991

अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार

फिल्म का नाम	वर्ग	पुरस्कार
1. वाटर हारवेस्टिंग	चेकोस्लोवाकिया में नित्रा में कृषि से संबंधित फिल्मों का आठवां अंतर्राष्ट्रीय समारोह	वर्ग 'ग' की ट्राफी का पहला पुरस्कार तथा डिप्लोमा

6.7.2. प्रभाग की निम्नलिखित फिल्में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह -1992 के पैनोरमा खंड में प्रदर्शित करने के लिए चुनी गयी :

1. अभिशाप
2. उल्ला थिल्ला नल्लम
3. नरगिस
4. सपने
5. वाटर हारवेस्टिंग
6. प्लास्टिक इन एग्रीकल्चर
7. कदमपराई-द इनर्जी बैंक

आमदनी

6.8. 1991 में अप्रैल से दिसम्बर तक की अवधि में प्रभाग ने अपने 55 वृत्तचित्रों, 14 संक्षिप्त फिल्मों और 18 समाचार पत्रिका फिल्मों के 45,791 प्रिंट जारी किये। इसके अलावा प्रभाग ने विभिन्न राज्य सरकारों के 10 वृत्तचित्रों और 38 समाचार दर्शन फिल्मों के

1,976 प्रिंट भी जारी किये। प्रभाग ने भारत और विदेशों में गैर-व्यावसायिक उपयोग के लिए अपनी फिल्मों के 3,506 वीडियो कैसेट और 13,567 प्रिंटों की बिक्री की। इससे उसे 4 करोड़ 38 लाख रुपये की आमदनी हुई। इसमें से 2.82 लाख रुपये फिल्मों के शाट की बिक्री से प्राप्त हुए। मार्च 1992 तक 2.5 करोड़ रुपये और आमदनी होने का अनुमान है। क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय को सिनेमाघरों में अतिरिक्त प्रदर्शन के लिए वी एच एस कैसेटों के 764 प्रिंट भेजे गये।

6.9. वित्त मंत्रालय की स्टाफ निरीक्षण इकाई ने 1991 में बम्बई में प्रभाग के प्रशासनिक और निर्माण खंडों की जांच की। इकाई ने कलकत्ता और बंगलौर के क्षेत्रीय निर्माण केन्द्रों तथा शाखा वितरण कार्यालयों की भी जांच की। जांच रिपोर्ट अभी नहीं मिली है।

फिल्म समारोह निदेशालय

6.10.1. भारत सरकार ने 1973 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय के अंतर्गत फिल्म समारोह निदेशालय की स्थापना की थी। इसका मुख्य उद्देश्य देश में अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देना और विदेशों में भारतीय फिल्मों को लोकप्रिय बनाना था। फिल्म समारोह निदेशालय की गतिविधियों को मोटे तौर पर इस प्रकार रेखांकित किया जा सकता है:

1. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्रदान करना और राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करना ;
2. भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित करना ;
3. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में हिस्सा लेना ;
4. भारत में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह आयोजित करना ;
5. समारोह के पैनोरमा खंड के लिए फिल्मों को चुनना ;
6. सरकार की ओर से समय-समय पर फिल्मों के विशेष कार्यक्रमों का आयोजन करना।
7. फिल्मों के प्रिंट इकट्ठा करना और उनका लेखाजोखा रखना।

6.10.2. निदेशालय की गतिविधियों और नीति निर्धारण के लिए दिशा निर्देश देने का कार्य एक सलाहकार समिति करती है। समिति की बैठक चार महीने में एक बार आयोजित की जाती है। फिल्म उद्योग और इससे संबंधित विधाओं के राष्ट्रीय स्तर के जानेमाने लोग समिति के सदस्य हैं।

राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार

6.10.3. राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार 1953 में शुरू किये गये थे और तब से ये हर साल नियमित रूप से दिये जा रहे हैं। 38 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह के सिलसिले में पुरस्कारों के निर्णायक मंडल ने मार्च 1991 में पुरस्कार के लिए फिल्मों को देखना शुरू किया। फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री अशोक कुमार ने की तथा गैर फीचर फिल्मों के निर्णायक मंडल की अध्यक्षता श्री एस. कृष्णास्वामी ने की। सुश्री अमिता मलिक सिनेमा लेखन संबंधी निर्णायक मंडल की अध्यक्षा थीं। पुरस्कार के लिए करीब 117 फीचर फिल्में, 86 गैर-फीचर फिल्में, 13 पुस्तकें और 26 लेख प्राप्त हुए। सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार श्री के. एस. सेतुमाधवन की तमिल फिल्म 'मरुपक्कम' को मिला। सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म का पुरस्कार श्री अभिजित चट्टोपाध्याय की 'ग्रेवन इमेज' को मिला। सिनेमा पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक का पुरस्कार श्री मनमोहन चड्ढा की 'हिन्दी सिनेमा का इतिहास' (हिन्दी) नाम की पुस्तक को दिया गया और सुश्री सोमा ए. चटर्जी 1990 की सर्वश्रेष्ठ फिल्म समीक्षक के लिए चुनी गयी। इस वर्ष का दादासाहब फालके पुरस्कार आंध्र प्रदेश के श्री अक्किनेनी नागेश्वर राव को प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह के बाद विभिन्न पुरस्कार प्राप्त फिल्मों को दिखाया गया।

6.10.4. सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत निदेशालय ने विदेशी फिल्मों के अनेक समारोह आयोजित किये। दिल्ली और बम्बई में मिस्र और चीन की फिल्मों के सप्ताह का आयोजन किया गया। इनमें दोनों देशों की सात सात फिल्में प्रदर्शित की गयीं। हंगरी की फिल्मों का भी सप्ताह मनाया गया जिसमें वहां के तीन सदस्य वाले प्रतिनिधि मंडल ने हिस्सा लिया। इसमें 5 फिल्में प्रदर्शित की गयीं। जनवरी 1992 में इतालवी फिल्मों का सप्ताह और फरवरी 1992 में पुर्तगाल और मिस्र की फिल्मों का सप्ताह भी आयोजित किया गया। इसी योजना के तहत भारतीय फिल्में प्रदर्शन के लिए स्पेन, घाना, फ्रांस, अल्जीरिया और बुर्किना फासो को भेजी गयीं। हंगरी को दस फिल्में भेजी गई। तीन सदस्यों के एक प्रतिनिधि मंडल ने भी भाग लिया। सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अलावा भी कुछ देशों में भारतीय फिल्मों के सप्ताह मनाये गये। इस तरह के सप्ताह स्विट्जरलैंड और मंगोलिया में आयोजित किये गये।

6.10.5. स्विट्जरलैंड की 8 फीचर फिल्मों और तीन वृत्त चित्रों का विशेष समारोह नई दिल्ली, कलकत्ता, मद्रास, बंगलौर और बम्बई में आयोजित किया गया। इन फिल्मों के साथ दो सदस्यों का प्रतिनिधि मंडल भी भारत पहुंचा था। हालैंड में एमस्टरडम में भारतीय फिल्मों का एक समारोह आयोजित किया गया जिसमें 25 फिल्में दिखायी गयीं।

6.10.6. 1991 में भारत ने 50 से अधिक अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण समारोह इस प्रकार हैं

1. एशिया-पैसिफिक फिल्म शो,
2. कोरिया गणराज्य फिल्म समारोह,
3. जापान में फुकुओ अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में एशियाई फिल्म का विशेष खंड, और
4. हांगकांग में एशियाई मानव अधिकार फिल्म समारोह।

6.10.7. निदेशालय ने कान फिल्म समारोह, मास्को फिल्म समारोह, फुकुओ का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह (एशियाई खंड), लोकार्नो फिल्म समारोह, मैनहीम फिल्म समारोह और वेनिस फिल्म समारोह में हिस्सा लिया। शाजी की 'पिरावी' को 9 वें फेजर फिल्म

समारोह में सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार मिला। सुकुमारन नायर की 'अपराह्नम' को मैनहीम फिल्म समारोह में इंटर ज्यूरी पुरस्कार प्राप्त हुआ। विक्टर बनर्जी की 'वेयर नो जर्नी एंड' को ह्यूस्टन फिल्म समारोह में वर्ल्डफेस्ट स्वर्ण पुरस्कार मिला। केतन मेहता की 'मिर्च मसाला' को पेरिस में हिस्टोरिक फिल्म्स/रुइल मालमेसन में पुरस्कार प्राप्त हुआ। इस वर्ष विदेशों के विभिन्न फिल्म समारोहों में भारतीय फिल्मों को पुनरावलोकन वर्ग में प्रदर्शित किया गया। जापान में फुकुओका में अरविन्दन की फिल्मों को पुनरावलोकन वर्ग में दिखाया गया। इसी तरह बुद्धदेव दास गुप्ता की फिल्मों को पेरिस और पुर्तगाल में तथा ऋत्विक घटक की फिल्मों को स्विट्जरलैंड के फिल्म समारोहों में पुनरावलोकन वर्ग में प्रदर्शित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह

6.10.8. 23 वां अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह बंगलौर में 10 जनवरी से 20 जनवरी, 1992 तक आयोजित किया गया। पूर्व वर्ष के समान इस वर्ष भी प्रतियोगिता खंड आयोजित नहीं किया गया। फिल्म समारोह के मुख्य खंड ये थे :

1. विश्व सिनेमा (मुख्य अंतर्राष्ट्रीय खंड)
2. विदेशी फिल्मों का पुनरावलोकन
3. विशेष देश/क्षेत्र का सिनेमा
4. 1991 में भारतीय सिनेमा की झांकी
5. भारतीय फिल्मों का पुनरावलोकन
6. आम भारतीय सिनेमा
7. कन्नड़ सिनेमा का पुनरावलोकन।

समारोह के दौरान भारत सहित करीब 35 देशों की 170 फिल्में प्रदर्शित की गयीं। समारोह में लगभग 2,500 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया जिनमें से करीब 50-60 विदेशों से आये थे। विदेशी प्रतिनिधियों में लगभग 20 फिल्म निर्माता तथा कलाकार और बंगलौर में विदेशी दूतावासों के 10 प्रतिनिधि शामिल थे। समारोह के दौरान विभिन्न सिनेमाघरों/थियेटरों में फिल्मों के 500 शो आयोजित किये गये। समारोह में फ्रांसिस्को रोसी (इटली)की फिल्मों का पुनरावलोकन, 'कैहीअर्स दू सिनेमा' (फ्रांस) के 40 साल, ' स्वीडन के सिनेमा में महिलाएं ' और एंन व्हील (कनाडा) की फिल्मों पर विशेष खंड भी आयोजित किये गये। भारतीय फिल्मों के पुनरावलोकन खंड में बलराज साहनी, जी. अरविन्दन और कर्नाटक की एक मशहूर फिल्मी हस्ती बी. आर. पनफुलु की पांच-पांच फिल्में दिखायी गयीं।

भारतीय फिल्मों का झांकी खंड

6.10.9. अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'भारतीय सिनेमा की झांकी' खंड 1978 में शुरू किया गया था। तब से हर साल इस खंड के लिए फिल्मों का चयन किया जा रहा है। इस साल, इस खंड में शामिल करने के लिए देश भर से कुल 98 फिल्मों पर विचार किया गया। शुरू में कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में तीन चयन समितियां बनायी गयीं जिन्होंने केन्द्रीय निर्णायक समिति को फिल्मों के नामों की सिफारिश की। केन्द्रीय निर्णायक समिति की अध्यक्षता श्री बिमल डे ने की। इस समिति ने अंततः 1991 का राष्ट्रीय पुरस्कार जीतने वाली सर्वश्रेष्ठ फिल्म सहित 21 फिल्मों की सिफारिश की। ये फिल्में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह 1992 में प्रदर्शित की गयीं।

6.10.10. गैर-फीचर फिल्म वर्ग में पांच जानेमाने व्यक्तियों की चयन समिति ने दिल्ली में 66 फिल्मों पर विचार किया। इस चयन समिति की अध्यक्षता श्री बुद्धदेव दास गुप्ता ने की। समिति ने 1991 की सर्वश्रेष्ठ गैर-फीचर फिल्म सहित 16 फिल्मों का चयन किया।

भारत-अमरीका सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

6.10.11. शिक्षा और संस्कृति पर भारत-अमरीका उप-आयोग की शर्तों के अनुसार सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत अमरीका के तीन फिल्मकारों का मार्च 1992 के पहले सप्ताह में भारत यात्रा का कार्यक्रम है। इस प्रतिनिधि मंडल में एक फीचर फिल्म निर्माता, एक लघु फिल्म निर्माता और एक निर्माता अमरीका के मूल निवासियों में से होने की संभावना है। यह प्रतिनिधि मंडल अपने साथ 5-6 फिल्में भी लाएगा। जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे, फिल्म तथा टैक्नोलाजी संस्थान, मद्रास में यह प्रतिनिधि मंडल कार्यशालाएं आयोजित करेगा। बम्बई में फिल्म उद्योग से जुड़े कुछ लोगों के साथ भी प्रतिनिधि मंडल के विचार-विमर्श का कार्यक्रम है।

भारत की बाल चित्र समिति

6.11.1. बाल चित्र समिति का गठन सोसाइटीज पंजीकरण अधिनियम, 1860 के अंतर्गत मई 1955 में किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य बाल फिल्मों के निर्माण, वितरण और प्रदर्शन की व्यवस्था करके भारत में बाल फिल्म आंदोलन को बढ़ावा देना है। समिति हर दो वर्ष बाद देश के किसी प्रमुख नगर में प्रतियोगी अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह आयोजित करती है।

6.11.2. बाल चित्र समिति का मुख्यालय बम्बई में है। इसके बिक्री और वितरण अनुभाग भी यहीं है। नई दिल्ली, कलकत्ता और मद्रास में समिति के आंचलिक कार्यालय है। जानी-मानी फिल्मी हस्ती श्रीमती जया बच्चन बाल चित्र समिति की वर्तमान अध्यक्षा है।

6.11.3. चालू वित्त वर्ष में समिति के लिए 1 करोड़ 50 लाख रुपये की व्यवस्था की गयी है। इस धनराशि का उपयोग जिन कार्यों में किया जाएगा वे इस प्रकार है : (1) बाल फिल्मों का निर्माण और खरीद, (2) निर्माण संबंधी सुविधाओं का आधुनिकीकरण और इनमें सुधार, (3) अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन और बाल फिल्म परिसर का निर्माण।

6.11.4. 1991-92 में बाल चित्र समिति ने निम्नलिखित फिल्म समारोहों में हिस्सा लिया :

1. जर्मनी में फ्रैंकफर्ट में इंटरनेशनल किंडर फिल्म फेस्टीवल,
2. शिकागो में अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह,
3. इस्फहान में बच्चों और किशोरों का अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह,
4. स्पेन में बिल्बोआ अंतर्राष्ट्रीय वृत्तचित्र और लघु फिल्म समारोह,
5. भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह, 1992 में भारतीय सिनेमा की झांकी खंड, और
6. बम्बई में वृत्तचित्रों और लघु फिल्मों का अंतर्राष्ट्रीय समारोह।

6.11.5. बाल चित्र समिति का 1991-92 का सबसे महत्वपूर्ण कार्य सातवें अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म समारोह का आयोजन था। यह समारोह नवम्बर, 1991 में तिरुअनंतपुरम केरल सरकार के सहयोग से आयोजित किया गया। प्रतियोगिता और सूचना खंडों में देश-विदेश की 86 फिल्मों ने हिस्सा लिया। इसके अलावा विशेष खंड के अंतर्गत (1) ईरान की बाल फिल्मों, (2) पुरानी पुरस्कृत फिल्मों, (3) विश्वप्रसिद्ध परी-कथाओं पर राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की फिल्मों, और (4) स्वर्गीय जी. अरविन्दन को श्रद्धांजलि के रूप में उनकी फिल्मों का प्रदर्शन किया गया।

6.11.6. प्रतियोगिता खंड में अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल, सी.आई.एफ.ई.जे. के निर्णायक मंडल और बच्चों के निर्णायक मंडल ने फिल्मों पर अलग-अलग विचार किया। अंतर्राष्ट्रीय निर्णायक मंडल का सर्वश्रेष्ठ फीचर फिल्म का पुरस्कार-स्वर्ण गज-आस्ट्रिया की फिल्म 'होलिडेज विद सिल्वेस्टर' को दिया गया। सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार फिनलैंड की 'द स्टर एंड द हेन हेव ए सौना' ने जीता। सी आई.एफ.ई.जे. का सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार भारत की 'अभयम' को प्राप्त हुआ। बच्चों के निर्णायक मंडल ने 'होलिडेज विद सिल्वेस्टर' को सबसे ज्यादा लोकप्रिय बाल फिल्म के 'स्वर्ण पट्टिका' पुरस्कार के लिए चुना। देश के विभिन्न भागों से करीब 200 बाल प्रतिनिधियों ने समारोह में हिस्सा लिया। 23 विदेशी प्रतिनिधियों सहित कुल 61 वयस्क प्रतिनिधि भी समारोह में शामिल हुए।

भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार

6.12.1. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का उद्देश्य फिल्मों के क्षेत्र में देश की अमूल्य धरोहर की रक्षा करना, दुनिया की सर्वश्रेष्ठ फिल्मों का प्रतिनिधि संकलन तैयार करना और देश में फिल्म संबंधी जागरूकता बढ़ाना है।

6.12.2. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का मुख्यालय पुणे में है। बंगलौर, कलकत्ता और त्रिवेन्द्रम में इसके क्षेत्रीय कार्यालय हैं। अभिलेखागार के संग्रह में 12,000 से अधिक फिल्में हैं। ये हमारी राष्ट्रीय फिल्म धरोहर का करीब पांचवां हिस्सा है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के पास फिल्मों से संबंधित विषयों पर देश-विदेश के जानेमाने प्रकाशकों की लगभग 20 हजार पुस्तकें हैं। इसके अलावा अभिलेखागार फिल्मों से संबंधित पत्र-पत्रिकाएं भी मंगाता है।

6.12.3. इस वर्ष अभिलेखागार ने अपने नवनिर्मित परिसर में काम करना शुरू कर दिया है। नये भवन से इसे अपने कामकाज को बेहतर तरीके से पूरा करने में मदद मिलेगी। नये परिसर में एक वातानुकूलित फिल्म संग्रह कक्ष है, जिसमें फिल्मों की 60 हजार रीलें रखी जा सकती हैं। इसके वातानुकूलित सभागार में 330 दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। इसके अलावा अभिलेखागार के पूर्वावलोकन थियेटर में 30 व्यक्तियों के बैठने का इंतजाम है। 1991 में जनवरी से दिसम्बर तक भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार के संग्रहालय में 368 और फिल्में शामिल की गयीं। इनमें से 103 नयी फिल्में थीं और 164 के प्रिंटों की प्रतिलिपि प्राप्त की गयी। 101 फिल्में लम्बे समय के लिए अभिलेखागार में जमा करायी गयीं। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार द्वारा हाल में प्राप्त फिल्मों का विवरण इस प्रकार है :

मद	31.12.90 को संख्या	जनवरी से दिसंबर 1991 तक प्राप्त	31.12.91 को संख्या
फिल्म	12,202	368	12,570
वीडियो कैसेट	532	164	696
पुस्तकें	19,746	507	20,253
पत्रिकाएं	173	21	192
पांडुलिपि	20,835	240	21,075
पैम्फलेट/फोल्डर	7,038	95	7,133
समाचार कतरने	1,07,648	10,625	1,18,273
स्थिर चित्र	85,976	8,845	94,821
स्लाइड	2,820	—	2,820
इश्तिहार	5,915	69	5,984
गीत पुस्तिकाएं	5,708	143	5,851
डिस्क रिकार्ड	1,822	—	1,822
आडियो टेप	115	35	150
माइक्रो फिश	42	—	42
माइक्रो फिल्म	1,957	—	1,957

6.12.4. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार अपनी वितरण लाइब्रेरी के जरिये विभिन्न फिल्म क्लबों, फिल्म सोसाइटियों, फिल्म समीक्षकों, सांस्कृतिक संगठनों और शैक्षिक संस्थाओं को महत्वपूर्ण फिल्में देता है। इस समय अभिलेखागार में 110 सोसाइटी पंजीकृत हैं और ये चुनी हुई भारतीय तथा विदेशी फिल्में देखने की सुविधा का लाभ उठा रही हैं। वितरण लाइब्रेरी प्रणाली के जरिए करीब 200 फिल्में उपलब्ध करायी जाती हैं। इसके अलावा आठ केन्द्रों-बंगलौर, कलकत्ता, बंबई, भोपाल, हैदराबाद, विजयवाड़ा, पांडिचेरी और पुथुकोलियाल में हर महीने 30 फिल्में साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक आधार पर दिखायी जाती हैं।

6.12.5. फिल्मों के वितरण के अलावा विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षिक संस्थाओं की मदद से फिल्मों का विशेष प्रदर्शन भी किया गया। तमिल सिनेमा की प्लेटीनम जयंती के अवसर पर मद्रास में तमिल फिल्मों का पुनरावलोकन आयोजित किया गया। इस अवसर पर अभिलेखागार ने 17 तमिल फिल्में और 4 विदेशी फिल्में उपलब्ध करायीं। इसी तरह पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा आयोजित विशेष फिल्म समारोह के लिए भी 10 फिल्में उपलब्ध करायी गयीं। जिन अन्य पुनरावलोकन कार्यक्रमों के लिए अभिलेखागार ने फिल्में उपलब्ध करायीं, उनमें जाने

माने मराठी अभिनेता राजा परांजपे पर आयोजित पुनरावलोकन, सोवियत सांस्कृतिक केन्द्र बम्बई द्वारा मूक सोवियत फिल्मों का पुनरावलोकन, राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा बम्बई में आयोजित अरविंदन और राय की फिल्मों का पुनरावलोकन, महाराष्ट्र सूचना केन्द्र द्वारा नयी दिल्ली में आयोजित मराठी अभिनेत्री ललिता पवार की फिल्मों का पुनरावलोकन और मैक्समूलर भवन, हैदराबाद द्वारा आयोजित बिमल राय की फिल्मों का पुनरावलोकन शामिल है।

6.12.6. भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार हर साल फिल्मों के मूल्यांकन के लिये एक परिचयात्मक पाठ्यक्रम/कार्यशाला आयोजित करता है। इसके अंतर्गत इस वर्ष मई-जून, 1991 में देश के हर राज्य से विभिन्न क्षेत्रों के 70 उम्मीदवारों ने हिस्सा लिया। इसका आयोजन भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार और फिल्म तथा टेलीविजन प्रशिक्षण संस्थान, पुणे ने मिलकर किया। इसमें जिन मशहूर फिल्मी हस्तियों ने हिस्सा लिया उनमें अमोल पालेकर, कुमार साहनी, जाहनू बरूआ, ए.के. बीर, मणि कौल और जब्बार पटेल शामिल हैं। अभिलेखागार ने विभिन्न स्थानों पर फिल्मों के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए अल्प अवधि के पाठ्यक्रम भी चलाए। राष्ट्रीय डिजायन संस्थान, हैदराबाद, जामिया मिलिया, नई दिल्ली, आशय फिल्म क्लब, पुणे में इस तरह के पाठ्यक्रम चलाए गए और 141 फिल्में वहां भेजी गयीं। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार ने मैक्समूलर भवन, हैदराबाद द्वारा आयोजित 'ग्रामीण भारत की झलक' नाम की एक संगोष्ठी में भी हिस्सा लिया।

6.12.7. भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार एफ.आई.ए.पी.एफ का सदस्य होने के कारण फिल्मों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में हिस्सा लेता है। इसके अंतर्गत बरमिंघम फिल्म समारोह के लिए ऋत्विक घटक की 4 फिल्में भेजी गयीं।

6.12.8. भारत-फ्रांस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत फ्रांस के राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार (पेरिस) के फिल्म सुधार विभाग के प्रमुख श्री जान मिशेल जीनॉट ने दिसम्बर 1991 में भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार का दौरा किया। उनके प्रवास के दौरान फिल्मों को सुरक्षित रखने और पुरानी फिल्मों में सुधार के बारे में एक कार्यशाला आयोजित की गयी। इसमें अभिलेखागार और फिल्म प्रभाग बम्बई के तकनीकी कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

6.12.9. इस वर्ष जिन महत्वपूर्ण अनुसंधान परियोजनाओं को मंजूरी दी गयी उनमें 'भारत में बाल फिल्म आंदोलन का इतिहास' शामिल है। जानेमाने मराठी फिल्म निर्देशक राजा परांजपे पर एक शोध पत्र इस वर्ष पूरा कर लिया गया। छह अनुसंधान परियोजनाओं को मंजूरी देने के अलावा कुछ अन्य पर विचार किया जा रहा है। भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार फिल्मों की जानी-मानी हस्तियों के जीवन-वृत्त तैयार करने में मदद कर रहा है। यह अभिलेखागार की बहुमूल्य निधि होगी।

भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान

6.13.1. भारतीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान आम आदमी को फिल्म निर्माण की कला और तकनीक के बारे में प्रशिक्षण देता है। इसके अलावा संस्थान दूरदर्शन के अधिकारियों और कर्मचारियों को टेलीविजन के बारे में सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करता है। यह संस्थान अक्तूबर 1974 में सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम 1860 के अंतर्गत सोसाइटी के रूप में पंजीकृत किया गया। सोसाइटी में फिल्म, टेलीविजन, संचार और संस्कृति के क्षेत्र की जानीमानी हस्तियां, संस्थान के भूतपूर्व विद्यार्थी और मानद सदस्य शामिल हैं।

6.13.2. संस्थान के दो खंड हैं– फिल्म और टेलीविजन। फिल्म खंड सिनेमा पर डिप्लोमा पाठ्यक्रम आयोजित करता है। इस पाठ्यक्रम में (1) फिल्म-निर्देशन, (2) सिनेमेटोग्राफी, (3) ध्वन्यांकन और ध्वनि इंजीनियरी, और (4) फिल्म सम्पादन में विशेषज्ञता की व्यवस्था है। पहले तीन पाठ्यक्रम तीन साल के और चौथा दो साल की अवधि का है।

6.13.3. टेलीविजन खंड दूरदर्शन के हर वर्ग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। बुनियादी पाठ्यक्रम के अलावा विशेष क्षेत्रों में अल्पावधि पाठ्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। संस्थान एशिया प्रशांत प्रसारण विकास संस्थान, कुआलालम्पुर के सहयोग से विशेष पाठ्यक्रम और कार्यशालाएं भी आयोजित करता है। यह सेंटर 'इटरनेशनल द लायजन डेस इकोलेस द सिनेमा इट द टेलीविजन' का भी सदस्य है। संस्थान के अध्यापक और विद्यार्थी इस संस्था के कार्यक्रमों में नियमित रूप से हिस्सा लेते हैं। फिल्म खंड में 97 प्रशिक्षणार्थी हैं जिनमें से 9 विदेशी हैं।

6.13.4. संस्थान अपने डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के प्रशिक्षणार्थियों की फिल्मों को विभिन्न राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में भेजता है। इस साल संस्थान ने जर्मनी में ओबरहाउसन में 37 वें अंतर्राष्ट्रीय लघु फिल्म समारोह, 38 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह और बरमिंघम में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म और टेलीविजन समारोह में हिस्सा लिया। संस्थान के छात्रों द्वारा बनायी गयी 'आमुख' फिल्म को 38 वें राष्ट्रीय फिल्म समारोह में सर्वश्रेष्ठ लघु कथा फिल्म का पुरस्कार मिला।

6.13.5. संस्थान ने इस वर्ष 'टेलीविजन कार्यक्रमों का निर्माण और तकनीकी संचालन' के बारे में दूरदर्शन के कर्मचारियों के लिए 34 वां और 35 वां बुनियादी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसके अलावा भारतीय सूचना सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए टेलीविजन कार्यक्रमों की प्रारंभिक जानकारी देने वाला एक अल्पकालीन पाठ्यक्रम भी संचालित किया।

राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम

6.14.1. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम की स्थापना 11 अप्रैल, 1980 को फिल्म वित्त निगम और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम का विलय करके की गयी थी। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम का उद्देश्य भारत में सिनेमा के स्तर में सुधार करना और इसकी पहुंच बढ़ाना था।

निगम अच्छी फिल्मों के निर्माण, आयात-निर्यात और वितरण में सुधार लाकर फिल्म और फिल्म संस्कृति को बढ़ावा देता है। इसके अलावा यह कच्ची फिल्मों के वितरण, नयी टेक्नोलाजी के उपयोग और विकास, वीडियो कैसेटों की बिक्री तथा सिनेमाघरों के निर्माण के लिए पैसा उपलब्ध कराने का भी कार्य करता है। देश में फिल्म आंदोलन के सही विकास के लिए निगम फिल्मों से संबंधित कई कार्य करता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम कम बजट की फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देता है। आज हमारे देश में फिल्म बनाने में आने वाली आर्थिक समस्याओं का एक हल यह हो सकता है कि कम बजट की मगर ऊंचे स्तर की फिल्में बनायी जाएं।

6.14.2. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अन्य देशों के साथ सहयोग भी करता है। इस कार्यक्रम के तहत 'गांधी' और 'सलाम बॉम्बे' जैसी सफल फिल्में बनायी जा चुकी है। निगम ने फ्रांस की सार्वजनिक क्षेत्र की एक कम्पनी के सहयोग से सात कड़ियों वाला एक टेलीविजन धारावाहिक भी तैयार किया है।

6.14.3. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और दूरदर्शन द्वारा राष्ट्रीय और क्षेत्रीय नेटवर्क पर प्रसारण के लिए अच्छी फीचर फिल्में और टेलीफिल्में मिलकर तैयार की जा रही है। ये फिल्में भारत तथा विदेशों में व्यावसायिक और गैर-व्यावसायिक प्रदर्शन के लिए भी उपयोग में लायी जाएंगी। 30 नवम्बर 1991 तक इस कार्यक्रम के अंतर्गत 21 फिल्मों को मंजूरी दी जा चुकी थी और आठ बनकर तैयार हो चुकी थीं।

6.14.4. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम जाने-माने निर्देशकों के निर्देशन में अच्छी पटकथाओं पर आधारित फिल्में बनवाता है। 1980-81 में शुरू किये गये इस कार्यक्रम के अंतर्गत 25 फिल्में मंजूर की जा चुकी है, 24 का निर्माण पूरा हो चुका है और एक का निर्माण कार्य चल रहा है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम द्वारा बनाई गयी एक संदेशात्मक फिल्म 'प्यार की गंगा' है।

6.14.5. देश में सिनेमाघरों में दर्शकों के लिए सीटों की संख्या बढ़ाने और अच्छी फिल्मों के प्रदर्शन की व्यवस्था करने के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने सिनेमाघरों के निर्माण में आर्थिक सहयोग देने की योजना तैयार की और इस पर अमल शुरू किया। इस योजना के तहत बनाये गए 92 सिनेमाघरों में 31 अक्तूबर, 1991 तक फिल्मों का प्रदर्शन शुरू हो गया था।

6.14.6. राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम इस समय हर साल 35 से 45 फिल्में आयात करता है। अपने गठन के बाद निगम ने 460 फिल्मों का आयात किया है। निगम का यह प्रयास रहा है कि भारतीय दर्शकों को विभिन्न देशों की तरह-तरह की फिल्में देखने का मौका मिले। निगम के सीमित साधनों को देखते हुए पारिवारिक मनोरंजन के लिए उच्च कोटि की व्यावसायिक फिल्में अधिक मंगाने की कोशिश की जाती है।

6.14.7 भारत दुनियां के 100 से अधिक देशों को फिल्मों का निर्यात करता है। 1991-92 में 30 नवम्बर, 1991 तक भारतीय फिल्म विकास निगम का निर्यात लक्ष्य 163.50 लाख रुपये तक पहुंच गया था। निगम ने नये देशों को फिल्में निर्यात करने में सफलता प्राप्त करने के साथ-साथ देश के कई उदीयमान निर्देशकों, अभिनेता, अभिनेत्रियों और तकनीशियनों आदि को अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सिनेमा के बारे में जानने के अवसर उपलब्ध कराये हैं। भारत दुनियां में सबसे अधिक फिल्में बनाने वाला देश है। यहां हर साल 800 से अधिक फीचर फिल्में और 3,000 लघु फिल्में बनायी जाती है। भारतीय फिल्म उद्योग के लिए आवश्यक सामान की आपूर्ति राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के माध्यम से की जाती है।

6.14.8 देश के प्रमुख नगरों में विभिन्न फिल्मों की झांकी प्रस्तुत करने वाले समारोह आयोजित करने का कार्यक्रम 1985-86 में शुरू किया गया था। यह अब भी काफी लोकप्रिय है। झांकी समारोहों के अलावा राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम बड़ी संख्या में पुनरावलोकन समारोह तथा मिनी फिल्म समारोह आदि भी आयोजित करता है। इनमें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के निर्देशकों की फिल्में प्रदर्शित की जाती हैं।

6.14.9 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने अपने वितरकों के माध्यम से उत्कृष्ट फिल्मों के वीडियो कैसेटों की कानून सम्मत तरीके से बिक्री का कार्य हाथ में लिया है। नवम्बर, 1991 के अंत तक 230 फिल्मों के वीडियो कैसेट जारी किये जा चुके थे। भारत में अच्छे सिनेमा की समझ बढ़ाने और देश में अच्छे सिनेमा को बढ़ावा देने के लिये राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम भारत तथा विदेशों की कलात्मक फिल्मों के वीडियो कैसेटों की बिक्री करता है। राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम भारत में वीडियो बाजार की क्षमता और केबल टेलीविजन जैसे तकनीकी विकास का लगातार विश्लेषण कर रहा है। इस नये क्षेत्र की क्षमताओं के उपयोग और मूल्यांकन के लिये निगम ने अपने द्वारा जारी विदेशी फिल्मों को केबल टेलीविजन पर प्रदर्शित करने का अधिकार मैसर्स रैड कैट वीडियो आर्गनाइजेशन नाम की कम्पनी को सौंपा है।

6.14.10 वीडियो फिल्मों के अनधिकृत प्रदर्शन को रोकने के लिए राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने भारतीय फिल्म उद्योग के सहयोग से वीडियो चोरी रोकने वाली एक संस्था गठित की। इंडियन फेडरेशन अगेन्स्ट कापीराइट थैफ्ट (इनफैक्ट) नाम की इस संस्था को कम्पनी अधिनियम के तहत कम्पनी के रूप में पंजीकृत किया गया।

6.14.11 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम ने भारतीय राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार पुणे और नेहरू सेंटर, बम्बई के सहयोग से बम्बई में राष्ट्रीय फिल्म मंडल गठित किया है। कोई भी व्यक्ति निर्धारित शुल्क देकर इसका सदस्य बन सकता है। ये सदस्य निगम द्वारा संकलित अच्छी फिल्में, झांकी खंड की फिल्में और उत्कृष्ट विदेशी फिल्में देख सकते हैं।

6.14.12 राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के कलकत्ता के फिल्म केन्द्र में फिल्म के निर्माण तथा निर्माण के बाद के कार्यों के लिये बुनियादी

सुविधायें उपलब्ध हैं। इन सुविधाओं में 16 मिलीमीटर कैमरा, छायांकन और ध्वन्यांकन का काम साथ-साथ करने वाले टेप रिकार्डर, सम्पादन टेबल, और पुनर्ध्वनि मुद्रण के उपकरण शामिल हैं। इन्हें उचित दर पर किराये पर लिया जा सकता है। फिल्म केन्द्र में 16 मिलीमीटर और 35 मिलीमीटर की फिल्मों के लिए इलेक्ट्रानिक माइक्रो प्रोसेसर द्वारा नियंत्रित नवीनतम प्रोजेक्टर लगा है।

6.14.13 बम्बई स्थित सब टाइटलिंग केन्द्र अपने आप में पूर्ण इकाई है। यहां सभी तकनीकी सुविधायें एक ही स्थान पर उपलब्ध हैं। इस केन्द्र में 16 मिलीमीटर फिल्मों और वीडियो फिल्मों को सब टाइटल देने की सुविधा भी उपलब्ध है। अब तक इस इकाई ने 1000 से अधिक फिल्मों को सब टाइटल दिये है और इस तरह 3 करोड़ 20 लाख रुपये के बराबर विदेशी मुद्रा बचाने में मदद की है। इस केन्द्र ने बंगलादेश, श्रीलंका और ईरान की कई एजेंसियों के लिए सब टाइटलिंग का काम भी हाथ में लिया है।

6.14.14 मद्रास में राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम के वीडियो केन्द्र में 35 मिलीमीटर और 16 मिलीमीटर आकार की फिल्मों को अन्य आकार में बदलने की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा 3/4" की यू मैट्रिक प्रणाली की फिल्मों के सम्पादन तथा 3/4" की फिल्मों के 1/2" के कैसेटों में बदलने की सुविधा भी यहां उपलब्ध है।

6.14.15 विकास संबंधी अपनी गतिविधियों के अंतर्गत राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम 'सिनेमा इन इंडिया' नाम की विश्लेषणात्मक व्यापारिक पत्रिका निकालता है। पत्रिका को अधिक उपयोगी तथा आर्थिक दृष्टि से ज्यादा फायदेमंद बनाने के लिए नये स्वरूप में ढाला गया।

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड

6.15.1 भारत में फिल्मों को सार्वजनिक प्रदर्शन की अनुमति देने के लिए सरकार ने सिनेमेटोग्राफ अधिनियम, 1952 के अंतर्गत केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड गठित किया। इसका मुख्यालय बम्बई में है। बोर्ड में अध्यक्ष के अलावा 25 सदस्य भी होते है। बोर्ड के आठ क्षेत्रीय कार्यालय हैं जो बंगलौर, बम्बई, कलकत्ता, कटक, दिल्ली, हैदराबाद, मद्रास और तिरुअनंतपुरम् में है। कटक के क्षेत्रीय कार्यालय ने इसी वर्ष कार्य शुरू किया है। केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड और इसकी सलाहकार समिति का इस वर्ष पुनर्गठन किया गया। इसमें कुल मिलाकर 35 प्रतिशत प्रतिनिधित्व महिलाओं को दिया गया। 1991 में जिन 910 फिल्मों को प्रमाणपत्र दिये गये उनमें से 617 (यानि 67.8 प्रतिशत) को दक्षिण क्षेत्र के क्षेत्रीय केन्द्रों- बंगलौर, हैदराबाद, मद्रास और तिरुअनंतपुरम् आदि ने प्रमाणित किया।

6.15.2 910 भारतीय फीचर फिल्मों में से 615 (67.6 प्रतिशत) को 'यू' प्रमाणपत्र, 94 (10.3 प्रतिशत) को 'यू–ए' प्रमाणपत्र और 201 (22.1 प्रतिशत) को 'ए' प्रमाणपत्र प्रदान किये गये। जहां तक विदेशी फीचर फिल्मों का सवाल है कुल 124 फिल्मों को प्रमाणपत्र दिये गये। इनमें से 40 (32.3 प्रतिशत) को 'ए' प्रमाणपत्र दिये गये।

6.15.3 बोर्ड ने कुल 1,112 भारतीय लघु फिल्मों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। इनमें से 1,088 को 'यू' प्रमाणपत्र, 7 को 'यू-ए' प्रमाणपत्र और 17 को 'ए' प्रमाणपत्र दिये गये। बोर्ड ने 211 विदेशी लघु फिल्मों को भी प्रमाण पत्र दिये। इनमें से 187 को 'यू', 23 को 'ए' और एक को 'एस' प्रमाणपत्र दिया गया। बोर्ड ने 1991 में 105 फिल्मों को 'शिक्षा प्रधान' फिल्मों के रूप में वर्गीकृत किया।

6.15.4 बोर्ड द्वारा प्रमाणित 1,403 वीडियो फिल्मों में से 1,373 को 'यू' प्रमाण पत्र, 8 को 'यू–ए' प्रमाणपत्र और 17 को 'एस' प्रमाण पत्र दिये गये।

6.15.5 इस साल कुल 37 फिल्मों को प्रमाणपत्र देने से इनकार कर दिया गया। इनमें से 22 भारतीय फीचर फिल्में, 14 विदेशी फीचर फिल्में और एक भारतीय लम्बी वीडियो फिल्म शामिल है। इनमें से कुछ फिल्मों को संशोधित रूप में या फिल्म प्रमाणपत्र अपील ट्राइब्यूनल के आदेश के बाद प्रमाणपत्र दिये गये। केन्द्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड ने भारतीय और विदेशी दोनों तरह की सेल्यूलाइड फिल्मों को प्रमाणपत्र जारी करने से पहले इनमें से 16,791 मीटर लम्बे ऐसे अंशों को हटाया जिन्हें दिशा निर्देशों का उल्लंघन माना गया था।

अध्याय – 7

पत्र सूचना कार्यालय

7.1.1 पत्र सूचना कार्यालय लोगों को भारत सरकार की नीतियों, कार्यक्रमों और गतिविधियों की सूचना देने वाली प्रमुख एजेंसी है। यह सरकार और समाचार माध्यमों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान का अधिकृत जरिया माना जाता है। पत्र सूचना कार्यालय इस सिद्धान्त पर कार्य करता है कि लोकतंत्र में सरकार को अपनी नीतियों, कार्यक्रमों और गतिविधियों को ठीक ढंग से समझा कर पेश करना चाहिए।

7.1.2 पत्र सूचना कार्यालय द्वारा जुटाई जाने वाली सूचनाएं देशी और विदेशी दोनों तरह के समाचार पत्रों, पत्रिकाओं तथा रेडियो और टेलीविजन संगठनों को उपलब्ध कराई जाती हैं। इस तरह की सूचनाएं पत्र सूचना कार्यालय के क्षेत्रीय शाखा कार्यालयों के जरिये देश के विभिन्न भागों में समाचार पत्रों को भी उपलब्ध कराई जाती हैं। इस समय राज्यों की राजधानियों और देश के प्रमुख शहरों में इसके जो 37 क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय काम कर रहे हैं उनका विवरण परिशिष्ट IV में दिया गया है। इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय ने 10,552 समाचार पत्रों के उपयोग के लिए 18 भाषाओं में 33,851 विज्ञप्तियां जारी कीं।

7.1.3 पत्र सूचना कार्यालय पत्रकारों को सुविधा देने के लिए मान्यता भी प्रदान करता है। केन्द्रीय प्रैस मान्यता समिति की सिफारिश पर भारत तथा विदेशों के समाचार माध्यमों का प्रतिनिधित्व करने वाले पत्रकारों को मान्यता प्रमाणपत्र दिए जाते हैं। इस समय 1,242 पत्रकारों को पत्र सूचना कार्यालय द्वारा मान्यता मिली हुई है।

7.1.4 दिल्ली स्थित पत्र सूचना कार्यालय मुख्यालय के विभागीय प्रचार अधिकारी भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों से संबद्ध हैं। वे संबंधित विभाग के कार्यक्रम, नीतियों और गतिविधियों के बारे में सूचना एकत्र करते हैं तथा इसे समाचार पत्रों तथा इलैक्ट्रानिक समाचार माध्यमों को भेजते रहते हैं। वे अपने अपने मंत्रालय की सूचना और प्रचार नीति भी निर्धारित करते हैं।

वर्ष की प्रमुख उपलब्धियां

7.2.1 इस वर्ष पत्र सूचना कार्यालय ने असम, कश्मीर और पंजाब की स्थिति से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदमों के बारे में प्रचार की व्यवस्था की। आम चुनाव संबंधी सूचनाओं के प्रचार-प्रसार की भी व्यापक व्यवस्था की गयी। चुनाव परिणामों के कम्प्यूटर से विश्लेषण की विशेष व्यवस्था की गयी जिसे चुनाव के तुरंत बाद प्रेस को जारी किया गया।

7.2.2 नयी औद्योगिक नीति और नयी व्यापार नीति का भी व्यापक प्रचार किया गया। व्यापार और उद्योग के क्षेत्र में नियमों को उदार बनाने के लिए सरकार द्वारा उठाए गये विभिन्न कदमों का भी प्रचार किया गया। वित्तीय संस्थाओं के पुनर्गठन से सम्बधित नरसिंहम कमेटी की रिपोर्ट और कर संबंधी सुधारों के लिए राजा चेलैया समिति की रिपोर्ट को भी प्रचारित किया गया।

7.2.3 इस वर्ष देश के कई जिलों में पूर्ण साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त कर लिया गया। इसके प्रचार के लिए प्रेस दलों को इन जिलों के दौरे पर ले जाया गया ताकि वे इस उपलब्धि का मूल्यांकन कर सकें।

7.2.4 देश के सामने आए अभूतपूर्व आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए साहसिक कदमों का भी पत्र सूचना कार्यालय ने प्रचार किया। भुगतान असंतुलन, विदेशी मुद्रा भंडारों में कमी और देश से पूंजी के विदेशों को प्रवाह के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने साख गिरने का संकट पैदा हो गया था। द्विपक्षीय सूत्रों से शीघ्रता से ऋण प्राप्त करने के सरकार के प्रयासों को भी विशेष रूप से प्रचारित किया गया। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक और एशियाई विकास बैंक जैसी बहुपक्षीय एजेंसियों के साथ सरकार की सफल बातचीत का प्रचार किया गया। 1991-92 के बजट में सरकार द्वारा घोषित वित्तीय नीतियों का व्यापक प्रचार किया गया। विदेशी मुद्रा भेजने वालों को कुछ नियमों से छूट देने की योजना, भारत विकास बांड योजना और राष्ट्रीय आवास बैंक (स्वैच्छिक जमा) योजना का भी पत्र सूचना कार्यालय ने प्रचार किया।

7.2.5 1991-92 का केन्द्रीय बजट प्रस्तुत किये जाने के तुरंत बाद

पत्र सूचना कार्यालय ने आर्थिक विषयों के समाचार पत्रों के सम्पादकों का सम्मेलन आयोजित किया। इसमें आर्थिक विषयों के पत्रकारों को देश की वित्तीय स्थिति और अन्य महत्वपूर्ण आर्थिक क्षेत्रों के बारे में विशेष कागजात उपलब्ध कराये गये।

पत्रकार सम्मेलन

7.3 पत्र सूचना कार्यालय पत्रकारों और नीति निर्माताओं के बीच सीधी बातचीत के लिए मंत्रियों तथा वरिष्ठ अधिकारियों की प्रैस कान्फ्रैंस आयोजित करता है। दिसम्बर 1991 तक इसने 765 प्रैस कान्फ्रैंस आयोजित कीं।

फीडबैक सेवा

7.4 पत्र सूचना कार्यालय समाचार पत्रों में सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों पर प्रतिक्रियाओं के बारे में फीडबैक उपलब्ध कराता है। सभी केन्द्रीय मंत्रियों, मंत्रालयों/विभागों तथा क्षेत्रीय और शाखा कार्यालयों को समाचारपत्रों में छपी महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं, सम्पादकीय टिप्पणियों और समाचारों की कतरनें भेजी जाती है। इसके अलावा प्रतिक्रियाओं, सम्पादकीय टिप्पणियों और समाचारों का सार संक्षेप भी तैयार कर उन्हें भेजा जाता है। 1991 में अंग्रेजी समाचार पत्रों की करीब 12,37,800 और हिन्दी की 1,20,000 कतरनें भेजी गयीं। इसके अलावा समाचारों और अखबारों में व्यक्त विचारों का दैनिक सार संक्षेप तथा महत्वपूर्ण विषयों पर विशेष सार संक्षेप भी तैयार कर भेजे गये।

आदान-प्रदान कार्यक्रम

7.5 पत्र सूचना कार्यालय ने भारत अमरीका संयुक्त मीडिया समिति के तत्वावधान में कई कार्यक्रम आयोजित किये। दिल्ली और बम्बई में फिल्म और टेलीविजन समीक्षकों के लिए दो-दो दिन की दो विचार गोष्ठियां और विज्ञान लेखन के बारे में इन्हीं दो नगरों में एक-एक दिन की कार्यशालाएं हुईं। इसके अलावा कलकत्ता में समाचार पत्र की पृष्ठ सज्जा और डिजाइन के बारे में कार्यशाला भी आयोजित की गयी। पत्र सूचना कार्यालय द्वारा आयोजित महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में पत्रकारिता शिक्षण के बारे में दो दिन का वह सम्मेलन भी शामिल था, जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पत्रकारिता विभाग के अध्यक्षों, अमरीका से पत्रकारिता शिक्षण के पांच विशेषज्ञों तथा भारत के वरिष्ठ पत्रकारों और सम्पादकों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन में पत्रकारिता शिक्षण के स्तर में सुधार की आवश्यकता और इसके उपायों के बारे में मुख्य रूप से चर्चा हुई।

फीचर सेवा

7.6 पत्र सूचना कार्यालय के मुख्यालय से हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू में फीचर लेख और फोटो फीचर जारी किये गये। इसी तरह के फीचर लेख क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों ने क्षेत्रीय भाषाओं में जारी किये। स्थानीय महत्व के विषयों पर भी क्षेत्रीय/शाखा कार्यालयों ने फीचर जारी किये। पत्र सूचना कार्यालय ने इस वर्ष 1,600 से अधिक फीचर लेख जारी किये।

फोटो सेवा

7.7 पत्र सूचना कार्यालय ने विभिन्न सरकारी समारोहों, परियोजनाओं और विकास संबंधी गतिविधियों के बारे में रंगीन और सादे फोटो समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को निःशुल्क उपलब्ध कराये। क्षेत्रीय समाचार पत्रों को जल्द से जल्द फोटो उपलब्ध कराने के लिए पत्र सूचना कार्यालय के पास नई दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में टेलीफोटो ट्रांसमीटर और रिसीवर हैं। 1991 में इसने देश के समाचार पत्रों को करीब 2,38,170 फोटो प्रिन्ट और 3,890 एबोनाइड ब्लाक दिए। इसके अलावा उर्दू समाचार पत्रों को 75,900 चरबे भी जारी किये।

आधुनिकीकरण

7.8 पत्र सूचना कार्यालय विभिन्न कार्यों में कम्प्यूटर के उपयोग के कार्यक्रम पर योजनाबद्ध ढंग से अमल कर रहा है। इस कार्यक्रम के तहत समाचार की दृष्टि से महत्वपूर्ण दस्तावेजों के प्रेषण की प्रक्रिया को तेज करने पर ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है ताकि ये अपने गंतव्य स्थानों तक कम से कम समय में पहुंच जाएं। कम्प्यूटरों के उपयोग के कार्यक्रम के दो चरण है। पहले चरण का उद्देश्य पत्र सूचना कार्यालय राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र द्वारा दिये गये उपग्रह चैनल की मदद से अपने आठ क्षेत्रीय कार्यालयों के बीच सम्पर्क स्थापित करना है। दूसरे चरण में देश भर में पत्र सूचना कार्यालय के शाखा कार्यालयों को कम्प्यूटर प्रणाली के जरिये जोड़ दिया जायेगा।

अध्याय – 8

भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक

8.1.1 भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक का कार्यालय सूचना और प्रसारण मंत्रालय से संबद्ध कार्यालय है। यह समाचार पत्रों के पंजीकरण के लिये उनके नामों की जांच करता है और उनकी उपलब्धता पर नियंत्रण रखता है। यह समाचार पत्रों की प्रसार संख्या की जांच करता है और 'प्रेस इन इंडिया' नाम से वार्षिक रिपोर्ट भी प्रकाशित करता है। समाचार पत्रों के पंजीयक का कार्यालय समाचार पत्रों/पत्रिकाओं को सरकार की नीति के अनुसार अखबारी कागज का कोटा आबंटित करता है और समाचार पत्रों के लिए मुद्रण संबंधी मशीनों तथा अन्य उपकरणों की आवश्यकता के बारे में प्रमाण-पत्र देता है।

8.1.2 वर्ष 1991 में अप्रैल से दिसंबर तक समाचार पत्रों के पंजीयक ने समाचार पत्रों/पत्रिकाओं के 9,349 नामों को स्वीकृत किया जबकि पूरे 1991-92 के लिए 9,000 नामों का लक्ष्य रखा गया था। नामों के पंजीकरण में तेजी लाने के लिये जांच के कार्य में कम्प्यूटरों की मदद ली जा रही है।

8.1.3 इसी अवधि के दौरान 1,252 समाचार पत्रों को पंजीकरण प्रमाण पत्र दिये गये। इस वर्ष के पूरा होने तक 400 प्रमाण पत्र और दिये जाने की संभावना है।

8.1.4 दिसम्बर 1991 तक समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय ने 773 समाचार पत्रों के प्रसार संख्या संबंधी दावों की जांच पूरी कर ली थी जबकि पूरे वर्ष के दौरान 900 मामलों को निपटाने का लक्ष्य था।

8.1.5 समाचार पत्रों/पत्रिकाओं से 1990 के कलेन्डर वर्ष के लिए प्राप्त आंकड़ों के अनुसार 'प्रेस इन इंडिया- 1991 ' नाम की वार्षिक रिपोर्ट तैयार की गयी। इसके अनुसार समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय में पंजीकृत समाचार पत्रों की नवीनतम संख्या 28,491 हो गयी है।

अखबारी कागज

8.2.1 1991-92 के लिए अखबारी कागज के आबंटन की नीति की घोषणा 4 अक्तूबर 1991 को की गयी। नयी नीति में छोटे और मझोले समाचार पत्रों के लिए कई रियायतें बरकरार रखी गयी हैं तथा बिना बिक्री की प्रतियों, खराब कागज के लिये मुआवजा और प्रसार संख्या के दावे आदि के बारे में नियमों में परिवर्तन भी नहीं किया गया है। इसमें समाचार पत्रों को एक साल तक नियमित रूप से अपने बूते पर प्रकाशित होने तथा ये समाचार पत्र पंजीयक के कार्यालय में पंजीकृत है तो इस अवधि के लिये अखबारी कागज का कोटा देने की व्यवस्था है। नयी नीति में किसी समाचार पत्र के लिए पंजीयक-कार्यालय द्वारा पिछले वर्ष के लिए निर्धारित अखबारी कागज की मात्रा से अधिक लिखने के और छपाई के काम आने वाले कागज के उपयोग के आधार पर अतिरिक्त अखबारी कागज आबंटित करने की नीति को छोड़ दिया गया है। इस तरह समाचार पत्रों को लिखने के और छपाई के कागज के इस्तेमाल की छूट दे दी गयी है।

8.2.2 देश में बने अखबारी कागज इस्तेमाल करने वाले समाचार पत्रों को 1 अप्रैल 1991 से यह छूट दे दी गयी है कि वे निर्धारित मात्रा में कागज देश के किसी भी अखबारी कागज कारखाने से इकट्ठा या हिस्सों में ले सकते है।

8.2.3 24 जुलाई 1991 को संसद में प्रस्तुत भारत सरकार के आम बजट के अनुसार मानक अखबारी कागज के आयात पर लगने वाला सीमा शुल्क हटा लिया गया है।

8.2.4 जुलाई 1991 में रुपये के अवमूल्यन और बैंक स्वीकृति सुविधा योजना के विस्तार के तहत समाचार पत्र उद्योग को अखबारी कागज के आयात के लिए 60.63 करोड़ रुपये जमा कराने पड़ते है। सरकार और समाचार पत्र उद्योग के बीच विस्तृत बातचीत के बाद अब समाचार पत्रों को सिर्फ 29.20 करोड़ रुपये जमा कराने होंगे।

8.2.5 दिसम्बर 1991 तक समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय ने समाचार पत्रों को 1.97 लाख मीट्रिक टन स्वदेशी अखबारी कागज, 1.12 लाख मीट्रिक टन मानक अखबारी कागज और 0.17 लाख मीट्रिक टन ग्लेज्ड अखबारी कागज का आबंटन कर दिया था। इसमें 18,000 मीट्रिक टन वह अखबारी कागज भी शामिल है जो समाचार पत्रों के पंजीयक के कार्यालय द्वारा 791 समाचार पत्रों को चुनाव कोटा के रूप में आबंटित किया गया था।

मुद्रण मशीनें

8.3 1991 में अप्रैल से दिसम्बर तक समाचार पत्र प्रतिष्ठानों द्वारा 7.84 करोड़ रुपये मूल्य की छपाई की मशीनें और इससे सम्बन्धित उपकरणों के आयात की इजाजत दी गयी।

सूचना और प्रसारण उपमंत्री डा. गिरिजा व्यास नई दिल्ली में फरवरी 1992 में भारेतन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार समारोह के अवसर पर। चित्र में वरिष्ठ पत्रकार श्री अक्षय कुमार जैन, सूचना और प्रसारण मंत्रालय में सचिव श्री महेश प्रसाद और प्रकाशन विभाग के निदेशक डा. श्याम सिंह शशि भी दिखाई दे रहे है

प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव "सेलेक्टेड थाट्स : राजीव गांधी" पुस्तक का विमोचन करते हुए । इस अवसर पर लोक सभा अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल, सूचना और प्रसारण मंत्री, सूचना और प्रसारण उपमंत्री और सूचना प्रसारण मंत्रालय में सचिव भी मौजूद थे ।

अध्याय 9

प्रकाशन विभाग

9.1. प्रकाशन विभाग ने जनवरी, 1991 में अपनी स्थापना के पचास वर्ष पूरे कर लिए। विभाग ने 1941 में छोटे स्तर से शुरूआत की और अब यह सार्वजनिक क्षेत्र में सबसे बड़े प्रकाशन संगठन के रूप में अपने को प्रतिष्ठित कर चुका है। यह विभाग राष्ट्रीय महत्व की पुस्तकों और पत्रिकाओं के प्रकाशन, बिक्री और वितरण कार्यों के लिए उत्तरदायी है। यह विभाग देश-विदेश में जन-साधारण को भारत के बारे में सही और अद्यतन जानकारी देता रहता है। विभाग ने अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में अब तक लगभग 6,400 पुस्तकें प्रकाशित की हैं। विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकें और पत्रिकाएं पाठकों को इतिहास, कला, संस्कृति, अर्थव्यवस्था और जीव-जंतुओं तथा वनस्पतियों आदि विभिन्न पहलुओं के माध्यम से भारत के बारे में जानकारी उपलब्ध कराती हैं।

पुस्तकें

9.2.1. विभाग 'आधुनिक भारत के निर्माता', 'हमारे देश के राज्य', 'भारत के सांस्कृतिक पुरोधा', 'हम सबकी पुस्तकमाला', 'भारतीय इतिहास के गौरव ग्रंथ', 'भारत के गौरव', 'भारत की महान् नारियां' और 'भारत के महापुरुषों के उद्धरण' जैसी अनेक श्रृंखलाओं के अंतर्गत पुस्तकों का प्रकाशन करता है। यह भारत के राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों के भाषणों तथा अन्य प्रमुख नेताओं के भाषणों और लेखों को पुस्तक रूप में प्रकाशित करता है। इस वर्ष दो नई श्रृंखलाएं शुरू की गई- 'भारतीय मनीषा' और 'भारत के महापुरुषों के उद्धरण'। पहली श्रृंखला में हमारे प्राचीन मनीषियों जैसे, वराहमिहिर, आर्यभट्ट, पाणिनि, गार्गी और अन्य मेधावी व्यक्तियों तथा दूसरी श्रृंखला में भारत के महान पुरुषों की वाणियों का संकलन प्रकाशित किया जा रहा है।

9.2.2. विभाग की एक प्रमुख पुस्तक योजना है सम्पूर्ण गांधी वाङ्मय का हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशन। अंग्रेजी में 90 खंड तथा हिन्दी में 81 खंड प्रकाशित किए जा चुके हैं। हिन्दी और अंग्रेजी में पांच पूरक खंडों को प्रकाशित करने का कार्य और हिन्दी में 81 वें खंड के बाद के अन्य खंडों का प्रकाशन-कार्य चल रहा है। इस वर्ष अंग्रेजी में पूरक खंड -II और हिन्दी में 82 वां खंड प्रकाशित हुआ। आशा है कि मार्च, 1992 तक अंग्रेजी में पूरक श्रृंखलाओं के खंड III और हिन्दी में मुख्य श्रृंखला में 83 वें खंड को प्रकाशित कर लिया जाएगा। वर्ष के अंत तक अंग्रेजी में 'इंडेक्स आफ पर्सन्स' का खंड भी प्रकाशित हो जाने की आशा है।

9.2.3. 'आधुनिक भारत के निर्माता' ग्रंथमाला के अंतर्गत विभाग उन विख्यात भारतीयों की जीवनियां प्रकाशित करता है जिन्होंने हमारे देश के निर्माण में प्रमुख योगदान दिया। आलोच्य वर्ष के दौरान इस ग्रंथमाला के अंतर्गत जिन पुस्तकों का प्रकाशन किया गया, उनमें हिन्दी में आचार्य नरेन्द्र देव, गोपीनाथ बारदोलाई और ज्योति प्रसाद अग्रवाल तथा अंग्रेजी में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक पर पुस्तकें शामिल हैं।

9.2.4. 'भारत की महान् नारियां' श्रृंखला के अंतर्गत इस वर्ष सरोजिनी नायडू पर पुस्तक प्रकाशित हुई।

9.2.5. 'भारत के महापुरुषों के उद्धरण' श्रृंखला के अंतर्गत अंग्रेजी में भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी पर तथा अंग्रेजी और हिन्दी में डा. बी आर. आम्बेडकर पर पुस्तकें प्रकाशित की गईं। मौलाना अबुल कलाम आजाद और लाला लाजपत राय के उद्धरण प्रकाशनाधीन हैं।

9.2.6. विभाग बच्चों के लिए भी अच्छे साहित्य का प्रकाशन करता है। हिन्दी में इस वर्ष प्रकाशित पुस्तकें थीं– 'देश-विदेश के चिड़ियाघर', 'भारत के प्राचीन स्मारक' और 'तेलुगु की लोककथाएं' (भाग- 2)। तीन और पुस्तकें 'आसमान की सैर', 'बाल बोध कथाएं' और 'विदेशी यात्रियों की नजर में भारत' प्रकाशनाधीन हैं।

9.2.7. आलोच्य वर्ष के दौरान जो अन्य पुस्तकें प्रकाशित हुईं उनमें श्री श्री आर. वेंकटरामन के भाषण (उपराष्ट्रपति के रूप में), राजीव गांधी के भाषण : चुने हुए भाषणों तथा लेखों के संग्रह का खंड -5 और दो डीलक्स खंड (खंड -1 और 5), अंग्रेजी में 'द बेसिस ऑफ इंडियन कांस्टीट्यूशन – इट्स सर्च फॉर सोशल जस्टिस' (पटेल स्मारक भाषण माला) तथा हिन्दी में 'स्वतंत्रता संग्राम के पच्चीस वर्ष'

(खंड -I) तथा 'स्वर्णभूमि की लोककथाएं' शामिल है। चार पंजाबी पुस्तकें 'गाउंदा पंजाब-मेले ते त्योहार', 'हरा समंदर', 'उत्तों पै गई रात', भाग 1 और 'जंगल में मोर नाचा' प्रकाशित हो चुकी है। 'भारत दे गुरुदारे' नामक पंजाबी में एक अन्य पुस्तक प्रकाशनाधीन हैं। इसके अतिरिक्त आर. वेंकटरामन (राष्ट्रपति के रूप में) के भाषणों पर पुस्तकें, इंडिया -91', 'अवर नेशनल फ्लैग' तथा 'निवेदिताज़ न्यू होम एन्ड अदर स्टोरीज़' अंग्रेजी में एवं हिन्दी में 'आदि शंकराचार्य' प्रकाशित हो चुकी हैं। अंग्रेजी में 'राजीव गांधी : सलेक्टेड स्पीचेज एंड राइटिंग्स'(खंड II, III, IV) के डीलक्स संस्करण, राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के भाषण (खंड II)' मास मीडिया इन इंडिया 1991 तथा हिन्दी में 'भारत- 1991' में मार्च 1992 तक प्रकाशित हो जाने की संभावना है। कुल मिलाकर अंग्रेजी में 30, हिन्दी में 40 और अन्य भारतीय भाषाओं में 54 (पुनर्मुद्रण मिलाकर) पुस्तकें प्रकाशित हुईं।

पत्रिकाएं

9.3.1. विभाग अंग्रेजी, हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में विभिन्न अवधि वाली बीस पत्रिकाएं प्रकाशित करता है जिनमें सामाजिक, आर्थिक, विकासात्मक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों पर विशेष जोर दिया जाता है।

आयाजना तथा विकास के बारे में 'योजना' नामक पत्रिका 12 भाषाओं में प्रकाशित की जाती है। अंग्रेजी, हिन्दी, पंजाबी, उर्दू, तेलुगु, मराठी, कन्नड़, गुजराती, तमिल, बंगला, मलयालम और असमिया में इन पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है; अंग्रेजी, हिन्दी, तमिल और तेलुगु में यह पत्रिका पाक्षिक है जबकि बाकी भाषाओं में यह मासिक है। इस वर्ष विभिन्न अंकों में सामयिक महत्व के विषय जैसे जनगणना -91, नई औद्योगिक नीति, बाल श्रमिक, अवमूल्यन, ऋणनीति, ग्रामीण बैंकिंग, पूंजी बाजार तथा ऊर्जा के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया गया। दो अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिया गया जिनमें साक्षरता अभियान तथा महिलाओं की समस्याएं शामिल है। स्वतंत्रता दिवस विशेषांक का मुख्य विषय औद्योगिक विकास रहा। विख्यात विद्वानों और विशिष्ट अर्थशास्त्रियों ने औद्योगिक विकास के विभिन्न पहलुओं पर लेख प्रस्तुत किए। गणतंत्र विशेषांक में सभी के लिए स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर लेख प्रकाशित किए जा रहे हैं।

9.3.2. मासिक पत्रिका 'कुरुक्षेत्र' अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशित की जाती है और इसमें ग्रामीण विकास के विभिन्न कार्यक्रमों पर सूचना दी जाती है। यह कृषि विकास और ग्रामीण पुनर्निर्माण के विशाल कार्य के समक्ष उत्पन्न समस्याओं पर उन्मुक्त और स्पष्ट विचार-विमर्श का एक मंच प्रदान करता है। यह पत्रिका कृषि मंत्रालय के ग्रामीण विकास विभाग की ओर से प्रकाशित की जाती है। इस वर्ष इसमें बाल-विवाह की कुरीति पर कई अंक प्रकाशित किए गए क्योंकि 1991 से 2000 के दशक को दक्षेस बालिका दशक के रूप मे मनाया जा रहा है। इस अंक में सामाजिक वानिकी, 1991-92 का केन्द्रीय बजट, ग्रामीण बैंक, सहकारी समितियां, पर्यावरण तथा विकास में ग्रामीण महिलाओं की भूमिका जैसे विषयों को प्रकाशित किया गया।

9.3.3. हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित होने वाली साहित्यिक मासिक पत्रिका 'आजकल' साहित्य, संस्कृति और कला के क्षेत्र में होने वाले कार्य-कलापों को प्रस्तुत करती है। इस वर्ष हिन्दी संस्करण में कहानियों का एक विशेषांक निकाला गया। अन्य अंकों में स्वर्गीय डा. हजारी प्रसाद द्विवेदी की पुण्यतिथि के अवसर पर इस महान लेखक को श्रद्धांजलि के रूप में उनके अंतिम उपन्यास पर विशेष लेख प्रकाशित किया गया। प्रख्यात साहित्यकार स्वर्गीय डा. प्रभाकर माचवे, शेरे-पंजाब लाला लाजपत राय, उपन्यासकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री, जनजातीय कवि भीमा भोई और प्रख्यात शिल्पकार रामकिंकर बैज पर विशेष लेख प्रकाशित किए गए। तेलुगु साहित्य, समसामयिक मलयालम नाटक कन्नड़ कविता, बाल साहित्य तथा हिन्दी को प्रोत्साहन के बारे में भी लेख प्रकाशित किए गए। जून 91 के अंत में भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी को विशेष श्रद्धांजलि अर्पित की गई। उर्दू संस्करण में मुंशी प्रेमचंद, मौलाना आजाद, मिर्जा गालिब और कई अन्य साहित्यकारों की जयंती तथा पुण्यतिथि के अवसर पर विशेष लेख प्रकाशित किए गए। 1991 के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता प्रो. विनायक कृष्ण गोकाक और साहित्य के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित नादिम गोडिमर के बारे में भी लेख प्रकाशित किए गए। विभिन्न भाषाओं के लेखकों के लेख और अन्य भाषाओं की अनूदित कहानियों तथा कविताओं और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं से अनूदित कहानियों तथा **कविताओं को भी, सांस्कृतिक संश्लेषण को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से** व्यापक रूप से प्रकाशित किया गया।

9.3.4 'बालभारती' बच्चों की मासिक हिन्दी पत्रिका है। इसमें बच्चों के व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए कहानियां, कवितायें तथा विशेष लेख प्रकाशित किए जाते है। सामाजिक कुरीतियों, खेल-कूद, सिनेमा, तथा स्वतंत्रता दिवस के डाक-टिकटों पर विशेष लेख प्रकाशित किए गए। इसकी कार्टून श्रृंखलाएं काफी लोकप्रिय है। लगभग प्रत्येक अंक में भारत तथा विश्व के महापुरुषों तथा नारियों के जीवन पर प्रेरक लेख प्रकाशित किए जाते है। मार्च, 1992 की तिमाही के दौरान विश्व कप क्रिकेट टूर्नामेंट पर एक विशेषांक प्रकाशित करने का प्रस्ताव है।

9.3.5. अंग्रेजी में प्रकाशित 'एम्प्लायमेंट न्यूज' तथा हिन्दी में प्रकाशित होने वाला 'रोजगार समाचार' सबसे अधिक प्रसार संख्या वाले साप्ताहिक पत्र हैं। इस वर्ष भी यह बेरोजगार लोगों के लाभ के लिए केन्द्र और राज्य सरकार के विभागों तथा प्रतिष्ठानों और प्रमुख निजी संगठनों में नौकरियों के रिक्त स्थानों के बारे में जानकारी देता रहा। इसने अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के उम्मीदवारों के लिए सरकार के विशेष भर्ती अभियान में भरोसेमंद प्रसार माध्यम की भूमिका निभाई। इसमें ऐसी मार्गदर्शक सामग्री प्रकाशित की जाती है जो विभिन्न परीक्षाओं/साक्षात्कारों में शामिल होने वाले उम्मीदवारों की आवश्यकताओं के उपयुक्त होती है। इसका कालम 'विशेष विषय श्रृंखला' जो कि केन्द्रीय सिविल सेवा परीक्षा, चिकित्सा सेवा परीक्षा से प्रत्यक्ष रूप से संबद्ध है, दिनोंदिन लोकप्रिय होता जा रहा है। इसके विभिन्न अंकों में 'घटनाओं की डायरी','टैस्ट योअर नॉलेज', इम्प्रूव योअर इंग्लिश', 'डू यू नो' तथा सामयिक राष्ट्रीय घटनाओं पर आधारित कार्यक्रम 'इंडिया दिस वीक' तथा अंतर्राष्ट्रीय सामयिक घटनाओं पर

प्रकाशन विभाग की उपलब्धियां
(एक नजर में)

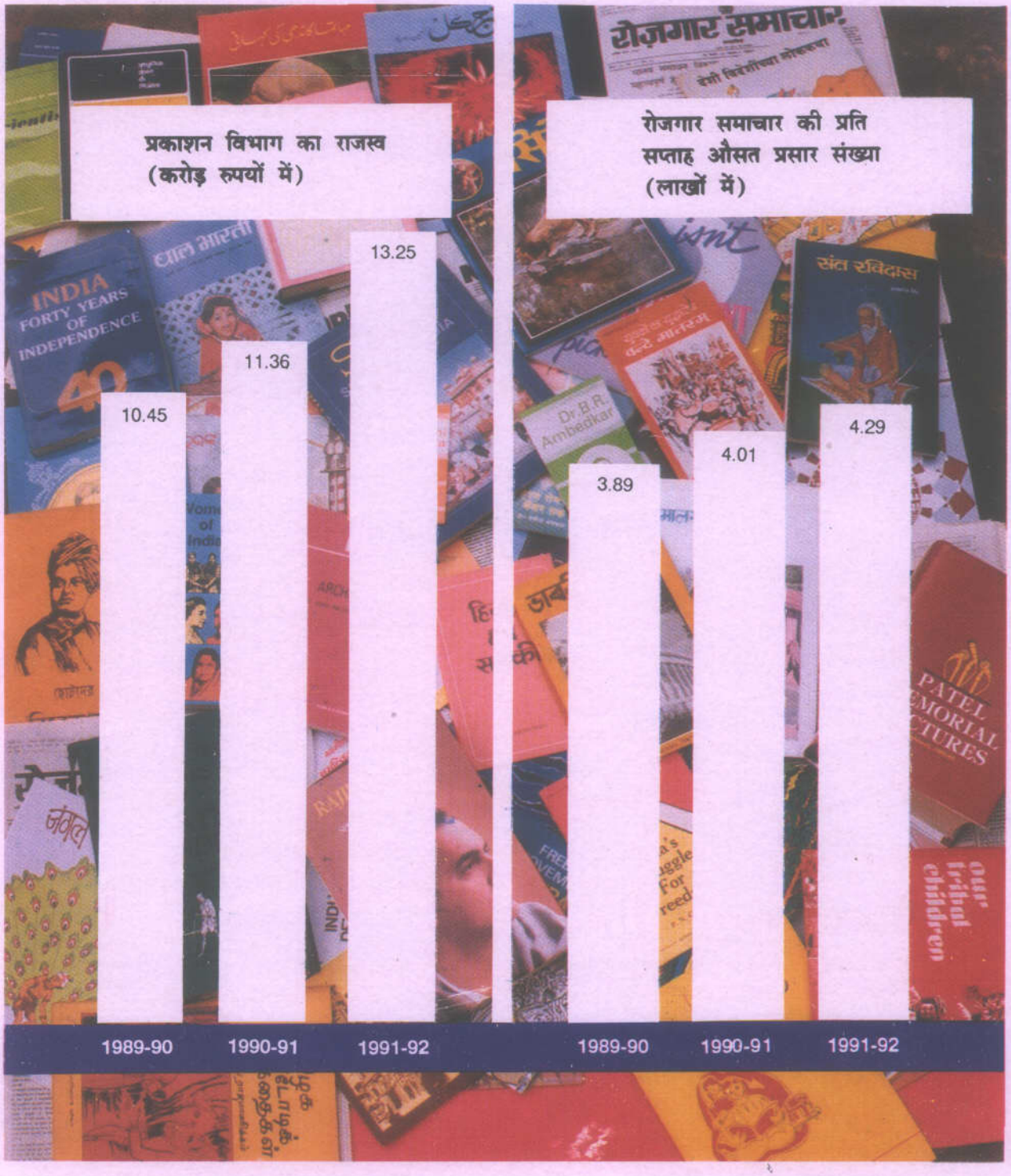

आधारित 'वर्ल्ड दिस वीक' का प्रकाशन शुरू किया गया। इसके अलावा हिन्दी भाषा लेखन का एक नया कार्यक्रम 'अपनी हिन्दी सुधारें' शुरू किया गया है।

9.3.6. यह साप्ताहिक टेबलायड आकार में प्रकाशित सबसे अच्छा साप्ताहिक माना जाता है। 1990-91 में 4.02 लाख प्रतियों की तुलना में 1991-92 में 4.25 लाख प्रतियां प्रकाशित किए जाने की संभावना है। आशा है कि यह साप्ताहिक अपने कुल राजस्व में बहुत तेजी से वृद्धि करेगा। 1990-91 में इसका कुल राजस्व 710.45 लाख रुपये था, इस वर्ष के दौरान वह बढ़कर 839 लाख रुपये हो जाने की संभावना है।

विभागीय पत्रिका

9.4. विभाग के कार्यकलापों तथा उपलब्धियों के बारे में अपने पाठकों को सूचित करने वाला त्रैमासिक न्यूजलैटर– 'पब्लिकेशन्स समाचार' दिनोंदिन लोकप्रिय होता जा रहा है।

विपणन

9.5.1. विभाग के नई दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, पटना, लखनऊ, तिरुअनंतपुरम तथा हैदराबाद स्थित विपणन केन्द्रों के अलावा देश और विदेश में लगभग 3,600 पुस्तक विक्रेता भी इसके प्रकाशनों की बिक्री करते हैं। अपने प्रकाशनों के अलावा विभाग अपने बिक्री केन्द्रों से 20 सरकारी तथा अर्द्ध सरकारी संगठनों द्वारा पुस्तकों की बिक्री करता है। इस योजना के अंतर्गत हिस्सा लेने वाले संगठन हैं– नेशनल बुक ट्रस्ट, राष्ट्रीय शैक्षणिक तथा अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, साहित्य अकादमी, संगीत नाटक अकादमी और आई.सी.सी.आर. आदि। आलोच्य वर्ष के दौरान विभाग के प्रकाशनों की थोक बिक्री के लिए राज्य सरकार/स्वायत्त सेवी संस्थाओं का सहयोग, विशेषकर 'ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड स्कीम' के अंतर्गत लेने के प्रयास किए गए।

पुस्तक प्रदर्शनी

9.5.2. विभाग ने बिक्री संवर्द्धन कार्यकलापों के अंतर्गत भारत में 57 बड़ी पुस्तक प्रदर्शनियों/मेलों में भाग लिया और जनवरी-मार्च, 1992 के दौरान 12 और प्रदर्शनियों में हिस्सा लेने का कार्यक्रम है। इसके अलावा विशेष अवसरों पर कई लघु पुस्तक प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। ये पुस्तक प्रदर्शनियां प्रायः दिल्ली में और समीपवर्ती स्थानों में सचल प्रदर्शनी एकक के जरिए आयोजित की गईं। विभाग ने नेशनल बुक ट्रस्ट की सहायता से बीजिंग, शंघाई, मलयेशिया, सिंगापुर, मास्को और फ्रैंकफर्ट में प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया और मार्च, 1992 को समाप्त होने वाली तिमाही में दो और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों में हिस्सा लेने का कार्यक्रम है।

अन्य गतिविधियां

9.5.3. मुंशी प्रेमचंद की 111 वीं जयंती के अवसर पर आयोजित समारोहों के अन्तर्गत 31 जुलाई 1991 को विभाग के परिसर में प्रकाशन विभाग तथा अखिल भारतीय स्वतंत्र पत्रकार लेखक संघ ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम आयोजित किया। इस अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। मुंशी प्रेमचंद के साहित्य पर विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान के लिए तीन प्रसिद्ध लेखकों को सम्मानित किया गया।

राजस्व

9.6. प्रकाशन विभाग ने अप्रैल-दिसम्बर, 1991 के दौरान 7.53 करोड़ रुपये का राजस्व कमाया और मार्च, 1992 को समाप्त होने वाली तिमाही के दौरान 5.72 करोड़ रुपये का राजस्व अर्जित करने की सम्भावना है।

सलाहकार समिति

9.7. साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डा. बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य की अध्यक्षता में सात सदस्यों की एक सलाहकार समिति बनाई गई है जो प्रकाशन के लिए विषयों तथा शीर्षकों और उनके चयन, लेखकों तथा अनुवादकों के चयन के मामले में सलाह देती है। इस समिति में सार्वजनिक क्षेत्रों के प्रख्यात व्यक्ति, साहित्यकार और शिक्षाशास्त्री शामिल है।

9.8. वर्ष 1990 के भारतेन्दु हरिश्चंद पुरस्कार, सूचना और प्रसारण उपमंत्री डा. गिरिजा व्यास द्वारा 13 फरवरी 1992 को प्रदान किए गए। 25,000 रुपये का पहला पुरस्कार श्री जयप्रकाश भारती को, 15,000 रुपये का दूसरा पुरस्कार श्री मनोज कुमार पटेरिया को तथा 10,000 रुपये का तीसरा पुरस्कार श्री केशव चंद्र वर्मा को दिया गया। पांच मान पुरस्कार भी दिए गए।

अध्याय – 10

क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय

10.1.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय क्षेत्रोन्मुख माध्यम होने के नाते अपनी स्थापना के समय से ही समाज के सभी स्तरों के लोगों को शामिल करते हुए राष्ट्रीय विकास के महत् कार्य में केन्द्रीय भूमिका का निर्वाह कर रहा है। निदेशालय सरकार द्वारा समाज के विभिन्न वर्गों, विशेषकर पिछड़े और दलित वर्गों के कल्याण के लिये तैयार की गई योजनाओं और गतिविधियों की जानकारी उन तक पहुंचाते हुए विकास योजनाओं में उन्हें भागीदार बनाता है, ताकि उनका दृष्टिकोण विकास के अनुकूल बनाया जा सके।

10.1.2 निदेशालय की क्षेत्रीय इकाइयां पर्याप्त मानवीय और भौतिक संसाधनों से युक्त हैं, जिनकी सहायता से वे घर-घर जाकर विभिन्न क्षेत्रों के लोगों की स्थानीय भाषा बोली में सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों को स्पष्ट करती है। क्षेत्र प्रचार इकाइयां लोगों के साथ सम्पर्क के दौरान फिल्म, गीत और नाटक मंडलियों द्वारा सजीव प्रस्तुतियां, भाषण और विशेष कार्यक्रमों जैसे परिचर्चा, सार्वजनिक सभायें, संगोष्ठियां, परिसंवाद और विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से सामाजिक एवं राष्ट्रीय महत्व के विषयों के बारे में जागरूकता लाने का प्रयास करती हैं। फिल्मों का चयन क्षेत्रीय स्थितियों के अनुरूप प्रचार की अपेक्षाओं को ध्यान में रखकर किया जाता है। निदेशालय द्वारा गांव-गांव से सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों व उनके कार्यान्वियन के बारे में लोगों की प्रतिक्रियायें एकत्रित की जाती है और अपेक्षित कार्रवाई, जिसमें सुधारात्मक उपाय भी शामिल हैं, के लिये उन्हें सरकार तक पहुंचाया जाता है। इस प्रकार निदेशालय सरकार और लोगों के बीच सम्पर्क माध्यम के रूप में काम करता है।

संगठन

10.2 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय का मुख्यालय नई दिल्ली में है। देश के विभिन्न भागों में इसके 22 प्रादेशिक कार्यालय और 257 इकाइयां है (इनमें 72 सीमावर्ती और 30 परिवार कल्याण इकाइयां भी शामिल हैं)। एक प्रादेशिक कार्यालय के अन्तर्गत 8 से 18 तक इकाइयां आती हैं। कुछ बड़े राज्यों में दो प्रादेशिक कार्यालय स्थापित किये गये हैं जबकि छोटे राज्यों और संघ शासित प्रदेशों को मिलाकर एक प्रादेशिक कार्यालय के अन्तर्गत रखा गया है। प्रादेशिक **कार्यालयों और क्षेत्र प्रचार इकाइयों की सूची परिशिष्ट सात में दी गई है।**

गतिविधियां

10.3.1 प्रत्येक क्षेत्रीय प्रचार इकाई को आत्मनिर्भर बहुआयामी प्रचार तंत्र उपलब्ध कराया गया है, जिसमें वाहन, सिनेमा-उपकरण, सार्वजनिक सम्बोधन के लिए अपेक्षित उपकरण, टेप रिकार्डर, ट्रांजिस्टर आदि शामिल हैं। एक जेनरेटर भी उपलब्ध कराया गया है ताकि बिजली के अभाव वाले स्थानों पर उपयोग में लाया जा सके। प्रचार इकाइयों को अपने सम्बद्ध क्षेत्रों में महीने में 12 से 15 दिन दौरे पर रहना पड़ता है। ये इकाइयां अपने क्षेत्र में प्रचार गतिविधियां चलाते समय केन्द्र और राज्य सरकारों के संगठनों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के साथ समन्वय स्थापित करती है।

10.3.2 प्रचार इकाइयां फिल्म प्रदर्शन, गीत और नाटक कार्यक्रमों, मौखिक संचार कार्यक्रमों, विशेष प्रतियोगिताओं और स्पर्धाओं के जरिये राष्ट्रीय महत्व के विषयों जैसे लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद, राष्ट्रीय अखंडता, साम्प्रदायिक सद्भाव और परिवार कल्याण के प्रति वचनबद्धता तथा नशीली दवाओं और शराब आदि का सेवन, दहेज प्रथा, बाल विवाह आदि सामाजिक बुराइयों के प्रति लोगों में जागृति लाने के प्रयास करती है। किन्तु विशेष जोर राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव पर दिया जाता है। वर्ष के दौरान पंजाब, जम्मू और कश्मीर और असम में इन विषयों पर विशेष प्रचार अभियान चलाये गये जिनकी प्रगति की समीक्षा मंत्रालय की उच्च अधिकार प्राप्त अंतर मीडिया समन्वय समिति द्वारा साप्ताहिक आधार पर की गई। राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए निदेशालय ने मूल्यांकन-प्रतिनिधियों के लिए देश के अन्य हिस्सों

में कार्य संचालन दौरों का भी आयोजन किया। वर्ष के दौरान ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में ऐसे 13 कार्य संचालन दौरे आयोजित किये गये।

10.3.3 निदेशालय की क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने अप्रैल से सितम्बर, 1991 तक 30,712 फिल्म शो, 3,757 गीत और नाटक कार्यक्रम, 20,168 फोटो प्रदर्शनियां और 32,383 मौखिक संचार कार्यक्रमों के आयोजन के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों से सम्बद्ध तीन करोड़ लोगों तक अपने कार्यक्रम पहुंचाये। सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में एक से अधिक प्रचार माध्यमों ने मिलकर भी अभियान चलाये।

10.3.4 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय ने मंत्रालय को पाक्षिक आधार पर श्रोता प्रतिक्रिया रिपोर्ट भेजनी शुरू की है। इन रिपोर्टों से सरकार की योजनाओं और नीतियों विशेषकर उनके कार्यान्वयन और निदेशालय की उपलब्धियों के बारे में सरकार को जानकारी मिलती है।

कार्य योजना

10.3.5 प्रशासन में सुधार लाने और उसे अधिक परिणामोन्मुखी और उत्तरदायित्वपूर्ण बनाने के लिए निदेशालय ने सरकार द्वारा वर्तमान कार्य प्रणाली में संशोधन और प्रक्रियाओं को आसान बनाने के लिए जारी किये गये आदेशों तथा सामान्य नियमों का पालन किया। कुछ प्रादेशिक कार्यालयों और क्षेत्र इकाइयों के वित्तीय अधिकार बढ़ाये गये।

10.3.6 संचार नीतियों से सम्बद्ध केन्द्रीय दल द्वारा निर्धारित विषयों, जैसे, लोकतंत्र के प्रति वचनबद्धता, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, देश की एकता और अखंडता, राष्ट्र की प्रमुख उपलब्धियां, 20 सूत्री व 15 सूत्री कार्यक्रम के तहत प्रगति, कृषि में सुधार, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण तथा अन्य महत्वपूर्ण राष्ट्रीय विषयों के बारे में क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने देश के सभी भागों में अन्य माध्यमों के साथ मिलकर संगठित प्रचार अभियान चलाये। क्षेत्रीय इकाइयों ने केन्द्रीय बजट और नये आर्थिक उपायों के रचनात्मक पहलुओं के प्रचार को भी बढावा दिया।

20 सूत्री कार्यक्रम का प्रचार

10.4 लोगों, विशेषकर समाज के कमजोर वर्गों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए निदेशालय की इकाइयों ने विभिन्न संचार माध्यमों के जरिये विविध प्रकार के कार्यक्रमों के द्वारा 20 सूत्री कार्यक्रम का प्रचार किया। कार्यक्रमों को इस तरह आयोजित किया गया कि वे सम्बद्ध श्रोताओं तक उनके क्षेत्र के अनुकूल अपेक्षित संदेश पहुंचा सकें।

राष्ट्रीय एकता

10.5.1 निदेशालय द्वारा दृश्य श्रव्य माध्यमों से प्रचारित कार्यक्रमों का मुख्य विषय राष्ट्रीय एकता रहा। गडबड़ी की आशंका वाले और चुने हुए क्षेत्रों में रचनात्मक प्रचार कार्यक्रम चलाये गये। 19 से 25 नवम्बर, 1991 के बीच देश भर में 'कौमी एकता सप्ताह' मनाया गया। इस विषय को उजागर करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें फिल्म शो, गीत और नाटक के कार्यक्रम, वाद-विवाद, संगोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता और देशभक्तिपूर्ण गीत प्रतियोगितायें शामिल हैं। क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने धर्मनिरपेक्षता के प्रति देश की वचनबद्धता के बारे में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया। सद्भावना दिवस के अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये।

10.5.2 मेरठ, आगरा, मुजफ्फरनगर और देहरादून स्थित क्षेत्र प्रचार इकाइयों को हिन्दू-मुस्लिम एकता के प्रतीक नौचन्दी मेले के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विशेष रूप से तैनात किया गया। इन इकाइयों ने साम्प्रदायिक सद्भाव पर आधारित फिल्म शो, गीत और नाट्य प्रस्तुतियां, मौखिक संचार कार्यक्रम और फोटो प्रदर्शनियां आदि आयोजित कीं। इलाहाबाद इकाई ने होलागढ़ खंड के सांगीपुर गांव में 30 अप्रैल को राष्ट्रीय एकता सम्मेलन का आयोजन किया। दिल्ली इकाई ने प्रसिद्ध साम्प्रदायिक एकता वाला उत्सव 'फूल वालों की सैर' के अवसर पर फिल्म शो, अन्य कार्यक्रम आदि का आयोजन किया।

10.5.3 आंध्र प्रदेश में, नालगोंडा क्षेत्र प्रचार इकाई ने 'राष्ट्रीय एकता में युवकों की भूमिका' विषय पर हिन्दी में एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की। निजामाबाद इकाई ने गांधी जयन्ती के अवसर पर 'स्कूली छात्रों के लिए गांधीवादी विचारों का महत्व' विषय पर निबन्ध और वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। हैदराबाद क्षेत्र प्रचार इकाई ने राष्ट्रीय एकता सप्ताह के अवसर पर आयोजित विशेष सार्वजनिक सभा में कार्यक्रम पेश किये। उड़ीसा में पुरी, बारीपाड़ा, क्योंझर और कोरापुट में भगवान जगन्नाथ की प्रसिद्ध रथयात्रा उत्सव के अवसर पर 12 दिन का संयुक्त प्रचार अभियान चलाया गया जिसमें विभिन्न प्रचार इकाइयों ने भाग लिया। त्रिवेन्द्रम क्षेत्र प्रचार इकाई ने इसी जिले में पूर्वांचल पंचायत में 6 दिन का राष्ट्रीय एकता सम्मेलन आयोजित किया। प्रसिद्ध पंथाराड़ विलाक्कू महोत्सव और इसके साथ ही क्विलोन जिले में आचिरा में शुरू होने वाले मेले के अवसर पर 11 दिन का विशेष प्रचार अभियान चलाया गया।

अल्पसंख्यकों का कल्याण

10.6 निदेशालय की प्रचार इकाइयों ने 15 सूत्री कार्यक्रम, विशेषकर अल्पसंख्यकों के कल्याण से सम्बन्धित योजनाओं के बारे में सूचनाओं के प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। परिचर्चाओं के माध्यम से अल्पसंख्यकों के कल्याण से सम्बन्धित समस्याओं और संस्थागत वित्त और ऋण सुविधाओं के बारे में सामूहिक चर्चाओं में विचार विमर्श किया गया। प्रचार इकाइयों ने अल्पसंख्यक समुदायों का जीवन स्तर सुधारने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को भी दर्शाया। विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा इन समुदायों को सामाजिक न्याय और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए किये गये प्रयासों को भी क्षेत्र प्रचार कार्यक्रमों में प्रचारित किया गया।

शिक्षा

10.7.1 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइयों ने इस बात का विशेष रूप से प्रचार किया कि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का आधार है।

10.7.2 आंध्र प्रदेश में, चित्तूर जिले में प्रौढ शिक्षा के प्रचार के लिए 10 दिन का गहन अभियान चलाया गया। मेइक जिले में बहुमाध्यम प्रचार अभियान भी चलाये गये। अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर कुरनूल इकाई ने नाडीचेगी में युवा रैली का आयोजन किया। उत्तर प्रदेश में उत्तरकाशी इकाई ने 'विद्यार्थियों की शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। मुरादाबाद इकाई ने जिले के गांव बहजोई में आयोजित राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के प्रशिक्षण शिविर कार्यक्रम में सहायता प्रदान की।

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण

10.8 निदेशालय ने परिवार कल्याण के बारे में फिल्म शो, फोटो प्रदर्शनी, गीत और नाटक कार्यक्रमों, मौखिक संचार कार्यक्रमों और स्वस्थ बाल प्रतियोगिता, माताओं की प्रतियोगिता, और प्रश्नोत्तरी जैसे कार्यक्रमों के जरिये गहन प्रचार जारी रखा। चिकित्सा और स्वास्थ्य अधिकारियो द्वारा प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, युवा क्लबों और अन्य स्वयंसेदी संगठनों के समन्वय से घर-घर जाकर प्रचार अभियान भी चलाये गये। विभिन्न क्षेत्र प्रचार इकाइयों द्वारा निबंध, भाषण, चित्रकला प्रतियोगिताओं और संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। मलेरिया, दस्त और हैजा की रोकथाम के लिए सम्बद्ध क्षेत्रों में जागृति अभियान भी चलाये गये। अप्रैल में विश्व स्वास्थ्य दिवस और जुलाई में विश्व जनसंख्या दिवस के अवसरों पर सभी क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने चुने हुए क्षेत्रों में गहन प्रचार कार्यक्रम चलाये।

10.9 गांधी जयंती, डा० भीमराव आम्बेडकर शताब्दी समारोह, पंडित जवाहर लाल नेहरु, श्रीमती इंदिरा गांधी, श्री लाल बहादुर शास्त्री और डा० एस० राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर प्रचार इकाइयों द्वारा राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, धर्मनिरपेक्षता, लोकतंत्र और स्वाधीनता आंदोलन के बारे में कार्यक्रम पेश किये गये। क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों ने विश्व जनसंख्या दिवस, विश्व पोषण दिवस, विश्व पर्यावरण दिवस, सार्क बालिका दशक, रोग प्रतिरक्षण दिवस आदि जैसे अवसरों पर सक्रियता से भाग लिया।

अन्य विषय

10.10 सामाजिक आर्थिक विषयों जैसे महिलाओं की स्थिति, अस्पृश्यता निवारण, नशाबंदी, नशीली दवाओं की रोकथाम और सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका के बारे में क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की प्रचार इकाइयों ने विशेष प्रचार अभियान चलाये। कुछ इकाइयों ने महिलाओं के लिए विशेष प्रतियोगिताएं भी आयोजित कीं। इन विषयों पर संगोष्ठियां, निबन्ध प्रतियोगिताएं, भाषण प्रतियोगितायें, परिचर्चाएं और फिल्म शो भी आयोजित किये गये।

आर्थिक उपाय

10.11 नए आर्थिक उपायों और केन्द्रीय बजट के रचनात्मक पहलुओं पर प्रकाश डालने के राष्ट्रीय प्रयासों के रूप में इनका अधिकतम प्रचार करने के लिए निदेशालय की प्रचार इकाइयों ने अधिकाधिक लोगों से सम्पर्क करने के अभियान चलाये ताकि विभिन्न प्रचार कार्यक्रमों के जरिये समाज के विभिन्न वर्गों में जागृति लायी जा सके। ईंधन बचाने की आवश्यकता, खर्चों में मितव्ययिता आदि पर भी फिल्मों और मौखिक प्रचार माध्यमो के जरिये प्रकाश डाला गया। साथ ही खाद्यान्नों में आत्मनिर्भरता, नयी व्यापार और आर्थिक नीति, उपभोक्ता सरक्षण के बारे मे वर्ष भर परिचर्चाओ के जरिये विचार विमर्श किया गया।

मेलों/उत्सवों का प्रचार

10.12.1 राष्ट्रीय महत्व के विषयों के प्रचार में ऐसे स्थानों का लाभ उठाने के लिए जहां भीड़ एकत्रित होती है, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय की इकाइया मेलों और उत्सवों के दौरान कार्यक्रम अवश्य आयोजित करती है।

10.12.2 आन्ध्र प्रदेश की इकाइयों ने प्रसिद्ध गोदावरी पुष्करम और भगवान् ब्रह्मोत्सवं के अवसर पर प्रचार कार्यक्रम आयोजित किये। उत्तर प्रदेश स्थित प्रचार इकाइयों ने मेरठ के प्रसिद्ध नौचन्दी मेले के अवसर पर अभियान चलाये। जिन अन्य महत्वपूर्ण मेलों के अवसर पर क्षेत्र प्रचार इकाइयों ने कार्यक्रम आयोजित किये उनमें दुर्ग का 'मैत्री का मेला', गोपेश्वर में रूपकुंड महोत्सव, चंदौसी में गणेश चौथ मेला और नासिक में कुंभ मेला शामिल है।

प्रचार यात्राएं

10.13 लोगों में राष्ट्रीय अखंडता और एकता की भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से प्रचार प्रतिनिधियों की यात्राएं आयोजित की गईं। हर वर्ष एक क्षेत्र के जन प्रतिनिधियों को देश के अन्य हिस्सों में ले जाया जाता है। ताकि वे विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति एवं विकास को स्वयं देख सकें। इन प्रतिनिधियों में सीमावर्ती क्षेत्र, जनजातीय और पिछड़े क्षेत्रों के लोक कलाकार, शिक्षक, विद्यार्थियों और युवकों, प्रचार प्रतिनिधियों और प्रगतिशील किसानों को शामिल किया जाता है।

प्रचार बिन्दु

10.14 क्षेत्र प्रचार अधिकारियों को विभिन्न विषयों के बारे में समुचित मार्गदर्शन देने के उद्देश्य से मुख्यालय में प्रचार बिन्दु निर्धारित करके विभिन्न क्षेत्रीय इकाइयों को भेजे जाते है ताकि क्षेत्र में तैनात कर्मचारियों को राष्ट्रीय महत्व की ताजा गतिविधियों से अवगत रखा जा सके, जिससे वे नियमित प्रचार में उन विषयों को शामिल करते रहें । इस वर्ष 'नशीली दवाओं का सेवन', 'स्वास्थ्य और परिवार कल्याण', 'जनसंख्या विस्फोट' और 'आर्थिक सुधार के 1 और 2' प्रचार अभियानों पर विशेष जोर दिया गया।

निरीक्षण और मूल्यांकन

10.15 क्षेत्रीय प्रचार इकाइयों की गतिविधियों का विश्लेषण, मूल्याकन करने और उन पर निगरानी रखने के लिए निदेशालय के मुख्यालय में एक मूल्यांकन प्रकोष्ठ है। इस प्रकोष्ठ के अधिकारियों द्वारा प्रादेशिक कार्यालयों और क्षेत्र प्रचार इकाइयों की यात्रा की जाती है। इनका उद्देश्य समय-समय पर उनकी कार्यप्रणाली का मूल्यांकन और मौके पर जाकर दिशा निर्देश देना है। यह प्रकोष्ठ एक 'वार्षिक पुस्तिका' भी जारी करता है जिसमें क्षेत्रों/इकाइयों की गतिविधियों का तुलनात्मक अध्ययन होता है।

फीडबैक/प्रतिक्रियाएं

10.16 क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय संचार का द्विमार्गी माध्यम है। एक ओर इसका कार्य सरकारी नीतियों और कार्यक्रमों के बारे में आम लोगों को सूचनाएं देना है तो दूसरी ओर यह इनके बारे में लोगों द्वारा व्यक्त की गई प्रतिक्रियाओं को सम्बद्ध सरकारी विभागों तक पहुंचाता है ताकि समुचित सुधारात्मक उपाय किये जा सकें ।

विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय

11.1.1. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय भारत सरकार की नीतियों, उपलब्धियों तथा कार्यक्रमों, विशेषकर आर्थिक और सामाजिक विकास के क्षेत्रों के कार्यक्रमों का प्रचार करने के लिए एक बहु माध्यम केन्द्रीय एजेंसी है। यह एक सेवा विभाग है जो रेलवे को छोड़कर सरकार के अन्य विभागों और मंत्रालयों तथा सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिष्ठान और अनेक स्वायत्त संस्थाओं की जरूरत को पूरा करता है। यह सूचना और प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों की भी सेवा करता है।

11.1.2. सघन और व्यापक प्रचार अभियानों को चलाने के लिए देश भर में विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय के अनेक कार्यालयों का तंत्र फैला हुआ है। इसके दो क्षेत्रीय कार्यालय बंगलौर और गुवाहाटी में हैं और दो क्षेत्रीय वितरण केन्द्र कलकत्ता और मद्रास में हैं जो हिन्दी और अंग्रेजी के अलावा 11 प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में तैयार की गई इसकी प्रचार सामग्रियों का तेजी से वितरण करने में इसकी मदद करते हैं। गुवाहाटी में निदेशालय का एक प्रदर्शन किट उत्पादन केन्द्र और, 35 क्षेत्र प्रदर्शनी इकाइयां हैं। मद्रास में क्षेत्रीय प्रदर्शनी कार्यशाला मुख्यालय में प्रदर्शनी प्रभाग द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली वस्तुओं की डिजाइन तैयार करने, उनकी संरचना तथा प्रदर्शन में सहायता देता है।

11.1.3. प्रचार अभियान विभिन्न माध्यमों के जरिए किए जाते हैं, जैसे- प्रैस विज्ञापन, मुद्रित सामग्री जैसे इश्तिहार, फोल्डर, विवरण पुस्तिकाएं, होर्डिंग, कियोस्क, सिनेमा की स्लाइडों, भित्ति-चित्र, प्लास्टिक के फाइल फोल्डर और टिन के पोस्टर जैसी बाहर प्रदर्शित की जाने वाली चीजें, बसों, ट्रॉम, कारों और रेल डिब्बों पर दिखाये जाने वाले विज्ञापन, रेडियो और टेलीविजन के व्यापारिक विज्ञापन, लघु फिल्में, वीडियो क्वीकीज और प्रदर्शन की अन्य वस्तुएं शामिल है।

प्रेस विज्ञापन

11.2. अप्रैल से दिसम्बर 1991 के दौरान निदेशालय ने अपनी सूची के 3,600 से अधिक प्रकाशनों को 12,979 विज्ञापन जारी किए। इनमे से 12,411 विशिष्ट (वर्गीकृत) और 568 प्रदर्शन के विज्ञापन शामिल है। लगातार तीसरे वर्ष जुलाई 1991 से पहले 3 हजार से अधिक समाचार पत्रों को सूचीबद्ध करने का कार्य पूरा किया गया और ऐसा इलैक्ट्रानिक डाटा प्रोसेसिंग सेन्टर के इस्तेमाल के फलस्वरूप संभव हुआ। सरकार ने निदेशालय द्वारा समाचार पत्रों को जारी विज्ञापनों की दरों में 18 प्रतिशत वृद्धि करने की घोषणा की है जो अगस्त 1991 से प्रभावी होगी। डीएवीपी विज्ञापन के जिन खातों को हाथ में लेता है उनमें सौ से अधिक स्वायत्त संस्थाएं और सार्वजनिक क्षेत्र के 10 प्रतिष्ठान शामिल हैं।

प्रदर्शनी

11.3.1. अप्रैल-दिसम्बर 1991 के दौरान निदेशालय ने 1244 से अधिक प्रदर्शन दिनों के दौरान 187 प्रदर्शनियों का आयोजन किया। इन प्रदर्शनियों को 45,69,880 लोगों ने देखा। इन प्रदर्शनियों के मुख्य विषय थे– राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव, परिवार कल्याण, अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों का उत्थान तथा महिला और बाल कल्याण। प्रदर्शनियों के शीर्षक थे– 'एक राष्ट्र एक प्राण', 'इंडिया टुडे', 'डा. बी. आर. आम्बेडकर', 'शिशु बालिका' 'बेहतर भविष्य की ओर', 'ड्रग एब्यूज', 'गंगा' और 'फ्रीडम स्ट्रगल'।

11.3.2. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने 1991 में दो नई प्रदर्शनियों का डिजाइन तैयार किया और उन्हें प्रस्तुत किया। एक प्रदर्शनी का शीर्षक था– 'युवा और राष्ट्र'। नई दिल्ली में इन्दिरा गांधी स्टेडियम में 20.8.91 को 'सद्भावना-दिवस' के अवसर पर इस प्रदर्शनी की आकल्पना की गई तथा उसे प्रस्तुत किया गया। एक नई प्रदर्शनी की परिकल्पना निदेशालय ने की जिसका शीर्षक 'मादक पदार्थों का दुरूपयोग' रखा गया था और इसे 'मादक पदार्थों के अवैध व्यापार के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय-दिवस' के अवसर पर प्रस्तुत किया गया था। राजधानी में 37 वें राष्ट्रमंडल सम्मेलन के अवसर पर संसद सौध में 'भारतीय संसद' शीर्षक से एक प्रदर्शनी के आयोजन में निदेशालय ने सहायता की। 'भारत-छोड़ो' आन्दोलन के स्वर्ण-जयंती समारोह के अवसर पर निदेशालय ने 1-6 नवम्बर तक बंबई में एक प्रदर्शनी लगाई।

श्रव्य-दृश्य प्रचार

11.4.1. अप्रैल-नवंबर, 1991 के दौरान अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने के उद्देश्य से इलैक्ट्रानिक माध्यमों का पर्याप्त उपयोग किया गया। निदेशालय के श्रव्य-दृश्य प्रचार प्रकोष्ठ ने 117 वीडियो स्पॉट/क्विकीज़ और वृत्त चित्रों के अलावा 1010 रेडियो स्पॉट और जिंगिल तथा प्रायोजित कार्यक्रम तैयार किए। आकाशवाणी से साप्ताहिक प्रायोजित कार्यक्रमों समेत कुल प्रसारित प्रसारणों की संख्या 31,210 और दूरदर्शन के प्रसारणों की संख्या 605 थी। आलोच्य अवधि के दौरान 150 करोड़ रुपये से अधिक का कारोबार किया गया। विभिन्न विषयों के अन्तर्गत विभिन्न भाषाओं में वीडियो स्पॉट के रूप में टेलीविजन के कामर्शियल्स के उत्पादन और प्रसारण में भारी वृद्धि हुई। नए आर्थिक उपायों के बारे में अभियान सबसे प्रमुख था और इसे युद्ध स्तर पर चलाया गया। 'राष्ट्रीय आवास बैंक' से संबद्ध स्वैच्छिक जमा योजना', इंडिया डेवलपमेंट बांड', आयकर की धारा 273(ए) के अन्तर्गत स्वैच्छिक घोषणा आदि जैसे विभिन्न विषयों पर 8 वीडियो स्पॉट और 7 रेडियो स्पॉट तैयार किए गए। इन स्पॉटों की उल्लेखनीय बात यह थी कि इनमें नई आर्थिक नीति की मुख्य विशेषताओं तथा आम लोगों के लिए उसके उपयोग पर विशेष ध्यान दिया गया।

11.4.2. प्रदूषण, स्वास्थ्य तथा परिवार कल्याण और शिशु बालिका अन्य प्रमुख विषय थे। दस मिनट का एक प्रायोजित कार्यक्रम 11 भाषाओं में हर सप्ताह 29 से अधिक विज्ञापन चैनलों पर प्रसारित किया जा रहा है जिसका शीर्षक 'नया सवेरा' है और जिसमें महिला तथा बाल विकास के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है।

11.4.3. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों को अपनी सेवा उपलब्ध कराने और मंत्रालय के विभिन्न माध्यमों की क्षेत्रीय इकाइयों को कार्यक्रम उपलब्ध कराने और डीएवीपी के प्रदर्शनों के संवर्धन करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव विषयों पर विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने प्रयोग के तौर पर विशेष ऑडियो कैसेट तैयार किए। 'तरंग अनेक-राग एक' शीर्षक कैसेट विवरण, संगीत और संक्षिप्त बातचीत के रूप में है और इसमें पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों की तीन पीढ़ियां भारत के अतीत का गान करती हैं और इसके महान क्षणों का थोड़ा-थोड़ा परिचय देती हैं।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण

11.4.4. परिवार कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर सूचना का प्रसार करने के मामले में विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने अपनी रफ्तार बनाए रखी है। परिवार नियोजन के विभिन्न उपलब्ध तरीकों को अधिक-से-अधिक लोगों द्वारा अपनाए जाने को प्रोत्साहन देने के लिए भारी संख्या में टेलीविजन के क्विकीज़, रेडियो स्पॉट प्रदर्शनियां, प्रेस विज्ञापनों, सिनेमा स्लाइडों, पुस्तिकाओं और इश्तिहारों के इस्तेमाल किए गए। नवम्बर, 1991 में प्रगति मैदान में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला -91 में 'जनसंख्या और छोटा परिवार' विषय पर एक बड़ी प्रदर्शनी लगाई गई। परिवार कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली एक प्रदर्शनी 'बेहतर भविष्य की ओर' देश के 21 विभिन्न स्थानों में लगाई गई। मादक पदार्थों के अवैध और चोरी-छिपे व्यापार के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर 'ड्रग एब्यूज' विषय पर एक नई प्रदर्शनी का डीएवीपी ने डिजाइन तैयार किया और उसे प्रस्तुत किया बच्चों के जन्म में अंतर रखने के संदेश का प्रचार करने के लिए 'गाइडलाइन्स फॉर ओरल पिल-एडमिनिस्ट्रेशन' और 'इंडियाज पापुलेशन, 1991 -ए डिस्टर्बिंग प्रोफाइल' मुद्रित की गई और देश भर मे उसका वितरण किया गया।

11.4.5. स्वास्थ्य के क्षेत्र में मादक पदार्थों की बुराई के खिलाफ लोगों को सचेत करने और एड्स तथा अन्य रोतेज संक्रामक रोगों पर नियंत्रण रखने के लिए लोगों को प्रेरित करने के वास्ते बहुमाध्यम प्रचार अभियान चलाए गए। 'पीने से पहले पानी को उबालें' और 'दस्त आने पर ओ.आर.एस. लें' जैसे स्वास्थ्य सुरक्षा के विभिन्न उपायों के बारे में लोगों को सूचित करने के लिए इश्तिहार, सिनेमा स्लाइड, कियोस्क, रेडियो स्पॉट आदि तैयार किए गए।

लोक सभा चुनाव

11.4.6. स्वतंत्र और निर्भय होकर चुनाव में भाग लेने के बारे में मतदाताओं को जानकारी देने के सरकार के प्रयासों पर जोर डालने के उद्देश्य से दसवें लोकसभा चुनावों के सिलसिले में निदेशालय ने पोस्टर तैयार करने, प्रेस विज्ञापनों, सिनेमा स्लाइडों, बसों पर चिपकाए जाने वाले पोस्टरों, होर्डिंग, वीडियो-क्विकीज़ और ऑडियो कैसेट्स तैयार करके विशेष प्रचार अभियान चलाया। 'भारत में चुनाव-एक आकर्षक कहानी' शीर्षक से एक पुस्तिका तथा चुनावों के बारे में दो संदर्भ पुस्तिकाएं भी प्रकाशित की गईं।

साक्षरता

11.4.7. मानव तथा सामग्री– दोनों ही प्रकार के संसाधनों को जुटाने, निरक्षरता को समाप्त करने की कार्रवाई तेज करने तथा निरक्षरता उन्मूलन के उपायों में लोगों की दिलचस्पी बनाये रखने के उद्देश्य से विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने प्रेरक इश्तिहार निकाले। होर्डिंग, कियोस्क तथा भित्ति चित्र लगाये तथा प्रेस विज्ञापन जारी किये और साक्षरता तथा विभिन्न विषयों पर 90 मिनट के वीडियो कार्यक्रम भी तैयार किये।

उद्योग

11.4.8. जुलाई, 1991 में सरकार ने 'नई औद्योगिक नीति' की घोषणा की जो आर्थिक सुधार के व्यापक कार्यक्रम का अंग था। इस नई नीति के बारे में विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने लोगों में जागरूकता बनाए रखने के लिए प्रचार अभियान चलाया। देश के विभिन्न भागों में लक्ष्य समूहों में वितरित करने के लिए उद्योग नीति के उद्देश्यों पर प्रकाश डालने वाली दो सूचनाप्रद पुस्तिकाएं छापी गईं।

आयकर, सीमा शुल्क और उत्पादन शुल्क

11.4.9. करदाताओं को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और दायित्वों के बारे में जानकारी देने के लिए बहुमाध्यम प्रचार अभियान चलाया

गया। काले धन का पता लगाने और मामले का समाधान करने वाले कमीशन के समक्ष करदाताओं को अपनी बेनामी आय तथा सम्पदा की घोषणा करने के प्रबंध किए गए।

सशस्त्र सेनाएं

11.4.10. सशस्त्र सेनाओं की विभिन्न शाखाओं जैसे- थल सेना, वायु सेना, नौसेना, तटरक्षक, प्रादेशिक सेना आदि में शामिल होने के लिए शिक्षित तथा योग्य युवाओं जैसे इंजीनियरों, डॉक्टरों और अन्य पेशे के लोगों को प्रेरित करने के लिए रक्षा मंत्रालय की ओर से व्यापक प्रचार किया गया।

मुद्रित प्रचार

11.5. विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय ने अप्रैल-दिसम्बर 1991 के दौरान जो प्रचार सामग्री छापी, उनमें प्रमुख है : 'नई औद्योगिक नीति-गतिशील प्रगति का माध्यम', 'निर्यात क्यों ? क्यों नहीं?', 'व्यापार पर नई नीतिगत घोषणाएं', 'नई औद्योगिक नीति', 'केन्द्रीय बजट -1991-92', 'आगे बढ़ने के लिए तेज कदम', 'हमारे अधिकार और कर्त्तव्य- एक ही सिक्के के दो पहलू', 'असम के बारे में 15 प्रमुख बातें' और 'भारत में चुनाव-एक दिलचस्प घटना', 'प्रधानमंत्री ने कहा' श्रृंखला के अंतर्गत प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव के 11 भाषणों को हिन्दी, अंग्रेजी और प्रमुख क्षेत्रीय भाषाओं में पुस्तिकाओं/फोल्डरों के रूप में छापा गया। इसमें 'धर्मनिरपेक्षता से कोई समझौता नहीं' शीर्षक के अन्तर्गत स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण और 'अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जनजातियों पर अत्याचारों पर अंकुश लगाने के लिए समेकित कार्रवाई आवश्यक' शीर्षक के अन्तर्गत 4 अक्तूबर 1991 को मुख्यमंत्रियों की विशेष बैठक को संबोधित करते हुए उनका भाषण शामिल है। अप्रैल-नवम्बर, 91 की अवधि में पुस्तिकाओं, इश्तिहारों, कैलेंडरों, डायरियों और विविध रूपों में कुल मिलाकर 85 लाख प्रतियां छापी गईं। विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय द्वारा प्रकाशित कैलेंडर का मुख्य विषय 'रागमाला' के चित्र थे जो सभी को आकर्षक लगते हैं।

बाह्य प्रचार

11.6. अप्रैल-दिसम्बर 1991 की अवधि में 80,332 एनएमईपी के टिन पर बने इश्तिहारों ; 33,636 सिनेमा स्लाइडों ; 3,500 दीवार के इश्तिहारों, 2930 कियोस्क, 2290 बसों के पेनलों, 7000 प्लास्टिक के फाइल कवर, 350 भित्ति चित्र, 276 कपड़े के झंडे, 236 होर्डिंग का इस्तेमाल करके डीएवीपी ने सूचना और प्रेरक प्रचार अभियान विशेषकर ग्रामीण और अर्द्धशहरी क्षेत्रों में चलाया।

क्षेत्रीय प्रदर्शनी अधिकारियों के लिए कार्यशाला

11.7. देश के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में कार्यरत क्षेत्रीय प्रदर्शनी अधिकारियों के लिए (18-22 नवम्बर 1991 तक) चार दिन की कार्यशाला आयोजित की गई जिसका उद्देश्य प्रदर्शनियों के आयोजन की नवीनतम टेक्नोलाजी से अधिकारियों को जानकारी देना था।

सामूहिक डाक शाखा

11.8. निदेशालय की सामूहिक डाक शाखा ने मुद्रित प्रचार सामग्री की 117 लाख से अधिक प्रतियां वितरित कीं। वितरण की यह कार्यवाही मुख्यालय नई दिल्ली से और मद्रास तथा कलकत्ता स्थित क्षेत्रीय वितरण केन्द्रों से की गई। 31 दिसम्बर 1991 को डीएवीपी की डाक सूची में 15.08 लाख पते थे जो प्राथमिक/माध्यमिक स्कूलों, पंचायतों, डाकघरों, ग्रामीण बैंकों और सहकारी समितियों जैसी 527 श्रेणियों में है।

प्रमुख अभियान

11.9. सामाजिक परिवर्तन तथा आर्थिक विकास के राष्ट्रीय कार्यक्रमों में लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने तथा उन्हें सूचना और जानकारी देने के लिए 1991-92 के दौरान बहुमाध्यम अभियान चलाए गए जिनमें राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव, आर्थिक विकास, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, ऊर्जा संरक्षण, उपभोक्ता सुरक्षा, समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान, आयकर अपवंचन, आयकर उत्पादन शुल्क तथा सीमा शुल्क के अपवंचन, तस्करी, मादक पदार्थों की बुराई तथा नशीले पदार्थों के चोरी-छिपे व्यापार जैसे विषयों पर विशेष जोर दिया गया। 'नशीले पदार्थों के दुरुपयोग', 'भारत छोड़ो आंदोलन' के स्वर्ण जयंती समारोह, 'स्वतंत्रता दिवस', 'गणतंत्र दिवस', 'पं. जवाहर लाल नेहरू की जयंती', 'बाबा साहेब आम्बेडकर का महापरिनिर्वाण दिवस', 'अध्यापक दिवस' तथा वायु सेना दिवस जैसे प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं का भी व्यापक रूप से प्रचार किया गया।

नए आर्थिक उपाय

11.10. विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने सरकार द्वारा घोषित नए आर्थिक उपायों के लिए बहुमाध्यमों की ओर से अपना समर्थन जारी रखा। नए आर्थिक उपायों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए सार्वजनिक जागृति अभियान के एक हिस्से के रूप में विभाग ने अनेक पुस्तिकाएं छापी जिनमें 'केन्द्रीय बजट-अर्थव्यवस्था को पुनरूज्जीवित करने के उपाय', 'औद्योगिक नीति' प्रश्न-उत्तर के रूप में औद्योगिक नीति, औद्योगिक नीति के बारे में बहुत ही अच्छे तरीके से प्रकाश डालते हुए पुस्तिकाएं, 'आगे बढ़ने के लिए त्वरित कार्रवाई', 'लोगों के कल्याण के लिए विभिन्न उपाय' तथा 'व्यापार नीति के बारे में एक पुस्तिका', 'निर्यात क्यों, क्यों नहीं' और आर्थिक उपायों के बारे में चार पुस्तिकाओं वाला एक प्रचार फोल्डर हैं राष्ट्रीय आवास बैंक से जुड़ी स्वैच्छिक जमा योजना' जैसे विभिन्न विषयों, 'इंडिया डेवलपमेंट बांड', आयकर की धारा 273 के अंतर्गत स्वैच्छिक जानकारी देने जैसे विषयों, सैटलमेंट कमीशन के बारे में धारा 245 (डी) में संशोधन और छोटे उद्योग लगाने के अवसर, निर्यात की आवश्यकता, मूल्य पर आधारित निर्यात आदि जैसे विभिन्न विषयों पर आठ वीडियो स्पॉट और सात रेडियो स्पॉट तैयार किए गए ताकि

विभिन्न ग्राहक मंत्रालयों/विभागों की ओर से विभिन्न बहुमाध्यम प्रचार अभियान को दृश्य और श्रव्य सहायता दी जा सके।

राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भाव

11.11. अलगाववादी तथा क्षेत्रीयतावादी दृष्टिकोणों को छोड़ने के लिए लोगों को प्रेरित करने तथा एकता और राष्ट्रीय एकता की भावना को मजबूत करने के लिए डीएवीपी ने वर्ष के दौरान अनेक पुस्तिकाएं, पम्फलैट्स और विवरण पुस्तिकाएं प्रकाशित कीं। 'एक राष्ट्र-एक प्राण' शीर्षक के अंतर्गत देश के विभिन्न भागों में कुल 56 प्रदर्शनियां आयोजित की गईं। 'असम की प्रगति और संभावना' के बारे में लोगों को सूचना देने के लिए तथा क्षेत्र में विकास प्रयासों के लिए राष्ट्रीय पूर्वोत्तर परिषद की भूमिका पर प्रकाश डालने के लिए व्यापक तथ्य पत्र प्रकाशित करने के अलावा कृषि, उद्योग, ग्रामीण विकास तथा बिजली जैसे विकास के विभिन्न पहलुओं के बारे में असम के सम्बन्ध में 15 तथ्य पत्र प्रकाशित किए गए और इनसे इस बात पर जोर दिया गया कि विकास केवल राष्ट्रीय एकता के जरिए ही प्राप्त हो सकता है। विभिन्न विषयों पर प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरसिम्हा राव के प्रमुख भाषणों और वक्तव्यों को प्रकाशित किया गया। 'धर्मनिरपेक्षता के मामले में कोई समझौता नहीं', 'आर्थिक संकट का सामना करने के लिए एकजुट प्रयास की जरूरत' और 'हर कीमत पर भारत की एकता को सुरक्षित रखने का संकल्प' जैसे शीर्षक से पुस्तिकाएं और पम्फलेट्स छापे गए और उनका वितरण किया गया। 'कौमी एकता सप्ताह' (19-25 नवम्बर 1991) के अवसर पर एक पुस्तिका 'एकता के जरिए भारत को मजबूत और महान बनाना' और एक फोल्डर 'धर्मनिरपेक्षता तथा राष्ट्रीय एकता' छापे गए तथा देश भर में वितरित किए गए। आलोच्य वर्ष के दौरान डीएवीपी ने राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक एकता के संदेशों का प्रचार करने वाली बाह्य प्रचार सामग्रियों का मुद्रण तथा वितरण जारी रखा।

अध्याय — 12

फोटो प्रभाग

12.1.1 फोटो प्रभाग फोटोग्राफी के क्षेत्र मे अपने तरह की देश की सबसे बड़ी उत्पादन इकाई है। यह प्रभाग भारत सरकार की ओर से देश तथा विदेश में प्रचार के लिए श्वेत श्याम और रंगीन दोनों प्रकार के चित्र तैयार करता है।

12.1.2 फोटो प्रभाग विकास और विशेष घटनाओं के चित्र तैयार करता है और ये चित्र संचार माध्यमों को उपलब्ध कराता है। यह प्रभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की प्रचार इकाइयों, राष्ट्रपति सचिवालय, उपराष्ट्रपति सचिवालय, प्रधान मंत्री कार्यालय, लोकसभा/राज्य सभा सचिवालय सहित केन्द्र व राज्य सरकारों के अन्य मंत्रालयों/विभागों और विदेश मंत्रालय के विदेश स्थित भारतीय मिशनों को फोटोग्राफ उपलब्ध कराता है। प्रभाग द्वारा आम लोगों और गैर प्रचार संगठनों को भी भुगतान करने पर रंगीन और श्वेत-श्याम फोटोग्राफ तथा रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शी उपलब्ध करायी जाती है। अप्रैल से दिसम्बर, 1991 के दौरान प्रभाग ने अपनी 'प्राइसिंग स्कीम' (मूल्य योजना) के तहत 4.40 लाख रुपये का राजस्व अर्जित किया।

12.1.3 प्रभाग का दिल्ली में जो मुख्यालय है, उसमें श्वेत-श्याम और रंगीन, दोनों ही प्रकार के फोटोग्राफ तैयार करने के लिए सभी सुविधाओं से सम्पन्न प्रयोगशाला है। फोटो प्रभाग के बम्बई, कलकत्ता और मद्रास में तीन क्षेत्रीय कार्यालय और गुवाहाटी में एक फोटो-एकांश है।

प्रमुख कवरेज

12.2.1 फोटो प्रभाग प्रधानमंत्री द्वारा समय-समय पर की जाने वाली देश भर की यात्राओं की व्यापक फोटोग्राफी कवरेज करता है। भारत-महोत्सव के उद्घाटन के सिलसिले में प्रधानमंत्री की जर्मनी-यात्रा, चोगम में भाग लेने के लिए हरारे यात्रा, जी- 15 देशों के शिखर सम्मेलन के लिए वेनेजुएला की यात्रा तथा फ्रांस और श्रीलंका यात्रा को व्यापक कवरेज प्रदान की गई। सम्बद्ध फोटोग्राफ पत्र सूचना ब्यूरो के माध्यम से देश भर के समाचार पत्रों और विदेश स्थित भारतीय मिशनों के जरिये विदेशी प्रेस को उपलब्ध कराये गये।

12.2.2 वर्ष के दौरान मध्यावधि चुनाव, वर्तमान केन्द्रीय मंत्री परिषद् का शपथ ग्रहण और अन्य महत्वपूर्ण समारोहों/घटनाओं को भी कवर किया गया। फोटो प्रभाग ने वर्ष 1991 के दौरान विदेशों से भारत आने वाले विशिष्ट व्यक्तियों और राष्ट्राध्यक्षों/शासनाध्यक्षों के भी चित्र खींचे।

12.2.3 फोटो प्रभाग ने एक चुने हुए विषय पर राष्ट्रीय फोटो प्रतियोगिता और प्रदर्शनी का वार्षिक आयोजन भी शुरू किया है। इसके अन्तर्गत देश के अव्यवसायी फोटोग्राफरों को आमंत्रित किया है। इस वर्ष प्रतियोगिता का विषय था 'सबके लिए साक्षरता'।

12.2.4 प्रभाग द्वारा वर्ष 1991-92 (अप्रैल-दिसम्बर, 1991) के दौरान कवर किये गये समारोहों आदि के बनाये नेगेटिव और प्रिन्ट तैयार की गई एलबम आदि का विवरण इस प्रकार है:

1.	समाचार और फीचर फोटोग्राफ (श्वेत-श्याम और रंगीन दोनों ही वर्गों में)	2,280
2.	तैयार किये गये नेगेटिव (श्वेत-श्याम और रंगीन)	62,283
3.	रंगीन स्लाइड्स/पारदर्शियां	137
4.	तैयार किये गये श्वेत-श्याम चित्र	3,67,257
5.	रंगीन चित्र	20,344
6.	कुल श्वेत-श्याम और रंगीन चित्र	3,87,601
7.	फोटो एलबम	30

अध्याय – 13

गीत और नाटक प्रभाग

13.1.1 गीत और नाटक प्रभाग सामाजिक आर्थिक महत्व के विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए सजीव माध्यमों, विशेषकर लोक कलाओं और परम्परागत माध्यमों का इस्तेमाल करता है। यह प्रभाग, ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रमों के अलावा पारम्परिक नाट्य रूपों जैसे नाटक, नृत्य-नाटक, कठपुतली, लोकगीत आदि का प्रयोग करता है। सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रतिरक्षा सेनाओं के जवानों के मनोरंजन सम्बंधी आवश्यकताओं को भी प्रभाग पूरा करता है। प्रभाग अपनी सभी गतिविधियां केन्द्र और राज्य सरकारों की एजेंसियों के सहयोग से संचालित करता है।

13.1.2 बड़े-बड़े उत्सवों के दौरान जहां बड़ी संख्या में लोग भाग लेते हैं गीत और नाटक प्रभाग के कार्यक्रमों का उपयोग प्रभावकारी ढंग से किया जाता है। इन कार्यक्रमों के जरिये राष्ट्रीय एकता, देश भक्ति, साम्प्रदायिक सद्भाव, छुआछूत निवारण, मद्यनिषेध, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यक्रमों आदि के बारे में विशेष प्रचार किया जाता है।

गतिविधियां

13.2.1 प्रभाग एक निदेशक के अधीन है और तीन स्तरों पर कार्य करता है: (1) दिल्ली मुख्यालय (2) आठ क्षेत्रीय केन्द्र जो भोपाल, कलकत्ता, चंडीगढ़, दिल्ली, गुवाहाटी, लखनऊ, मद्रास और पुणे में है, और (3) नौ उपकेन्द्र, जो भुवनेश्वर, हैदराबाद, पटना, इम्फाल, जोधपुर, दरभंगा, नैनीताल, शिमला और श्रीनगर में हैं। इसके अलावा नई दिल्ली और बंगलौर में दो ध्वनि और प्रकाश केन्द्र तथा रांची में एक जनजातीय केन्द्र है। ये केन्द्र और उप केन्द्र प्रचार कार्यक्रम तैयार करते हैं।

13.2.2 प्रभाग ने 43 विभागीय मंडलियों, दो प्रकाश और ध्वनि इकाइयों, एक जनजातीय इकाई और प्रभाग द्वारा पंजीकृत लगभग 700 निजी मंडलियों के माध्यम से अपनी गतिविधियां जारी रखीं। प्रभाग ने अपने प्रचार कार्यक्रमों के लिए प्रत्यक्ष, पारम्परिक और लोक माध्यमों का भी इस्तेमाल किया। प्रभाग ने 34,120 कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जिनमें 27,629 कार्यक्रम विभिन्न माध्यमों के जरिये अप्रैल-दिसम्बर 1991 के दौरान आयोजित किये गये।

13.2.3 प्रभाग अपने कार्यक्रमों को देश के दूर-दराज और पिछड़े इलाकों तथा गांव-गांव तक पहुंचाने का विशेष प्रयास करता है। इन क्षेत्रों में कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों की एजेंसियों का सहयोग लिया जाता है। वर्ष के दौरान 20-सूत्री कार्यक्रम के समर्थन में प्रचार अभियानों को स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करने के लिए सभी संसाधन जुटाने के प्रयास किये गये।

विभागीय नाटक मंडलियां

13.3 प्रभाग की छह विभागीय नाटक मंडलियां हैं। ये पुणे, हैदराबाद, श्रीनगर, दिल्ली, पटना और भुवनेश्वर में स्थित है। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने हिन्दी, कश्मीरी, उर्दू, मराठी, उड़िया और तेलुगु में नाटकों और प्रहसनों के रूप में 811 प्रदर्शन प्रस्तुत किए। हैदराबाद स्थित विभागीय नाटक मंडली ने मद्रास क्षेत्रीय केन्द्र के साथ मिलकर तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक और आन्ध्र प्रदेश में भावनात्मक एकता बढ़ाने के लिए प्रचार अभियान चलाये। पुणे की विभागीय नाटक मंडली ने बाबा साहब डा० भीमराव आम्बेडकर की जन्म शताब्दी के सिलसिले में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में विशेष रूप से हिस्सा लिया। प्रभाग की पटना और श्रीनगर की नाटक मंडलियों ने झांसी और ग्वालियर में ध्वनि और प्रकाश के नये कार्यक्रम, 'और कदम बढ़ते रहे' की प्रस्तुति में विशेष योगदान दिया। प्रभाग ने राजस्थान में मेवाड़ उत्सव का आयोजन किया। जिसके अंतर्गत मेवाड़ के सभी प्रमुख शहरों में समारोह आयोजित किये गये।

सीमा प्रचार मंडलियों द्वारा कार्यक्रम

13.4 अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से लगे क्षेत्रों में प्रभावकारी और गहन

प्रचार के लिये विभागीय मंडलियों ने सीमावर्ती गांवों में स्थानीय बोलियों में कार्यक्रम प्रस्तुत कर लोगों का मनोबल बढ़ाया और राष्ट्रीय एवं भावनात्मक एकता पर बल देते हुए लोगों को देश की रक्षा सम्बन्धी तैयारियों से परिचित कराया। इन मंडलियों ने केन्द्रीय और राज्य सरकारों की एजेंसियों तथा स्वयंसेवी संगठनों के सहयोग से गहन प्रचार अभियान चलाए। देश के विभिन्न हिस्सों, विशेष कर संवेदनशील क्षेत्रों के जन-जन में राष्ट्रीय एकता की भावना और साम्प्रदायिक सद्भाव को सुदृढ़ करने के लिए प्रभाग ने वर्ष भर भावनात्मक एकता प्रचार अभियान चलाए। इन अभियानों के दौरान विभिन्न सीमा प्रचार मंडलियों को सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया गया। इन मंडलियों के कार्यक्रमों की गुणवत्ता की सभी ने समान रूप से प्रशंसा की।

सशस्त्र सैनिक मनोरंजन शाखा के कार्यक्रम

13.5 सीमावर्ती क्षेत्रों में जवानों के मनोरंजन के लिए 1967 में सशस्त्र सैनिक मनोरंजन शाखा स्थापित की गई। इसकी कुल नौ मंडलियां हैं, जिनमें से एक मद्रास में, और बाकी दिल्ली में हैं। वर्ष के दौरान इन मंडलियों ने कठिन और बीहड़ सीमावर्ती क्षेत्रों में जवानों के मनोरंजन के लिए कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इसके अलावा इस शाखा के कलाकारों ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के श्रोताओं के लिए विशेष कार्यक्रम तैयार और प्रस्तुत किये। इन मंडलियों द्वारा 'कंजूस' शीर्षक से नाटक की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम इस तरह से तैयार किये गये ताकि विभिन्न भाषायी समूहों के लोग उनमें समान रुचि ले सकें । अप्रैल से दिसम्बर, 1991 तक इन मंडलियों ने 513 कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

ध्वनि और प्रकाश कार्यक्रम

13.6 दिल्ली और बंगलौर में प्रभाग की दो ध्वनि और प्रकाश इकाइयां हैं। नई दिल्ली में 'फूल वालों की सैर' के अवसर पर राष्ट्रीय एकता से ओत-प्रोत ध्वनि और प्रकाश का एक विशेष कार्यक्रम 'रानी झांसी' प्रस्तुत किया गया। वर्ष के दौरान झांसी और ग्वालियर में ध्वनि और प्रकाश का नया कार्यक्रम 'और कदम बढ़ते रहे' तैयार कर प्रस्तुत किया गया। केरल में क्विलोन में ध्वनि और प्रकाश का नया कार्यक्रम 'उन्नाकालेहा' तैयार और प्रस्तुत किया गया।

व्यावसायिक और विशेष सेवाएं

13.7. स्थानीय प्रतिभाओं विशेषकर लोक और परम्परागत कलाकारों को सामने लाने के लिए प्रभाग की स्थापना के समय ही यह योजना शुरू की गई थी। प्रभाग देश के बहुआयामी विकासात्मक स्वरूप और राष्ट्रीय एकता के संदेश को कलाओं के माध्यम से व्यक्त करने में योगदान करने वाली व्यावसायिक मंडलियों का उपयोग करता है। शुरू में प्रभाग ने 5 व्यावसायिक मंडलियों का चयन किया था जबकि वर्तमान में विभाग के पास 700 ऐसी मंडलियां हैं जो राष्ट्रीय महत्व के विषयों पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के लिये अथवा उसकी ओर से भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये जाते हैं। इनमें क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, राज्य सरकारों की फील्ड एजेंसियों, अर्द्ध सरकारी एजेंसियों और स्वयंसेवी संगठनों की सहायता ली जाती है। वर्ष के दौरान प्रभाग ने इस योजना के तहत देश के विभिन्न भागों में 31,282 कार्यक्रम प्रस्तुत किये।

जनजातीय केन्द्र, रांची

13.8. प्रभाग ने जनजातीय परियोजना नियोजन के तहत मध्यप्रदेश, बिहार और उड़ीसा के जनजातीय कलाकारों की प्रतिभा के उपयोग के लिए रांची में एक केन्द्र की स्थापना की है। इस योजना का मूल उद्देश्य उन समुदायों को प्रोत्साहन देना है जो अपने कार्यक्रम अपने ही तरीके से तैयार और प्रस्तुत करते हैं। वे इन कार्यक्रमों के माध्यम से अपने उन भाइयों को शिक्षित बनाने और उन तक सूचनाएं पहुंचाने का कार्य भी करते हैं जो अभी तक किसी संचार माध्यम के सम्पर्क में नहीं आये हैं। इस योजना की विशेषता यह है कि जनजातीय मंडलियों द्वारा कार्यक्रम उनकी अपनी बोली में मौलिक ढंग से तैयार कराये जाते हैं, ताकि उनकी सदियों से चली आ रही परम्परागत शैली को किसी तरह का नुकसान न हो। इस योजना के तहत अप्रैल से दिसम्बर 1991 तक प्रभाग द्वारा जनजातीय क्षेत्रों में ऐसे 597 कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए।

परिवार कल्याण

13.9.1. प्रभाग द्वारा विभिन्न एजेंसियों के सहयोग से परिवार कल्याण के समर्थन में विशेष प्रचार अभियान चलाये गये। प्रभाग ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की संशोधित नीति के अनुरूप तैयार किये गये अनेक कार्यक्रम मद्रास, मदुरई, कालिकट और नई दिल्ली में आयोजित प्रशिक्षण शिविरों में प्रस्तुत किये।

13.9.2. प्रभाग ने दिल्ली प्रशासन के सहयोग से दिल्ली की झुग्गी झोंपड़ी बस्तियों में विशेष प्रचार अभियान भी चलाये। वर्ष के दौरान प्रभाग ने उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, केरल और पश्चिम बंगाल के अधिक आबादी वाले जिलों में भी कार्यक्रम आयोजित किए। 'अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या दिवस' के अवसर पर 8 जुलाई से 14 जुलाई तक देश भर में एक सप्ताह का राष्ट्रीय अभियान चलाया गया। प्रभाग ने प्रगति मैदान में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेले के अवसर पर भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के घनिष्ठ सहयोग से अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

मेले और उत्सव

13.10. गीत और नाटक प्रभाग ने ऐसे कई मेलों और उत्सवों के अवसर पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये, जहां बड़ी संख्या में लोग इकट्ठे होते है। नासिक में कुंभ मेले के अवसर पर प्रभाग द्वारा 46 कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। उड़ीसा के प्रसिद्ध 'रथयात्रा' समारोह के अवसर पर लगभग 148 कार्यक्रम प्रायोजित किये गये। जिन अन्य महत्वपूर्ण मेलों/उत्सवों में प्रभाग ने अपने कार्यक्रम दिखाए, वे हैं- देश के विभिन्न भागों में आयोजित 'दुर्गा पूजा', असम में बिहू समारोह, अजमेर में उर्स मेला, उत्तर प्रदेश में नौचंदी और कुंभ मेले तथा दिल्ली में 'फूल वालों की सैर'।

बच्चे ग्रीष्मकालीन शिविर में । शिविर का आयोजन विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय ने किया

मेरठ के नौचन्दी मेले में भंगड़ा प्रस्तुत करते हुए कलाकार

20- सूत्री आर्थिक कार्यक्रम

13.11. प्रभाग द्वारा प्रस्तुत लगभग सभी कार्यक्रमों में 20-सूत्री आर्थिक कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे, भूमि सुधार, बंधुआ मजदूरों का पुनर्वास, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति विकास, आदि के प्रचार को स्थान दिया गया। बालिकाओं तथा परिवार कल्याण और शिक्षा के बारे में विशेष प्रचारोन्मुखी बनाम प्रशिक्षण कार्यक्रम नई दिल्ली और मद्रास में आयोजित किये गये। इसके अलावा प्रभाग ने देश में निचले स्तर पर साक्षरता में प्रगति के बारे में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये।

साम्प्रदायिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता

13.12. प्रभाग ने राष्ट्रीय एकता और साम्प्रदायिक सद्भाव दर्शाने वाले कार्यक्रमों की प्रस्तुति जारी रखी। पंजाब, जम्मू कश्मीर और असम में ग्रामीण युवकों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम बनाये गये। पंजाब के सभी 12 जिलों में भावनात्मक और राष्ट्रीय एकता व्यक्त करने वाले विशेष कार्यक्रमों का बार-बार आयोजन किया गया। गुवाहाटी स्थित क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा सभी पूर्वोत्तर राज्यों में अनेक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। 'कौमी एकता सप्ताह' के अवसर पर भी देश भर में कार्यक्रम अयोजित किये गये।

अध्याय – 14

गवेषणा और संदर्भ प्रभाग

14.1.1 गवेषणा और संदर्भ प्रभाग, मंत्रालय और उसके माध्यम एककों को पृष्ठभूमि लेख, संदर्भ सामग्री इत्यादि जुटाता है। गवेषणा और संदर्भ प्रभाग ने 30 नवम्बर, 1991 तक 111 संदर्भ कार्य पूरे किये। इनमें सामयिक महत्व के विषयों पर 21 पृष्ठभूमि लेख, 3 जीवनियां, 1 तथ्य प्रपत्र और 1 सदर्भ पत्र शामिल है। पृष्ठभूमि लेखों की दो श्रृंखलायें जारी की गई, एक 1991 के आम चुनावों के बारे में और दूसरी राष्ट्रीय एकता सप्ताह के अवसर पर। 1991 की जनगणना रिपोर्ट, व्यापार और औद्योगिक नीति के उदारीकरण और रुपये के अवमूल्यन के बारे में भी महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि लेख जारी किये गये। राजीव गांधी, एस.ए. डांगे और उमा शंकर दीक्षित की जीवनियां प्रकाशित की गई।

14.1.2 प्रभाग के पास एक और महत्वपूर्ण कार्य था, दो वार्षिक संदर्भ ग्रथों का संयोजन कार्य। ये हैं 'भारत-वार्षिक संदर्भ ग्रंथ', जिसमें भारत के बारे में स्तरीय जानकारी उपलब्ध है, और 'भारत में जन संचार माध्यम', जिसमें देश के जन संचार माध्यम के बारे में जानकारी है। वर्ष के दौरान प्रभाग ने 'भारत- 1991' और 'जन संचार माध्यम- 1991 का संकलन किया। इन दोनों ग्रंथों के, प्रकाशन विभाग द्वारा मार्च, 1992 तक प्रकाशित हो जाने की संभावना है।

संदर्भ पुस्तकालय

14.2 प्रभाग का एक संदर्भ पुस्तकालय भी है, जिसमें विभिन्न विषयों की पुस्तकों का विशाल संग्रह है। इसमें चुनी हुई पत्रिकाओं के जिल्दबंद अंक तथा विभिन्न मंत्रालयों, समितियों और आयोगों की रिपोर्ट भी उपलब्ध है। यह पुस्तकालय संभवतः पत्रकारिता, जन सम्पर्क, विज्ञापन और श्रव्य-दृश्य प्रचार माध्यमों के बारे में पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रहालय है। पुस्तकालय में संग्रहीत वार्षिक ग्रंथों, समकालीन निबंधों और विश्व भर के प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित विश्व कोषों की श्रृंखलाओं का इस्तेमाल सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 700 से अधिक संवाददाता (भारत और विदेश दोनों के) और बड़ी संख्या में सरकारी माध्यमों में काम करने वाले अधिकारियों द्वारा किया जाता है। पुस्तकालय में 105 भारतीय और विदेशी पत्र-पत्रिकाएं आती हैं। नवम्बर 1991 तक पुस्तकालय में विभिन्न विषयों की 84 नई पुस्तकें शामिल की गईं।

जनसंचार पर राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र

14.3.1 मंत्रालय द्वारा गठित विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों पर प्रभाग में 1976 में जनसंचार पर राष्ट्रीय प्रलेखन केन्द्र की स्थापना की गई थी। इसका प्रमुख उद्देश्य जनसंचार माध्यमों जैसे, प्रेस, रेडियो, दूरदर्शन, विज्ञापन और लोक माध्यमों तथा केन्द्र और राज्य सरकारों की विभिन्न प्रचार इकाइयों के बारे में घटनाओं और नई प्रवृत्तियों से सम्बन्धित सूचनाओं को एकत्रित और प्रसारित करना है।

14.3.2 यह केन्द्र आठ लोकप्रिय सेवाओं द्वारा एकत्रित सूचनाओं का प्रसार करता है। ये सेवायें है- 'करेंट अवेयरनेस सर्विस', 'रेफरेंस इन्फारमेशन सर्विस', 'बिब्लियोग्राफी सर्विस', 'हू इज हू इन मास मीडिया', 'आनर्स कन्फर्ड आन मास कम्यूनिकेटर्स', 'वर्ल्ड मीडिया सर्विस', 'मीडिया मेमरी' और 'बुलेटिन आन फिल्म'। इस केन्द्र की अखबार कतरन सेवा भी है। अप्रैल से नवम्बर 1991 तक केन्द्र द्वारा 31 प्रलेख जारी किये गये।

कम्प्यूटरीकरण

14.4 प्रभाग अपने प्रलेखन, संग्रहण और पुस्तकालय सेवाओं का कम्प्यूटरीकरण करने की प्रक्रिया में लगा है। इससे न केवल प्रभाग की गवेषणा और संदर्भ गतिविधियों में तेजी आयेगी, बल्कि समाचार संवाददाताओं सहित उन सभी को सुविधा होगी जो पुस्तकालय का उपयोग करते हैं।

अध्याय – 15

भारतीय जनसंचार संस्थान

15.1.1 भारतीय जनसंचार संस्थान की स्थापना 1965 में जनसंचार में अध्ययन, प्रशिक्षण और अनुसंधान के एक राष्ट्रीय केन्द्र के रूप में हुई थी। यह एक स्वायत्तशासी संस्था है, जिसे भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय के माध्यम से सहायता-अनुदान के रूप में धन उपलब्ध कराती है। इसे आकाशवाणी और दूरदर्शन व्यावसायिक राजस्व कोष (एन.एल.एफ.) से भी अनुदान मिलता है। इसके बदले यह संस्थान आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करता है।

15.1.2 संस्थान पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रशिक्षण और शिक्षण के कई पाठ्यक्रम चलाता है। भारत और अन्य विकासशील देशों के अनुकूल संचार नेटवर्क का विकास करने के लिए संस्थान गोष्ठियों का आयोजन करता है।

15.1.3 इस वर्ष के दौरान संस्थान ने सेवाकालीन प्रशिक्षण के दो कार्यक्रम आयोजित किये। ये हैं- भारतीय सूचना सेवा के अधिकारियों के लिए अभिश्चर्या पाठ्यक्रम तथा दूरदर्शन और आकाशवाणी के अधिकारियों के लिए प्रसारण पत्रकारिता पाठ्यक्रम। संस्थान पांच नियमित डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाता है। ये हैः (1) पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (2) विज्ञापन और जनसम्पर्क में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (3) हिन्दी पत्रकारिता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा, और (4) गुटनिरपेक्ष देशों के लिए समाचार एजेंसी पत्रकारिता में डिप्लोमा (दो पाठ्यक्रम)। इनमें से एक नवम्बर 1991 को पूरा हुआ जबकि दूसरा समाचार एजेंसी डिप्लोमा अप्रैल 1992 में पूरा होगा।

15.1.4 संस्थान ने वर्ष के दौरान 10 अल्पावधि पाठ्यक्रम, एक संगोष्ठी और एक कार्यशाला का भी आयोजन किया, जिसमें 203 लोगों ने भाग लिया।

15.1.5 25 अप्रैल 1991 को हुए वार्षिक दीक्षांत समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों के 94 छात्रों को डिप्लोमा प्रदान किये गये। प्रतिभाशाली छात्रों को अंतर्राष्ट्रीय सूझ-बूझ के लिए भारतीय जनसंचार संस्थान रजत जयंती पुरस्कार, बाबा साहेब डा० भीमराव आम्बेडकर पुरस्कार और राजस्थान पत्रिका, पी०टी०आई०, साप्ताहिक हिन्दुस्तान, दक्कन हैराल्ड, हिन्दू, पैट्रियट, भारतीय विज्ञापन एजेंसी संघ और भारतीय जनसम्पर्क सोसायटी द्वारा दान स्वरूप दिये जाने वाले पुरस्कार, प्रोफेसर वी.सी. देसाई पुरस्कार और भारतीय जनसंचार संस्थान पुरस्कार प्रदान किये गये।

15.1.6 संस्थान ने वर्ष के दौरान 'संचार माध्यम' और 'कम्यूनिकेटर' के दो-दो अंक प्रकाशित किये। इसने रजत जयंती व्याख्यान का भी आयोजन किया और 'कम्युनिकेशन- 2000 ए.डी.' नाम की स्मारिका भी प्रकाशित की। संस्थान ने 9 से 13 सितम्बर, 1991 तक हिन्दी सप्ताह का आयोजन किया। संस्थान के संचार अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययन विभाग ने संचार के बारे में छह अध्ययन पूरे किये।

परिशिष्ट–दो

सूचना और प्रसारण मंत्रालय

योजना तथा गैर-योजना बजट का विवरण

(हजार रुपयों में)

	मांग संख्या 55 सूचना और प्रसारण मंत्रालय	बजट अनुमान 1991-92			संशोधित अनुमान 1991-92			बजट अनुमान 1992-93		
क्रम सं.	मध्यम इकाई का नाम	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग	योजना	गैर-योजना	योग
	राजस्व भाग									
	प्रमुख शीर्ष- 2251 सचिवालय-सामाजिक सेवायें									
1.	मुख्य सचिवालय	—	2,61,23	2,61,23	—	2,64,37	2,64,37	—	2,76,17	2,76,17
2.	समेकित वेतन और लेखा कार्यालय	10,00	1,31,77	1,41,77	1,00	1,38,63	1,39,63	5,00	1,49,83	1,54,83
	योग	10,00	3,93,00	4,03,00	1,00	4,03,00	4,04,00	5,00	4,26,00	4,31,00
	प्रमुख शीर्ष 2205 कला एवं संस्कृति सिनेमेटोग्राफिक फिल्मों का सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए प्रमाणीकरण									
3.	केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड	20,00	53,80	73,80	15,00	55,00	70,00	20,00	56,80	76,80
4.	फिल्म प्रमाणीकरण अपील न्यायाधिकरण	—	2,20	2,20	—	2,00	2,00	—	2,20	2,20
	योग– मुख्य शीर्ष 2205	20,00	56,00	76,00	15,00	57,00	72,00	20,00	59,00	79,00
	प्रमुख शीर्ष 2220- सूचना और प्रचार									
5.	फिल्म प्रभाग	1,75,00	14,85,15	16,60,15	1,38,96	14,98,73	16,37,69	2,70,00	15,52,82	18,22,82
6.	फिल्म समारोह निदेशालय-स्थापना	20,94	1,45,41	1,66,35	18,00	2,40,86	2,58,86	27,75	1,75,40	2,03,15
7	भारत में अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह	92,06	—	92,06	92,06	—	92,06	80,00	—	80,00
8.	सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अंतर्गत फिल्म समारोह	80,68	—	80,68	51,00	—	51,00	24,00	—	24,00
9.	राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार	40,00	—	40,00	40,00	—	40,00	23,25	—	23,25
10.	क्षेत्रीय फिल्म समारोह	—	—	—	—	—	—	—	—	—
11	विदेशी फिल्म समारोहों में भागीदारी	11,32	—	11,32	5,00	—	5,00	5,00	—	5,00
12.	फिल्म समारोह परिसर का रख-रखाव	—	—	—	—	—	—	—	—	—
13.	भारत का राष्ट्रीय फिल्म अभिलेखागार	45,00	28,65	73,65	45,00	26,93	71,93	60,00	28,73	88,73
14.	बाल फिल्म समिति को अनुदान	1,50,00	27,00	1,77,00	1,50,00	16,00	1,66,00	1,20,00	27,00	1,47,00
15.	भारतीय फिल्म और टेलिविजन संस्थान के लिए अनुदान	60,00	1,87,71	2,47,71	55,00	1,99,85	2,54,85	1,00,00	2,09,00	3,09,00
16.	फिल्म समितियों को अनुदान	3,00	—	3,00	3,00	—	3,00	3,00	—	3,00
17.	गवेषणा और संदर्भ प्रभाग	—	30,60	30,60	—	31,80	31,80	—	36,93	36,93
18.	भारतीय जन-संचार संस्थान को अनुदान	70,00	94,14	1,64,14	50,00	96,36	1,46,36	50,00	96,50	1,46,50
19.	विज्ञापन और दृश्य प्रचार निदेशालय	71,00	26,66,00	27,37,00	20,00	26,80,00	27,00,00	38,60	27,45,00	27,83,60
20.	पत्र सूचना कार्यालय	3,29,75	6,37,81	9,67,56	1,93,98	6,49,18	8,43,16	20,00	6,87,00	7,07,00
21.	भारतीय प्रेस परिषद	—	27,40	27,24	—	23,48	23,48	—	30,37	30,37
22.	समाचार एजेंसियों को सहायता अनुदान	—	25,00	25,00	—	25,00	25,00	—	1,00	1,00
23.	राष्ट्रीय पत्रकारिता प्रशिक्षण परिषद	25	—	25	—	—	—	—	—	—
24.	पी.टी.आई को दिए गए ऋण के बदले में सबसिडी	—	2,86	2,86	—	2,86	2,86	—	2,38	2,38
25.	प्रोफेशनल और विशेष सेवाओं का भुगतान	—	39,22	39,22	—	30,80	30,80	—	39,22	39,22
26.	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय	95,00	8,18,43	9,13,43	42,00	8,10,00	8,52,00	75,00	8,39,00	9,14,00
27.	गीत और नाटक प्रभाग	50,00	5,03,95	5,53,95	37,00	5,04,00	5,41,00	1,65,00	5,28,00	6,93,00
28.	प्रकाशन विभाग	10,00	4,54,44	4,64,44	—	6,75,05	6,75,05	64,00	5,62,72	6,26,72
29.	इमप्लायमेंट न्यूज	—	6,52,10	6,52,10	—	6,82,10	6,82,10	—	7,50,59	7,50,59
30.	एस टी सी को हुए नुकसान की भरपाई	—	3,18,00	3,18,00	—	1,89,77	1,89,77	—	1,00	1,00
31.	छोटे और मझोले समाचारपत्रों को अनुदान	—	1,00	1,00	—	7,00	7,00	—	—	—
32	भारत के समाचारपत्रों के पंजीयक	9,00	57,14	66,14	6,75	60,10	66,85	28,00	67,64	95,64
33.	फोटो प्रभाग	40,00	83,15	1,23,15	28,25	81,63	1,09,88	1,20,00	95,20	2,15,20
34.	संचार के विकास के अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिये योगदान	—	19,00	19,00	—	26,50	26,50	—	27,50	27,50
	योग - मुख्य शीर्ष 2220	13,53,00	83,04,00	96,57,00	9,76,00	85,58,00	95,34,00	13,03,00	85,03,00	98,06,00
	योग- राजस्व भाग	13,83,00	87,53,00	101,36,00	9,92,00	90,16,00	100,10,00	13,28,00	89,91,00	103,19,00

क्रम सं.	मांग संख्या 55 सूचना और प्रसारण मंत्रालय माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1991-92 योजना	गैर–योजना	योग	संशोधित अनुमान 1991-92 योजना	गैर–योजना	योग	बजट अनुमान 1992-93 योजना	गैर–योजना	योग
	पूंजी भाग									
	प्रमुख शीर्ष- 4220 सूचना और प्रचार के लिए पूंजी परिव्यय									
	मशीनें और उपकरण									
1	फिल्म प्रभाग, बम्बई के लिए उपकरणों की खरीद	90,00	—	90,00	66,00	—	66.00	3,42.00	—	3,42,00
2	राष्ट्रीय फिल्म और टेलीविजन संस्थान, पुणे के लिए उपकरणों की खरीद	45.00	—	45.00	64,50	—	64.50	47.00	—	47.00
3	पत्र सूचना कार्यालय के लिए उपकरणों की खरीद	—	—	—	—	—	—	1,80,00	—	1,80,00
4	क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय के लिए उपकरणों की खरीद	—	—	—	—	-	—	1,20.00	—	1,20.00
5	संगीत एवं नाटक प्रभाग के लिए उपकरणों की खरीद	—	—	—	—	—	—	20,00	—	20.00
	इमारतें									
6	फिल्म प्रभाग के लिए बहुमंजिली इमारत प्रमुख निर्माण कार्य	10.00	—	10,00	22,00		22.00	25,00	—	25,00
7	एन.एफ.ए.आई. कार्यालय भवन का निर्माण-प्रमुख निर्माण कार्य	10,00	-	10,00	14.00	—	14.00	13.00	—	13,00
8	फिल्म समारोह परिसर नया निर्माण तथा पुराने में परिवर्तन-प्रमुख निर्माण कार्य	60.00	—	60,00	53,50	—	53.50	40,00	—	40.00
9	कलकत्ता में फिल्म तथा टेलीविजन संस्थान की स्थापना - भूमि अधिग्रहण और भवन निर्माण	—	—	—	–	–	—	11,00,00	—	11,00.00
10	सूचना भवन परिसर प्रमुख निर्माण कार्य	50.00	—	50.00	57.00	—	57,00	3,45,00	—	3,45,00
11	क्षेत्र प्रचार के लिए कार्यालय तथा आवासीय भवनों का निर्माण - प्रमुख निर्माण कार्य	15,00	—	15.00	31.00	—	31,00	40,00	—	40.00
12	राष्ट्रीय प्रेस केन्द्र	—	—	—	—	—	—	—	—	—
13	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम	1,40.00	—	1,40.00	1,25.00	—	1,25,00	2,00.00	—	2,00,00
	योग - प्रमुख शीर्ष- 4220	4,20.00	—	4,20.00	4,33.00	—	4,33,00	24,72.00	—	24,72,00
	प्रमुख शीर्ष- 6220-सूचना प्रचार के लिए ऋण									
	सार्वजनिक क्षेत्र तथा अन्य प्रतिष्ठानों को ऋण									
	राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड	1,40.00	—	1,40.00	1,25.00	-	1,25.00	2,00.00	—	2,00.00
	योग प्रमुख शीर्ष- 6220	1,40.00	—	1,40.00	1,25.00	—	1,25,00	2,00,00	—	2,00.00
	योग-पूंजी भाग	5,60.00	—	5,60.00	5,58.00	-	5,58.00	26,72.00		26,72.00
	योग - मांग संख्या 55	19,43.00	87,53.00	106,96.00	15,50.00	90,18.00	105,68.00	40,00.00	—	40,00.00

मांग संख्या 56- प्रसारण सेवाएं

राजस्व (हजार रुपयों में)

क्रम सं.	मांग संख्या 56 प्रसारण सेवाएं विवरण	बजट अनुमान 1991-92 योजना	गैर योजना	योग	संशोधित अनुमान 1991-92 योजना	गैर योजना	योग	बजट अनुमान 1992-93 योजना	गैर योजना	योग
	राजस्व भाग- क									
	प्रमुख शीर्ष- 2221									
	आकाशवाणी									
1	निर्देशन तथा प्रशासन	3.76 22	8.29.00	12,05.22	1 43,00	7 72.00	9 15,00	4,13.00	7.79,00	11,92,00
2	संचालन तथा रखरखाव	13.20.79	29,08.00	42.28.79	7 39,00	27.70.00	35.09,00	14.19 00	29.79 00	43,98,00
3	विविध भारती (विज्ञापन सेवायें)	14.94.	10,93.00	11,07.94	1.00	10.69.00	10.70 00	20,00	11.09,00	11,29,00
4	कार्यक्रम सेवायें	38,28.86	89,85,00	1.28.13,86	15,49,00	91,07.00	1,06,56.00	45,92,00	94,20,00	1,40,12,00
5	समाचार प्रभाग	1 32.05	9.42,00	10.74 05	5.00	9,38,00	9.43.00	1.13.00	9.47,00	10,60.00
6	श्रोता अनुसंधान	31 98	67.00	98,96	11,00	65.00	76.00	49 00	69.00	1,18,00
7	विदेश प्रसारण सेवायें	42 93	2.18 00	2.60 93	2,00	2.29.00	2 31.00	41 00	2,32,00	2,73,00
8	योजना और विकास	1.60,41	4,01,00	5,61,41	1.46.00	4 09.00	5 55.00	1.90.00	4,28.00	6.18 00
9	अनुसंधान और प्रशिक्षण	1,29 82	2,07,00	3,36,82	83.00	1.98 00	2 81 00	1.63.00	2,14,00	3,77,00
10	[illegible]	—	50,02,00	50,02,00	..	37 54.00	37.54.00	.	51.76 00	51 76,00
11	आकाशवाणी और दूरदर्शन विज्ञापन राजस्व कोष को हस्तान्तरण	—	21,71.00	21 71 00	—	26,03 00	26 03.00	—	28.83,00	28,83.00
	योग- आकाशवाणी राजस्व	60.38,00	22,82.300	28.86 1 00	26 79 00	219 14 00	2.45.93 00	70.00.00	2.42,36,00	3 12,36,00
	दूरदर्शन									
1	निर्देशन तथा प्रशासन	15.00	5 82.00	5 97,00	54 00	5 60 00	6 14 00	1 10 00	5,84.00	6,94,00
2	संचालन तथा रख रखाव	15.89.00	43.54 00	59 43.00	10 87 00	43,60.00	54.47,00	18 75 00	46 44.00	65 19.00
3	विज्ञापन सेवायें	--	34.84.00	34.84.00	—	45 15.00	45.15.00	—	49 67.00	49.67.00
4	कार्यक्रम सेवायें	45.90,00	1 11,92.00	1 57 82 00	23 35.00	1.07,66.00	1 31 03.00	54 14 00	1.15 00,00	1,69.14.00
5	श्रोता अनुसंधान	6.00	50,00	56.00	1.00	56 00	57,00	1.00	53.00	54.00
6	[illegible]		80 67 00	80.67.00	—	57 54 00	57 54.00	—	74 87 00	74,87.00
7	आकाशवाणी और दूरदर्शन व्यावसायिक राजस्व कोष को हस्तान्तरण	—	1,86.03.00	1.86.03,00	—	2,47,90.00	2.47,90,00	—	2,73,56,00	2,73,56.00
	योग दूरदर्शन राजस्व	62,00,00	4 63.32,00	5,25,32,00	34,77 00	5,08,03.00	5,42.80,00	74,00,00	5.65.91,00	6,39,91,00
	योग प्रमुख शीर्ष 2221	1,22,38.00	6.91.55,00	8.13,93,00	61.56,00	7.27,17,00	7,88.73,00	1,44,00.00	8,08.27,00	9.52,27,00
	योग राजस्व भाग	1,22,38,00	6,91,55.00	8,13,93,00	61.56.00	7.27 17.00	7,88,73,00	1.44,00,00	8,08,27.00	9,52,27,00

पूंजी

(हजार रुपयों में)

क्रम सं.	विवरण / माध्यम इकाई का नाम	बजट अनुमान 1991-92 योजना	बजट अनुमान 1991-92 गैर–योजना	बजट अनुमान 1991-92 योग	संशोधित अनुमान 1991-92 योजना	संशोधित अनुमान 1991-92 गैर–योजना	संशोधित अनुमान 1991-92 योग	बजट अनुमान 1992-93 योजना	बजट अनुमान 1992-93 गैर–योजना	बजट अनुमान 1992-93 योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
	पूंजी भाग प्रमुख शीर्ष- 4221									
	आकाशवाणी									
1	मशीनें तथा उपकरण	1,26,40	—	1,26,40	1,24,00	--	1,24,00	63,00	—	63,00
2.	स्टूडियो	42,66,65	8,00	42,74,65	31,11,00	17,00	31,28,00	45,42,00	10,00	45,52,00
3	ट्रान्समीटर	76,01,75	—	76,01,75	51,04,00	-	51,04,00	79,55,00	--	79,55,00
4	सर्वेक्षण	—	4,89,00	4,89,00	—	4,89,00	4,89,00	—	4,99,00	4,99,00
5	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध									
	निर्माण योजनाएं)	34,67,20	—	34,67,20	24,26,00	78,00	25,04,00	29,40,00	3,00	29,43,00
	योग आकाशवाणी	1,54,62,00	4,97,00	1,59,59,00	1,07,65,00	5,84,00	1,13,49,00	1,55,00,00	5,12,00	1,60,12,00
	जोड़	1,54,52,00	4,97,00	1,59,49,00	1,07,55,00	5,84,00	1,13,39,00	1,54,90,00	5,12,00	1,60,02,00
	लाभांश	10,00	—	10,00	10,00	—	10,00	10,00	—	10,00
	दूरदर्शन									
1	मशीनें तथा उपकरण	1,04,00	—	1,04,00	29,00	-	29,00	28,92	—	28,92
2	स्टूडियो	84,80,56	1,66	84,82,22	47,67,00	37,07	48,24,07	74,82,75	1,00	74,83,75
3	ट्रान्समीटर	70,69,01	1,34	70,70,35	48,21,00	10,62	48,31,62	62,90,84	1,87	62,92,71
4	सर्वेक्षण	—	7,96,00	7,96,00	-	5,98,30	5,98,30		5,90,13	5,90,13
5	अन्य व्यय (स्थापना तथा विविध									
	निर्माण योजनाएं)	32,26,43	1,05,00	33,31,43	14,98,00	39,01	15,37,01	53,13,49	2,00	53,15,49
	योग दूरदर्शन	1,88,80,00	9,04,00	1,97,84,00	1,11,35,00	6,85,00	1,18,20,00	1,91,16,00	5,95,00	1,97,11,00
	जोड़	1,88,70,00	9,04,00	1,97,74,00	1,11,25,00	6,85,00	1,18,10,00	1,91,06,00	5,95,00	1,97,01,00
	लाभांश	10,00	--	10,00	10,00	--	10,00	10,00	--	10,00
	योग प्रमुख शीर्ष 4221	3,43,42,00	14,01,00	3,57,43,00	2,19,00,00	12,69,00	2,31,69,00	3,46,16,00	11,07,00	3,57,23,00
	योग पूंजी भाग	3,43,42,00	14,01,00	3,57,43,00	2,19,00,00	12,69,00	2,31,69,00	3,46,16,00	11,07,00	3,57,23,00

परिशिष्ट—तीन

आकाशवाणी

1991-92 के अंत में तथा 1992-93 के दौरान चालू होने की संभावना वाले आकाशवाणी केन्द्रों की सूची

एफ०एम० ट्रान्समीटर

1. चित्तौड़गढ़
2. सवाई माधोपुर
3. पटियाला
4. झालावाड
5. जालंधर
6. कसौली
7. बारीपाड़ा
8. पूर्णिया
9. हजारीबाग
10. छिंदवाड़ा
11. सतारा
12. यवतमाल
13. हासपेट
14. ओबरा
15. चाईबासा
16. कैलाशहर
17. हाफलौंग
18. नौगांव
19. बेलोनिया
20. शहडोल
21. रायगढ़
22. बालाघाट
23. चंद्रपुर
24. धुले
25. गुना
26. पुणे
27. कुर्नूल
28. मरकारा
29. राइचूर
30. चूरू
31. बरेली
32. फैजाबाद
33. जैसलमेर
34. जम्मू
35. भद्रवा
36. हमीरपुर
37. पुंछ
38. डाल्टनगंज
39. बहरामपुर
40. लुंगलेह
41. चुड़ाचांदपुर
42. मोकोकचुंग
43. बोलनगीर
44. राउरकेला
45. सागर
46. नासिक
47. उस्मानाबाद
48. सूरत
49. इदुकी
50. कारवाड़
51. कराईकल
52. अकोला
53. कोल्हापुर
54. झांसी

मीडियम वेव/शार्ट वेव ट्रांसमीटर

1. गुवाहाटी
2. भोपाल (10 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
3. बाड़मेर
4. गंगतोक (10 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
5. कलकत्ता (100 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
6. ईटानगर (100 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
7. ईटानगर (50 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
8. पणजी (100 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
9. मद्रास "सी"
10. हैदराबाद
11. बीकानेर
12. श्रीनगर
13. लखनऊ (10 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
14. लखनऊ (50 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
15. पौड़ी
16. जयपुर
17. भवानीपटना
18. कलकत्ता (2 × 10 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
19. इम्फाल
20. गंगतोक (2 × 10 के डब्ल्यू एम डब्ल्यू)
21. जैपोर
22. कोकराझार
23. पासीघाट
24. तेजू
25. चांग
26. जिरो
27. दीफू
28. कोहिमा
29. कलकत्ता (50 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
30. भोपाल (50 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
31. पणजी (2 × 50 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
32. अहवा
33. बंगलूर
34. तिरुअनन्तपुरम
35. त्रिचूर
36. ऊटकमंड
37. मद्रास (50 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
38. बम्बई (50 के डब्ल्यू एस डब्ल्यू)
39. कारगिल
40. उत्तरकाशी
41. शिमला

आकाशवाणी

आकाशवाणी के विविध भारती व प्राथमिक चैनलों के विज्ञापन सेवाओं से प्राप्त राजस्व

वर्ष	विविध भारती	सकल राजस्व प्राप्त–प्राथमिक चैनल		
		चरण 1	चरण 2	कुल
1975-76	6,25,87,679	—	—	6,25,87,679
1976-77	6,85,54,222	—	—	6,85,54,222
1977-78	7,82,06,252	—	—	7,82,06,252
1978-79	8,90,75,436	—	—	8,90,75,436
1979-80	10,31,43,702	—	—	10,31,43,702
1980-81	12,51,32,824	—	—	12,51,32,824
1981-82	15,23,44,716	—	—	15,23,44,716
1982-83	15,39,89,422	72,64,000	—	16,12,53,422
1983-84	16,00,34,250	42,30,500	—	16,42,64,750
1984-85	15,93,53,046	66,78,500	—	16,60,31,546
1985-86	17,54,89,035	54,06,275	2,13,84,761	20,22,80,071
1986-87	17,71,77,765	1,06,68,575	5,20,92,195	23,99,38,535
1987-88	19,26,24,082	88,13,025	8,51,64,751	28,66,01,858
1988-89	21,99,92,445	84,81,675	9,60,46,546	32,45,20,666
1989-90	23,72,26,116	68,02,372	10,59,36,265	35,06,66,753
1990-91	25,25,09,742	64,71,500	13,40,37,024	39,30,18,266

परिशिष्ट-पांच

केन्द्रीय फिल्म प्रमाणीकरण बोर्ड

वर्ष 1991 में प्रमाणित फीचर फिल्में

	भाषा	बम्बई	कलकत्ता	मद्रास	बंगलौर	त्रिवेन्द्रम	हैदराबाद	कटक	कुल
1.	हिन्दी	134	4	48	5	11	13	—	215
2.	तमिल	4	—	136	10	3	33	—	186
3.	तेलुगु	2	—	55	9	5	103	—	174
4.	मलयालम	—	—	55	3	36	—	—	94
5.	कन्नड़	—	—	2	89	—	—	—	91
6.	बंगला	6	44	—	—	—	—	1	51
7.	मराठी	29	—	—	—	—	—	—	29
8.	गुजराती	16	—	—	—	—	—	—	16
9.	उड़िया	3	5	—	—	—	—	3	11
10	असमिया	—	9	—	—	—	—	—	9
11	पंजाबी	9	—	—	—	—	—	—	9
12	भोजपुरी	5	3	—	—	—	—	—	8
13	नेपाली	8	—	—	—	—	—	—	8
14.	राजस्थानी	5	—	—	—	—	—	—	5
15	अंग्रेजी	—	—	—	—	—	1	—	1
16.	मणिपुरी	1	—	—	—	—	—	—	1
17.	हरियाणवी	1	—	—	—	—	—	—	1
18	नागामिया	1	—	—	—	—	—	—	1
	कुल	224	65	296	116	55	150	4	910

इनमें चार बंगाली फिल्में ब्लैक एण्ड व्हाइट है, शेष सभी 906 फिल्में रंगीन है।

परिशिष्ट-छह

पत्र सूचना कार्यालय

क्षेत्रीय/शाखा कार्यालय

क्षेत्रीय कार्यालय	शाखा कार्यालय
1. भोपाल	1. इन्दौर
	2. जयपुर
	3. जोधपुर
	4. कोटा
2. बम्बई	5. अहमदाबाद
	6. नागपुर
	7, पणजी
	8. पुणे
	9. राजकोट
3. कलकत्ता	10. अगरतला
	11. कटक
	12. गंगटोक
	13. पोर्टब्लेयर (सूचना केन्द्र)
4. चंडीगढ़	14. जम्मू
	15. जालंधर (शाखा व सूचना केन्द्र)
	16. शिमला
	17. श्रीनगर (शाखा व सूचना केन्द्र)
5. गुवाहाटी	18. आइजोल (सूचना केन्द्र)
	19. इम्फाल (शाखा व सूचना केन्द्र)
	20. कोहिमा (शाखा व सूचना केन्द्र)
	21. शिलांग
6. हैदराबाद	22. बंगलूर
	23. विजयवाड़ा
7. लखनऊ	24. कानपुर
	25. पटना
	26. वाराणसी
8. मद्रास	27. कोचीन
	28. मदुरै
	29. तिरुअनंतपुरम्

परिशिष्ट—सात

क्षेत्रीय प्रचार

प्रादेशिक और क्षेत्रीय कार्यालय

1. आंध्र प्रदेश

1. कुडप्पा
2. गुंटूर
3. हैदराबाद
4. काकीनाडा
5. कुरनूल
6. नलगोंडा
7. मेडक
8. नेल्लोर
9. निजामाबाद
10. श्रीकाकुलम
11. विशाखापत्तनम
12. वारंगल

2. अरुणाचल प्रदेश

1. अलांग
2. अनीनी
3. बोमडिला
4. दपोरिजो
5. खोंसा
6. नामपोंग
7. न्यू ईटानगर
8. पासीघाट
9. सेप्पा
10. तवंग
11. तेजू
12. जिरो

3. असम

1. **बारपेटा**
2. धुबरी
3. डिब्रूगढ़
4. डिफू
5. गुवाहाटी
6. हापलांग
7. जोरहाट
8. नलबारी
9. उत्तरी लखीमपुर
10. नौगांव
11. **सिलचर**
12. तेजपुर

4. बिहार (उत्तरी), पटना

1. भागलपुर
2. **बेगूसराय**
3. छपरा
4. दरभंगा
5. फारबिसगंज
6. किशनगंज
7. मुंगेर
8. मोतीहारी
9. मुजफ्फरपुर
10. पटना
11. सीतामढ़ी

5. बिहार (दक्षिणी), रांची

1. डाल्टनगंज
2. धनबाद
3. दुमका
4. गया
5. गुमला
6. हजारीबाग
7. जमशेदपुर
8. रांची

6. गुजरात

1. अहमदाबाद
2. अहवा
3. भावनगर
4. भुज
5. गोधरा
6. हिम्मतनगर
7. जूनागढ़
8. पालनपुर
9. राजकोट
10. सूरत
11. बड़ोदरा

7. जम्मू और कश्मीर

1. अनंतनाग
2. बारामूला
3. चदूरा
4. डोडा
5. जम्मू (तवी)
6. कंगन
7. कारगिल
8. कठुआ
9. कुपवाड़ा
10. लेह
11. पुंछ
12. राजौरी
13. शोपियां
14. श्रीनगर
15. उधमपुर

8 कर्नाटक

1. बंगलूर
2. बेलगांव
3. बेल्लारि
4. बीजापुर
5. चित्रदुर्ग
6. धारवाड़
7. गुलबर्गा
8. हासन
9. मंगलूर
10. मैसूर
11. शिमोगा

9. केरल

1. एलेप्पी
2. कन्नानूर
3. एर्नाकुलम
4. कैलपट्टा (विनाद)
5. कोट्टायम
6. कोझिकोड
7. मल्लपुरम
8. पालघाट
9. क्विलोन
10. त्रिचूर
11. त्रिवेन्द्रम

10. मध्य प्रदेश (पूर्व), रायपुर

1. अम्बिकापुर
2. बालाघाट
3. बिलासपुर
4. दुर्ग
5. जबलपुर
6. जगदलपुर
7. कांकेर
8. रायपुर
9. रीवां
10. शहडोल
11. सीधी

11. मध्य प्रदेश (पश्चिम), भोपाल

1. भोपाल
2. छतरपुर
3. छिंदवाड़ा
4. गुना
5. ग्वालियर
6. होशंगाबाद
7. इन्दौर
8. झाबुआ
9. मंदसौर
10. सागर
11. उज्जैन

12. महाराष्ट्र और गोवा

1. अहमदनगर
2. अमरावती
3. औरंगाबाद
4. बम्बई
5. चंद्रपुर
6. जलगांव
7. कोल्हापुर
8. नागपुर
9. नांदेड़
10. नासिक
11. पुणे
12. रत्नागिरी
13. सतारा
14. शोलापुर
15. वर्धा
16. पणजी

13. मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा क्षेत्र

1. अगरतला
2. आइजोल
3. जोवाई
4. कैलाशहर
5. लुंगलेई
6. सेहा
7. शिलांग
8. तुरा
9. उदयपुर

14. नागालैंड और मणिपुर

1. चंदेल
2. चूड़ाचांदपुर
3. इम्फाल
4. कोहिमा
5. मोकोकचुंग
6. मोन
7. तामंगलोंग
8. त्यूनसांग
9. उखरूल

15. उत्तर पश्चिम

1. अम्बाला
2. अमृतसर
3. चंडीगढ़
4. धर्मशाला
5. फिरोजपुर
6. हमीरपुर
7. हिसार
8. जालंधर
9. कारपा
10. लुधियाना
11. मंडी
12. नाहन
13. नारनौल
14. नई दिल्ली (I और II)
15. पठानकोट
16. रोहतक
17. शिमला

16. उड़ीसा

1. बालासोर
2. बारीपाड़ा
3. बरहामपुर
4. भवानीपटना
5. भुवनेश्वर
6. कटक
7. जेपोर
8. क्योंझर
9. फूलबनी
10. पुरी
11. सम्बलपुर

17. राजस्थान

1. अजमेर
2. अलवर
3. बाड़मेर
4. बीकानेर
5. डूंगरपुर
6. जयपुर
7. जैसलमेर
8. जोधपुर
9. कोटा
10. सवाई माधोपुर
11. सीकर
12. श्री गंगानगर

18. तमिलनाडु और पांडिचेरी

1. कोयम्बटूर
2. धर्मपुरी
3. मद्रास
4. मदुरै
5. पांडिचेरी
6. रामनाथपुरम्
7. सेलम
8. तंजावूर
9. तिरुचिरापल्ली
10. तिरुनेलवेलि
11. वेल्लोर

19. उत्तर प्रदेश (मध्य पूर्व), लखनऊ

1. इलाहाबाद
2. आजमगढ़
3. बांदा
4. गोंडा
5. गोरखपुर
6. झांसी
7. कानपुर
8. लखीमपुर खीरी
9. लखनऊ
10. मैनपुरी
11. रायबरेली
12. सुल्तानपुर
13. वाराणसी

20. उत्तर प्रदेश (उत्तर पश्चिम), देहरादून

1. आगरा
2. अलीगढ़
3. बरेली
4. देहरादून
5. गोपेश्वर
6. मेरठ
7. मुरादाबाद
8. मुजफ्फरनगर
9. नैनीताल
10. पौड़ी
11. पिथौरागढ़
12. रानीखेत

21. पश्चिम बंगाल (उत्तर), सिलीगुड़ी

1. कूच बिहार
2. गंगतोक
3. जलपाईगुड़ी
4. जोरेथांग
5. कलिंगपोंग
6. मालदा
7. रायगंज
8. सिलीगुड़ी

22. पश्चिम बंगाल (दक्षिण), कलकत्ता

1. बांकुरा
2. बैरकपुर
3. बरहामपुर
4. बर्दवान
5. कलकत्ता
6. कार निकोबार
7. चिनसुरा
8. मिदनापुर
9. पोर्ट ब्लेयर
10. रानीघाट
11. कलकत्ता (एफ डब्ल्यू)

शुद्धि पत्र

पृ०सं०	संदर्भ	को	पढ़ें
1	अध्याय- 1 दूसरी पंक्ति	34	531
	तीसरी पंक्ति	जनसंख्या के	जनसंख्या के
		78.70 प्रतिशत	81.17 प्रतिशत
6	अध्याय- 2 पैरा 2.1.2 वर्ष 1990-91	159.54	160.16
	की वार्षिक योजना	130.78	131.05
	के व्यय वाले स्तम्भ में	305.80	306.69
	पैरा 2.2 वर्ष 1991-92 की वार्षिक योजना		
	के परिव्यय स्तम्भ में	250,00	250.80
8	पैरा 2.7.1 चौथी पंक्ति	लुंगलोई	लुंगलेई
9	पैरा 2.8.2 तीसरी पंक्ति	एस.एफ.एस.	एस.एफ.सी.मेमो
	अंतिम पंक्ति	एस.एफ.सी.	एस.एफ.सी. मेमो
14	अध्याय- 4 पैरा 4.2.1 पहली पंक्ति	20	21
	दूसरी पंक्ति	124	125
15	पैरा 4.2.3 छठी पंक्ति	23	24
17	पैरा 4.4.1 पहली पंक्ति	13 मई 1988	18 मई 1988
23	अध्याय- 5 पैरा 5.1.1 दूसरी पंक्ति	534	531
	तीसरी पंक्ति	78.7	81.17
	छठी पंक्ति	66	62
	नौवीं पंक्ति	22	23
23	पैरा 5.1.2 दूसरी पंक्ति	48	46
23	पैरा 5.2.1 छठी पंक्ति	कुछ	अतिरिक्त
23	पैरा 5.2.2 दूसरी पंक्ति	के साथ-साथ	की सहायता से
25	पैरा 5.5 दसवीं पंक्ति	3.10 तक	चार बजे तक
26	पैरा 5.9.3 1991-92के कुल राजस्व के स्तम्भ में	290.00	300.00
30	अध्याय- 6 पैरा 6.4.6	फिल्म प्रभाग	
	पहली पंक्ति	को न पढ़ा जाए।	
50	पैरा 11.6पांचवी पंक्ति	236	256
58	परिशिष्ट - एक अ.स.(दू.का.) के बाद अ.स. (दू.वि.) जोड़ा जाए।		
59	परिशिष्ट दो बजट अनुमान 1992-93 के अंतर्गत	2,76,17	2,78,17
	गैर-योजना स्तम्भ में	4,26,00	4,28,00
	योग के समक्ष	2,76,17	2,78,17
		4,31,00	4,33,00
59	प्रमुख शीर्ष 2220-सूचना और प्रचार शीर्षक के अंतर्गत क्रम		
	संख्या 19 के समक्ष योजना स्तम्भ में	38.60	68.00
	योग स्तम्भ में	27,83,60	28,13,43
	योग मुख्य शीर्ष 2220- के समक्ष गैर-योजना स्तम्भ में	85,03,00	85,04,00
	योग स्तम्भ में	98,06,00	98,07,00
60	योग मांग संख्या 55 के समक्ष योग स्तम्भ में	106,96,00	1,06,96,00
	गैर-योजना स्तम्भ में	—	89,91,00
	योग स्तम्भ में	40,00,00	1,29,91,00
63	परिशिष्ट तीन "एफ.एम.ट्रांसमीटर" के अंतर्गत "चित्तौड़गढ़" न पढ़ा जाए।		
68	परिशिष्ट तीन		
	क्रम संख्या 40	लुगलेह	लुंगलेई